धारा...89 ग्रन्थांङ्क ...302

मंगलाचार - गीताञ्जली

(देव-शास्त्र (पठित-लिखित) गुरु के गुण-स्मरण-गुणकथन-गुणानुकरण)

(गद्य-पद्यमय)

-आचार्य कनकनन्दी

: पुण्य-स्मरण :

गुरु-शास्त्र (पठित-लिखित) - शिष्यों की प्रशंसा में बोलने पर कुछ लोग गर्व मानते हैं, उनके शंका-समाधान हेतु व ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय, मोहनीय अन्तराय दूर हेतु

स्वैच्छिक अर्थ सौजन्य (ज्ञानदानी)

1. धर्म-दर्शन सेवा संस्थान, उदयपुर (राज.)
2. धर्म-दर्शन-विज्ञान शोध संस्थान, बड़ौत (उ.प्र.)

ग्रन्थाङ्क-302 प्रतियाँ-500

संस्करण-प्रथम 2018 मूल्य-100/- रु.

प्राप्ति स्थान एवं सम्पर्क सूत्र

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव द्वारा आशीर्वाद प्राप्त

(1) धर्म-दर्शन सेवा संस्थान

द्वारा-श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा

चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर, आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास,

उदयपुर (राज.)-313001/मो. 097832-16418

(2) डॉ. नारायणलाल कछारा

सचिव-धर्म-दर्शन सेवा संस्थान

55, रवीन्द्रनगर, उदयपुर (राज.)-313001

फोन नं. 0294-2491422/मो. 092144-60622

E-mail:nlkachhara@yahoo.com

आत्मार्थ ही मेरा प्रयोजन; अन्य से न होऊँ संचालित

(मेरा लक्ष्य-साधना एवं प्राप्य)

- आचार्य कनकनन्दी

(चालः- आत्मशक्ति....)

इतिहास को पढ़ना ही मेरा नहीं है कोई लक्ष्य।
इतिहास से शिक्षा लेना यह ही मेरा उद्देश्य।।(1)
गुण-गुणी के गुणगान ही मेरा नहीं है परमलक्ष्य।
गुण-गुणी को स्वीकारना यह है मेरा परमलक्ष्य।। (2)

केवल पढना-रटना लिखना या प्रवचन करना।
नहीं है स्वाध्याय मेरा इस से स्व को भी पढना/(जानना,मानना) ।।(3)

स्व-पर दोषों से मैं शिक्षा लेता हूँ सदा।
इस से संक्लेश करना नहीं है उद्देश्य कदा।। (4)

स्व-पर गुणों से मैं न करता हूँ ईर्ष्या या घृणा।
इससे मैं करूँ प्रमोद प्रोत्साहन से बढाऊँ सदा।। (5)

निन्दा न करूँ निन्द्य न बनूँ प्रशंसनीय काम करूँ।
प्रशंसा हेतु ये न करूँ किन्तु प्रशस्त भाव से करूँ।। (6)

दूसरों को देखना-जानना तथाहि बोलना-सुनना।
दूसरे भी ये मेरे हेतु करें यह नहीं है कामना।। (7)

मैं स्वयं को देखूँ-जानूँ स्वयं का भी उद्धार करूँ।
यथायोग्य अन्य का भी करूँ इस हेतू अन्य को जानूँ।। (8)

अन्य हेतु दुश्चिन्ता दुराग्रह-दिखावा मैं न करूँ।
सनम्र-सत्यग्राहिता से स्व का मैं विकास करूँ।। (9)

अन्य हेतु दिखावा करना, यह है 'अहंकार भाव'।

स्व-आत्मस्वरूप को देखना, यह हे 'सोऽहं' 'अहं' भाव'।। (10)

छद्मस्थ न जानते सिद्ध को इससे सिद्ध न हुए छोटे/(खोटे)।
तथाहि मैं स्वलीन रहूँ, जिससे मैं बनूँ मोटे/(महान्) ।। (11)

अन्य के कारण मैं न करूँ समय-शक्ति अपव्यय।
स्वयं को ही मैं महान् बनाकर बनूँ मैं महान् आदर्श।।(12)

सूर्य जहाँ रहता वहाँ से ही प्रकाश फैलता दशों दिशा।
तथाहि मैं स्वप्रकाश से, प्रकाशित करूँ दशों दिशा।। (13)

स्वार्थी-कामुक-दंभी-भयालु-लोभी-व्यापारी-नेता।
खिलाड़ी-नट-नटी अन्य को लुभावने हेतु करते काम।।(14)

इससे परे मैं हूँ आत्मार्थी मुझे ही मेरा प्रयोजन।
इसलिए 'कनक सूरी' आत्मार्थे ही करे हर काम।। (15)

नौकर-गुलाम तो मालिक से होते हैं संचालित।
मैं ही हूँ मेरा मालिक अतः मेरे द्वारा ही मैं संचालित।। (16)

सागवाड़ा 30.5.2018 रात्रि 9:20

''कनकनन्दी गुरुवर की यशोगाथा''

'खुशी जैन'
सुपुत्री :- राजेश कुमार जैन

(चाल :- होले-होले हो जाएगा)

गुरु की वाणी की सुनके
गुरु के दर्शन को पा के
गुरु की महिमा को गा के.....हा।। ?
कनक गुरुवर को प्रणाम, जग में भी इनका नाम

बच्चों से लेकर विज्ञानी को गुरु का है आह्वान
समता के सागर है गुरुवर
समता के सागर
ज्ञानी, विज्ञानी है है गुरुवर
समता के सागर
जय हो...जय हो...
अखियों में कनक गुरुवर
मुस्कान है भोलेपन सी
गुण-दोषों को भी ये जानते है।
वीरों के अतिवीर हैं,
सन्मति, आत्मानुभवी हैं।
ख्याति-पूजा से दूर है यें।। ?।।
ऐसे ये गुरुवर, जिनको है वन्दन
खुशी भी करती है अभिनन्दन
कनक गुरुवर को प्रणाम...
शान्त गम्भीर वृत्ति, गुरुदेव की है ये प्रकृति
स्वआत्मा को ये जानते हैं;
स्वाध्याय करते है प्रतिदिन, शिष्य भी आते निशदिन
आत्मा का शोध करते ही रहते।। 2।।
ऐसे ये गुरुवर...
ग.पु. कॉ सागवाड़ा दिनांक-24.5.18 समय-3:30

स्व आत्मा विकास हेतु संबोधन

(चालः-मन रे! तू काहे न धीर-धरे.....,सायोनारा.....)

- बा. ब्र. उमंग जैन

जिया रे! तू काहे(संसार) भ्रमण करे...
कौन तेरा है कौन नहीं...यह विचार कर रे...जिया...(स्थायी)

कपड़े, गहनें तेरे नहीं हैं...वाहन भी तेरा नहीं है...
घर, भवन व दुकान के काम... मोक्ष का हेतु न बने
परिग्रह त्याग रे...जिया...(1)...

स्वाध्याय कर स्व को जान...जिसको न तू जाने...
आत्मा साधना से मोक्ष धार...आत्मा से परमात्मा बन...
स्व आत्म चिंतन कर...जिया...(2)...

बाह्य आडम्बर को छोड़ दे...अन्तर आत्मा को समझ...
शरीर को मैं माना है...स्वआत्म को मान अब...
बाह्य आडम्बर त्यज रे!...जिया...(3)...

दूसरों से घृणा करता रहा तू...अब स्व का उद्धार कर...
शरीर को तू सजा रहा अब तक...अब मन मैल को धो...
स्व का बोध कर रे!...जिया रे...(4)

दूसरों की निंदा करता रहा तू...अब स्व निंदा कर...
पर निंदा से होगा पतन...स्व आत्म ध्यान से मोक्ष...
पर निन्दा त्यज रे!...जिया रे...(5)

लौकिक शिक्षा करता रहा तू...उससे न महान् बने...
ढोंग, पाखण्ड, दिखावा, घमण्ड...यह सब त्यज रे...
सोऽहं से अहं बन रे।...जिया रे...(6)

कनक गुरु से शिक्षा लेकर...स्व आत्म कल्याण कर...
कनक गुरु की चरण छाया में...अब उमंग आया।...
मोक्ष प्राप्ति हेतु आया...जिया रे...(7)

सागवाड़ा, दि. 30.5.2018 समय मध्याह्न 1:30

मोक्ष हेतु आत्मबोध आवश्यक

बा .ब्र. उमंग जैन
(संघस्थ आचार्य कनकनन्दी)

(चाल:-धीरे-धीरे प्यार को बढ़ाना है...)

धीरे-धीरे स्वात्म को समझना है, मोक्ष महल जाना है। 2
मुझे स्वाध्याय सतत करना है...मोक्ष महल पाना है...(स्थायी)

कैसा अनुभव होगा मेरा यह प्रथम होगा
इतनी शान्ति मिलेगी स्व को समझ कर ऽऽऽ
तब मैं न दुःखी हूंगा ना कोई विकल्प होगा
मुझको है कनकवाणी पर श्रद्धा ऽऽऽ
एक जिनवाणी को ही ध्याना है मोक्ष महल जाना है...(1)
धीरे-धीरे...

गुरु बिन यह ना समझता यूँ ही आगे पाप करता...
लाखों योनियों में भटकता यूँ ही ऽऽऽ
जाने क्या-क्या दोष किये, 'मैं' को घमण्ड मानकर
मोक्ष के लिए 'मैं' को समझना जरुरी ऽऽऽ
कनक गुरु की वाणी को समझना है मोक्ष महल जाना है...(2)
धीरे-धीरे...

कनक गुरु की वाणी सुनकर स्व का बोध हुआ
ऐसे गुरु मिल गये जो स्व को जानतेऽऽऽ
स्व को ही समझाते इसको आचरण में लाते
ऐसे गुरुकहीं भी न मिलेंगे अब ऽऽऽ
धीरे-धीरे इनसे शिक्षा लेना है, मोक्ष महल जाना है...(3)
धीरे-धीरे...
सागवाड़ा दिनांक 11.6.2018 समय मध्याह्न 02:30

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ.स.
(1)	आत्मार्थ ही मेरा प्रयोजन; अन्य से न होऊँ संचालित	2
(2)	कनकनन्दी गुरुवर की यशोगाथा	3
(3)	स्व आत्म विकास हेतु संबोधन	4
(4)	मोक्ष हेतु आत्मबोध आवश्यक	6

मंगलाचार गीताञ्जली

(1)	धन्य हूँ मैं... !?	8
(2)	महान् लक्ष्य... !?	9
(3)	प्रशंसा महान् गुण/(पुण्य),निन्दा महान् दुर्गुण (पाप)	10
(4)	उपेक्षित जिनवाणी का अमृत सन्देश	32
(5)	अज्ञानी मोही बिना प्रयोजन करते अधिक पाप	33
(6)	भावविशुद्धि बिन बाह्य धार्मिक क्रिया से भी न होते धार्मिक	47
(7)	तीर्थंकर का सन्देश महान् : भव्य ही भावी भगवान्	54
(8)	विशुद्ध भाव के कारण व परिणाम	55
(9)	जीव द्रव्य की आत्मकथा व आत्मव्यथा	57
(10)	ऋद्धिधारी श्रमण से प्राप्त शिक्षायें :- ख्याति पूजा लाभादि हेतु आशा-आदेश नहीं दूँ	74
(11)	भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक...पर्यावरण सुरक्षा वाली	78
(12)	मरण/(जन्म) व अमृत की आत्मकथा	108
(13)	मेरा अनुभव :-अच्छी-सच्ची भावना अवश्य फल देती	127
(14)	कविता रचना से स्व-पर बहुविध लाभ	131
(15)	हिन्दी भाषियों के शब्द/ भाषा ज्ञान वृद्धि हेतु	144
(16)	अज्ञानी-मोही-लाभ से वंचित...के कारण	145
(17)	निस्पृह स्व-पर उद्धारक श्रमण	154

(आत्म-सम्बोधन/आत्म-गौरव)

धन्य हूँ मैं...! ?

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- तुम अगर साथ देने का...)

धन्य हूँ मैं आत्मश्रद्धान कर/(धर)...धन्य हूँ में आत्मज्ञान कर (धर)!
धन्य हूँ मैं सही आचरण धर...धन्य हूँ मैं आत्मानुभवकर!
धन्य हूँ मैं राग द्वेष मोह हर...धन्य हूँ मैं समता-शान्ति धर!
धन्य हूँ मैं ईर्ष्या घृणा दूर कर...धन्य हूँ मैं शुचि-सहिष्णुता धर!
धन्य हूँ मैं दीन-हीन-दंभहर...धन्य हूँ मैं सोऽहं अहंभाव धर!
धन्य हूँ मैं संक्लेश-द्वन्द दूर कर...धन्य हूँ मैं संतोष-तृप्ति धर!
धन्य हूँ मैं ख्याति पूजा लाभ दूर कर...निस्पृहता-सुख धर!
धन्य हूँ मैं ध्यान-अध्ययन कर...धन्य हूँ मैं शोध-बोध-प्रज्ञा धर!
धन्य हूँ मैं संकीर्ण-कट्टर दूर कर...धन्य हूँ मैं उदार-सरलता धर!
धन्य हूँ मैं भेदभाव दूर कर...धन्य हूँ मैं भेद विज्ञान धर!
धन्य हूँ मैं इच्छा-तृष्णा दूर कर...धन्य हूँ मैं महान् लक्ष्य धर!
धन्य हूँ मैं मोह-क्षोभ से दूर...धन्य हूँ मैं विशुद्ध-बोध कर!
धन्य हूँ मैं ब्रह्मचर्य धर...धन्य हूँ मैं विद्यार्थी गुण धर!
धन्य हूँ मैं शंका-कांक्षा से दूर...धन्य हूँ मैं आत्मोपलब्धि भाव धर!
धन्य हूँ मैं संवेदनताशील धर... धन्य हूँ मैं संकीर्ण स्वार्थ भाव दूर!
धन्य हूँ मैं पर प्रपंच-चिन्ता दूर...धन्य हूँ मैं आत्मचिन्तन भाव धर!
धन्य हूँ मैं धैर्य-दृढ़ता धर...धन्य हूँ मैं सनम्र सत्यग्राही धर!
धन्य हूँ मैं सच्चिदानन्द धर...धन्य हूँ 'कनक' आत्मिक भाव धर!

सागवाड़ा- दि. 4/6/2018 प्रातःकाल

आत्मसम्बोधन

महान् लक्ष्य...!?

– आचार्य कनकन्दी

(चालः- दुनिया में रहना.....)

लक्ष्य धरो भाई लक्ष्य करो, लक्ष्यानुसार ही भाव करो।
तदनुकूल पुरुषार्थ करो, सफलता मिलेगी निश्चय करो।।(1)।।

इससे होगा एकाग्र चित्त, संकल्प-विकल्प होंगे शान्त।
संक्लेश-द्वन्द्व होंगे दूर, पापकर्म होंगे दूर।। (2)।।

एकाग्र होंगे तेरे तन व मन, इन्द्रिय-मस्तिष्क आतमा।
जिससे होगी शक्ति केन्द्रित, पुरुषार्थ होगा तेरा श्रेष्ठ।। (3)।।

पुण्यकर्म बन्ध तेरे होंगे प्रचुर, आत्मिक शक्ति होगी भरपूर।
साहस धैर्य तेरे होंगे दृढ़, उत्साह-पुरुषार्थ होंगे भरपूर।। (4)।।

शंका-निराशा तेरी होंगी दूर, बिध्न-बाधा होंगे तेरे दूर।
विकास की गति होगी तीव्र, लक्ष्य प्राप्त होगा तुझे शीघ्र।। (5)।।

लक्ष्य प्राप्ति जब तेरी होगी एक, उससे मिलेंगे अनुभव अनेक।
जिससे तेरी क्षमता में होगी वृद्धि, अनेक सफलतायें तुझे मिलेगी।। (6)

सफल होने पर न बनो दंभी, दंभ से बनोंगे तुम पाखण्डी।
अन्य से करोगे ईर्ष्या द्वेष घृणा, जिससे क्षमता होगी-क्षीण।। (7)।।

सफलता ही अभिशाप बन जायेगी, रावण-कंस-हिटलर सम दशा होगी
इह परलोक होंगे दुःखमय, फल पापानुबन्धी पुण्यसम।। (8)

महान् लक्ष्य पावन-भाव-व्यवहार करो...इह परलोक में सुख भोगो।
परम्परा से मोक्ष प्राप्त करो, आत्मोपलब्धि 'कनक' लक्ष्य धरो।।(9)।।
सागवाड़ा - दि. 3.6.2018 मध्याह्न-9.01

ज्ञानदाता गुरु व ग्रन्थ (पठित, लिखित) का गुणगान महान् गुण नाम छिपाना ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय बन्ध के कारण

प्रशंसा महान् गुण/(पुण्य) निन्दा महान् दुर्गुण(पाप)

(गुण-गुणी प्रशंसा ही पूजा-प्रार्थना/निन्दा से बन्धते ज्ञानदर्शनावरणीय व मोहनीय कर्म)

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल:- क्या मिलिए.....)

प्रशंसा महान् गुण है...निन्दा महान् दुर्गुण,
प्रशंसा से गुण बढ़े... निन्दा से बढ़े दुर्गुण।
प्रशंसक प्रशंसा पाते...निन्दक होते निन्दनीय,
प्रशंसा से पुण्य बन्धे...निंदा से बन्धे पाप।।(1)

देव-शास्त्र-गुण-गुणी की प्रशंसा,
इससे होती श्रद्धा-प्रज्ञा-पूजा-प्रार्थना।
इनकी जो निन्दा करे वे होते मिथ्यात्वी,
वे होते ईर्ष्यालु-दंभी-द्वेषी व पापी।।(2)

वे बान्धते ज्ञान-दर्शनावरणीय कर्म,
वे करते प्रदोष-निह्नव-मात्सर्य-आसादना।
गुण कीर्तन बिन उन्हें लगे प्रदोष दोष;
ईर्ष्या के कारण वे न करते गुणकथन।। (3)

ज्ञानदाता गुरु व ग्रन्थों/(पठित, लिखित) का जो नाम छिपाते,
स्व-ज्ञान को जो योग्य पात्र को नहीं देते।
निह्नव-मात्सर्य के कारण दोनों कर्म बान्धते,
मान-माया-लोभादि से वे दूषित होते।। (4)

वचन-काय से जो गुणकीर्तन नहीं करते,

आसादना दोष से वे दोनों कर्म बान्धते।
प्रशस्त ज्ञान में भी जो दोषारोपण करते,
उपघात दोष से वे ज्ञान का नाश/(हत्या) करते।।(5)

इससे विपरीत जो गुण कथन करते,
वे ही यथार्थ से सुदृष्टि धार्मिक होते।
वे ही यथार्थ से पूजा-प्रार्थना आरती करते,
ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय कर्म नहीं बान्धते।। (6)

प्राचीन आचार्यों ने अतएव उल्लेख किया,
स्व-गुरु व स्व-रचित ग्रन्थों का नाम वर्णन किया।
जिनके निमित्त से ग्रन्थों का लेखन किया,
उनका भी नाम उल्लेख ग्रन्थों में किया।। (7)

केवली-श्रुतसंघ व देवों के अवर्णवाद(निन्दा) से,
मोहनीय कर्म बान्धकर भ्रमते संसार में।
धार्मिक कार्यों में जो विघ्न-बाधा करते,
अन्तराय कर्म बान्धकर लाभ से वंचित होते।। (8)

अत:प्रशंसा सदा करणीय गुण-गुणी की,
निन्दा न करणीय कभी भी किसी की।
''सदवृत्तानां गुणगणकथा दोषवादेच मौनम्,''
ये हैं सद्धर्मीयों के महान् गुण-कर्म।।(9)

स्वाध्याय के आदि-मध्य तथा अन्त में,
मंगलाचरण रूप में होता है गुणस्मरण।
तथाहि ग्रन्थ रचना व प्रवचन-प्रतिक्रमण में,
जयकार मंगलाचरण में अनेक बार स्मरण।।(10)

इससे होता है उपकारस्मरणमय वन्दना,

विघ्न दूर होते निर्विघ्न कार्य सम्पादन।
देव-शास्त्र-गुरु भक्ति-पूजा व प्रार्थना,
अष्ट द्रव्य बिना मन-वचन-काय से प्रार्थना/(पूजा)।।(11)

श्रावक करे अष्ट द्रव्य सहित पूजा प्रार्थना,
साधु करते उक्त प्रकार से पूजा-प्रार्थना।
अन्यथा न होते साधु तथाहि श्रावक,
मोक्षमार्ग हेतु ये कारण है प्राथमिक।। (12)

श्रुत पंचमी पर्व स्वयं आचार्य ने प्रारम्भ किया,
षट्खण्डागम की रचना के सम्पूर्ण होने से।
मंगलाचरण-पंचकल्याण से जयकार तक,
सभी गुण-गुणी के स्मरण से गुणकथन तक।। (13)

''गुण प्रशंसा व दोष वादे च मौनं'' महान् धर्म,
रूढ़िवादी धार्मिक न मानते/(करते) ऐसा सुधर्म।
ऐसा सुधर्म पालते वे महान् सुधर्मी,
ऐसे सुधर्म हेतु प्रयत्नशील 'कनकनन्दी'।। (14)

सागवाड़ा 11.06.2018 रात्रि 09:25
(यह कविता प्रेरणा, निर्मला, आनल नलीनी जैन, सागवाड़ा के कारण बनी।)
सन्दर्भ :-

(मंगल स्मरण)

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तार कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वाना वन्दे तद्गुणलब्धये।।

I bow to him who is thr guide on the path to liveration, the destroyers of Mountains of kamas and knower of the priciples of the universe, so that I may attain qualities belonging to him.

जो मोक्ष मार्ग के नेता हैं, कर्मरूपी पर्वतों के भेदने वाले हैं, और विश्वतत्त्व के ज्ञाता हैं, उनकी मैं उनके समान गुणों की प्राप्ति के लिए सदा वंदना करता हूँ।

मोक्षशास्त्र (तत्त्वार्थसूत्र, स्वतंत्रता के सूत्र) के आदि मंगलाचरण के रूप में मोक्षमार्ग के नेता (स्वतंत्रता के हितोपदेशक) स्वतंत्रता के भोक्ता(स्वामी) एवं विश्व के समस्त तत्त्व के ज्ञाता (सर्वज्ञ) को उनकी गुणों की उपलब्धि के लिए नमस्कार (नमन) किया गया है,

महान् आदर्श पुरुषों को नमस्कार करना गुणग्राही महान् आदर्श परंपरा है। इसे ही मंगलाचरण कहते हैं। मंगलाचरण का अर्थ - ''मलं पापं गालयति विध्वंसयतीति मंगल'' , अथवा ''मंग पुण्यं सुख तल्लति आदत्ते गृह्णाति वा मंगल।''

'म'' अर्थात् मल या पाप को जो गालयति अर्थात् गलावे सो मंगल है अथवा 'मंग'' जो पुण्य तथा सुख उसे जो लति-अर्थात् देवे सो मंगल है। मंगलाचरण स्वरूप से महान् आत्मा का गुणगान करना, नमन करना, कोई अंध परंपरा नहीं, एक सभ्य परंपरा है। क्योंकि-

नास्तिक्य परिहारस्तु शिष्टाचार प्रपालनम्।
पुण्यावाप्तिश्च निर्विघ्नं शास्त्रादौ तेन संस्तुति।।

नास्तिकपने के त्याग के लिए अर्थात् ग्रंथकर्त्ता आस्तिक्य है यह बताने के लिए, शिष्टाचार जो परंपरा से चला आया विनय का नियम उसको पालने के लिए, पुण्य की प्राप्ति के लिए तथा विघ्न को दूर करने के लिए इन चार बातों को चाहते हुए ग्रंथ के आदि में इष्ट देव की स्तुति की जाती है।

यहां प्रश्न होना स्वाभाविक है कि इष्ट देव कौन हैं ? इष्ट देव वे हैं जो सम्पूर्ण दोषों से रहित हो, स्वतंत्रता को प्राप्त कर लिया हो तथा स्वतंत्रता के मार्ग का उपदेशक हो। रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा हैं-

आप्तेनोच्छिन्न दोषेण सर्वज्ञेनागमेशिन।
भवितव्यं नियोगेन नान्यथा ह्याप्तता भवेत्।। (5)

नियम से आप्त को दोष रहित, सर्वज्ञ और आगम का स्वामी होना चाहिए। क्योंकि अन्य प्रकार से आप्तपना नहीं हो सकता।

स्व दोषों से रहित होने पर एवं आध्यात्मिक गुणों से सहित जीव आप्त है, भले उसका नाम कुछ भी हो गुणग्राही आदर्श व्यक्ति गुण चाहता है और उस गुण की

पूजा करता है, न कि व्यक्ति की और न हि मूर्ति की। अकलंक देव ने कहा है-

यो विश्वं वेद वेद्यं जनन जलनिधेर्भङ्गिनःपारदृश्वा,

पौर्वापर्याविरूद्धं वचनमनुपमं निष्कलकं यदीयम्।

तं वंदे साधुवंद्यं सकल गुण निधिं ध्वस्तदोषद्विषन्तं,

बुद्धं वा वर्द्धमानं शतदल निलयं केशवं वा शिवं वा।। (9) (अ.स्त्रोत)

जो विश्व के सम्पूर्ण ज्ञान को जान लिया अर्थात् विश्व विद्या विशारद है। जो जन्म-जरा-मरण रूपी समुद्र को नष्ट कर लिया, पार कर लिया। जिनके वचन पूर्वापर विरोध से रहित, सम्पूर्ण दोषों से रहित, उपमा रहित है, सम्पूर्ण गुणों की खान स्वरूप समस्त दोषों को ध्वस्त कर लिया और साधुओं से वन्दनीय ऐसी आत्मा को वन्दना है, भले ऐसे गुण सहित बुद्ध हो, महावीर हो, वर्द्धमान हो, ब्रह्मा हो, विष्णु हो, या शिव हो। हरिभद्र सूरि ने लोकतत्त्व निर्णय में कहा है-

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेष कपिलादिषु।

युक्तिमद्ववचनं यस्य, तस्य कार्यः परिग्रहः।।

मेरा वीर जिनेन्द्र में पक्षपात नहीं है, एवं कपिलादि में द्वेष नहीं है, किन्तु जिसका वचन युक्ति युक्त, तर्क संगत, परस्पर अविरोध इहलोक और परलोक का हितकारी है, उन्हीं का वचन ग्रहण करने योग्य है, अन्य का नहीं।

प्रश्न होता है कि ऐसे महान् पुरुषों की वन्दना क्यों करनी चाहिए? इसका उत्तर यह है कि उनके गुणों की उपलब्धि के लिए, उनके गुण स्मरण के लिए, कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए। कहा भी है-

अभिमतफलसिद्धेरभ्युपायः सुबोधः,

स च भवति सुशास्त्रात् तस्य चोत्पत्तिराप्तात्।

इति भवति स पूज्यस्तप्रसादात्बुद्धेः,

न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति।।

इष्टफल की सिद्धि का उपाय सम्यग्ज्ञान है। सो सम्यग्ज्ञान यथार्थ आगम से होता है। उस आगम की उत्पत्ति आप्त(देव) से है इसलिए वह आप्त (देव) पूज्यनीय है जिसके प्रसाद से तीव्र बुद्धि होती है। निश्चय से साधु लोक अपने ऊपर किये गये उपकार को नहीं भूलते हैं।

श्रेयोमार्गस्य संसिद्धिःप्रसादात्परमेष्ठिनः।

इत्याहुस्तद्गुणस्तोत्रं शास्त्रादौ मुनि पुंङ्गवाः

मोक्षमार्ग की सिद्धि परमेष्ठी भगवान् के प्रसाद से होती है, इसलिये मुनियों में मुख्य, शास्त्र के आदि में उनके गुणों की स्तुति करते हैं।

स्तुति करने का मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक कारण पूज्यपाद स्वामी ने कहा है-

अज्ञानोपारिस्तरज्ञान ज्ञानं ज्ञानिसमाश्रयः।

ददाति यस्तु यस्यास्ति सुप्रसिद्धमिदं वचः (23) इष्टोपदेश

अपने आत्मा से भिन्न अरहंत, सिद्ध, परमात्मा की उपासना, आराधना करके आत्मा उनके समान परमात्मा बन जाती है। जैसे-दीपक से भिन्न बत्ती दीपक की उपासना करके यानी साथ-साथ रहकर दीपक के समान प्रकाशमान बन जाती है

येन भावेन तद्रुपं ध्यायेतमात्मानमात्मवित्।

तेन तन्मयता याति सोपधिःस्फटिको यथा।।

जिस भाव से जिस प्रकार यह आत्मा का ध्यान करता है उस स्वरूप हो जाता है। जैसे-स्फटिक मणि विभिन्न रंगों के सम्पर्क से उस वर्ण रूप परिणमन करता है।

परिणमत्ते येनात्मा भावेन स तेन तन्मयो भवति।

अर्हत्ध्यानविष्टो भवार्हन् स्यात् स्वयं तस्मात्।।

यह आत्मा जिस भाव से परिणमन करता है वह उस स्वरूप हो जाता है। अर्हत् के ध्यान सहित ध्याता स्वयं अर्हत् रूप हो जाता है।

कुन्दकुन्द देव ने प्रवचनसार में भी प्रकारान्तर से इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। यथा-

जो जाणदि अरहंत दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं।

सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्स लयं।। (80)

जो कोई अरहंत भगवान् के द्रव्यपने, गुणपने तथा पर्यायपने को जानता है वह पुरुष अर्हंत के ज्ञान के पीछे अपने आत्मा को जानता है। उस आत्मज्ञान के प्रताप से

उस पुरुष का दर्शनमोह का निश्चय से क्षय हो जाता है।

सव्वे वि य अरहंता तेण विधाणेण खविदकम्मंसा।
किच्चा तधोवदेसं णिव्वादा ते णमो तेसिं।। (82)

सब ही अरहंत उसी विधि से कर्मांशों का क्षय करके और उसी प्रकार उपदेश को करके वे निर्वाण को प्राप्त हुए उनके लिए नमस्कार हो।

इस मोक्षशास्त्र के मंगलाचरण में ही मोक्षमार्ग के उपाय मोक्षमार्ग के उपदेशक और मोक्षमार्ग के गुण, मुमुक्षु के कर्त्तव्य, मोक्ष का स्वरूप आदि का संक्षिप्त सारगर्भित वर्णन किया गया है। सम्पूर्ण द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म को नष्ट करके वीतरागी, सर्वज्ञ, कृत्कृत्य बनना ही मोक्ष है, और उसके उपाय ही मोक्षमार्ग है। जो मोक्षमार्ग के लिए एवं मोक्ष के लिए विरोध-कारण स्वरूप घाती कर्म है उनको नष्ट करने वाला एवं जीवों के हित का उपदेश देने वाला ही मोक्षमार्ग का नेता है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय,मोहनीय एवं अंतराय को नाश करके जब जीव अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अनंतवीर्य और अनंतसुख को प्राप्त करके जो वीतरागी और हितोपदेशी बनता है वह ही यथार्थ से मोक्षमार्ग का नेता है। तीर्थंकर प्रकृति सहित ऐसे जीव को तीर्थंकर केवली कहते हैं। उनके समवशरण की रचना होती है वे समवशरण में विराजमान होकर देव दानव, मानव पशु-पक्षियों के लिए भी मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं। इसे ही दिव्यध्वनि कहते है। यह 18 महाभाषा तथा 700 क्षुद्रभाषा सहित होती है। तीर्थंकर भगवान् सम्पूर्ण अंग-उपांग से 718 भाषाओं में या विश्व की सम्पूर्ण भाषा यहाँ तक कि पशु पक्षियों की भाषा में भी उपदेश देते है। सामान्य केवली के समवशरण की रचना नहीं होती है परन्तु गंधकुटी की रचना होती है और गंधकुटी में रहकर पूर्वोक्त विधि से धर्मोपदेश देते है। दिव्य ध्वनि के बारे में कहा भी है-

यत्सर्वात्महितं न वर्णसहितं न स्पन्दितोष्टद्वयं,
नो वांछा कलितं न दोषमलिन नोच्छवासरूद्धकमं।
शान्तामर्षविषे! समं पशुगणैराकर्णितं कुर्णिभिः,
तत्रःसर्वविदो विनष्ट विपदः पायादपूर्व वचः।।

सर्व आपत्तियों से रहित श्री सर्वज्ञ भगवान् का वह अपूर्व वचन हमारी रक्षा करे जो सर्व आत्माओं का हितकारी है, अक्षर रूप नहीं है, दोनों ओठों के हलन

चलन बिना प्रगट होता है, इच्छा रहित होता है, दोषों से मलिन नहीं है, न उसमें श्वासोच्छवास के रुकने का क्रम है, जिसको क्रोध रूपी विष को शांत किए हुए पशुगण भी अपने कानों से सुन सकते हैं।

इस मंगलाचरण सूत्र से यह भी ध्वनित होता है कि मुमुक्षु(मोक्ष चाहने वालों) को गुणग्राही होकर गुणियों का आदर-सत्कार, विनय करना चाहिए। क्योंकि इससे स्वयं के अन्दर विद्यमान स्वगुण धीरे-धीरे प्रगट होते हैं और एक समय वह आता है कि वह भी उसे प्राप्त कर लेता है। तुलसीदास ने कहा भी है-

''लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभुदूर।''

मनोविज्ञान सिद्धांत यह है कि जो व्यक्ति जिस वस्तु को चाहता है उसका उस वस्तु के प्रति आकर्षण होता है। इसी प्रकार जो मोक्ष चाहता है उसका आकर्षण मोक्षमार्ग व मोक्ष जीव के प्रति होता है। इससे उसे प्रेरणा आदर्श मिलता है जिससे वह धीरे-धीरे मोक्षमार्ग पर चलता हुआ मोक्ष प्राप्त करता है।

यह आत्मा जिस भाव से परिणमन करता है वह उस स्वरूप हो जाता है।

अर्हत् के ध्यान सहित ध्याता स्वयं अर्हत् रूप हो जाता है।

जिनार्चना से बहुआयामी लाभ होता है। इससे महान् आत्मा के प्रति विनय भाव प्रकट होता है। मानसिक शान्ति मिलती है जिससे मानसिक तनाव दूर होने के कारण शारीरिक एवं मानसिक आरोग्य प्राप्त होता है। पूज्य पुरुषप्रति प्रशस्त राग होने के कारण पाप कर्म के संवर के साथ-साथ असंख्यात गुणी कर्म निर्जरा एवं सातिशय पुण्य बन्ध होता है। जिससे अभ्युदय के साथ-साथ अनत में मोक्ष सुख की उपलब्धि होती है। पूज्य पुरुष का नामोच्चारण, गुणगान, नामस्मरण स्वयं मंगल स्वरूप है। वीरसेन स्वामी ने धवला में तथा यतिवृषभाचार्य ने तिलोयपण्णत्ति में मंगल का विस्तृत करते हुए निम्न प्रकार कहा है :-

पुण्ण पूदपवित्ता पसत्थ सिवभद्धसेग कल्लाणा।
सुहसोक्खादी सव्वेणिद्दिट्ठा मंगलस्स पज्जाया।।8।

पुण्य, पूत, पवित्र,प्रशस्त, शिव, भद्र,क्षेम, कल्याण, शुभ और सौख्य इत्यादि सब मंगल के ही पर्याय अर्थात् समानार्थक शब्द कहे गये है।

गालयदि विणासयदेघादेदि देहदि हंति सोधयदे।

विध्वंसेदि मलाईं जम्हा तम्हा य मंगलं भणिदं।।9।।

क्योंकि यह पाप या मलों को गलाता है, विनष्ट करता है, घातता है, दहन करता है, हनता है, शुद्ध करता है और विध्वंस करता है इसीलिए इसे मंगल कहा गया है।

अहवा बहुभेयगयं णाणावरणादिदव्वभावमलभेदा।

ताईं गालेइ पुढं जदो तदो मंगलं भणिदं।।4।।

अथवा ज्ञानावरणादिक द्रव्यमल के और ज्ञानावरणादिक भावमल के भेद से मल के अनेक के भेद है, उन्हें चूँकि यह पृथक् करता है, गलाता है अर्थात नष्ट करता है इसीलिए यह ''मंगल'' कहा गया है।

अहवा मंग सोक्खं लानादि हु गेण्हेदि मंगलं तम्हा।

एदेण कज्जसिद्धि मंगइ गच्छदि गंथकत्तारो।।5।।

अथवा, चूँकि यह ''मंग'' को अर्थात् सुख को लाता है, इसलिए भी इसे ''मंगल'' समझना चाहिए। इसी के द्वारा ग्रंथकर्त्ता अपने कार्य की सिद्धि पर पहुँच जाता है।

पावं मलं ति भण्णइ उपयार सरूवरएण जीवाणं।

तं गालेदि विणासं णेदि ति भणंति मंगल केई।।7।।

जीवों के पाप को उपचार से मल कहा जाता है। उसे मंगल गलाता है, विनाश को प्राप्त करता है, इस कारण भी कोई आचार्य इसे मंगल कहते हैं।

अरहंताणं सिद्धाणं आइरिय उवज्झयाइं साहूणं।

णामाईं णाममंगल मुदिट्ठं वीयराएहिं।9।

वीतराग भगवान् ने अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय और साधु इनके नामों को नाममंगल कहा है।

ठावणमंगलमेदं अकट्टिमाकिट्टिमाणि जिणबिंबा।

सूरि उवज्झसाहूदेहाणि हु दव्वमंगलयं।। 20।।

जिन भगवान् के जो अकृत्रिम और कृत्रिम प्रतिबिम्ब है, वे सब स्थापना मंगल हैं। तथा आचार्य, उपाध्याय और साधु के शरीर द्रव्य मंगल है।

णासदि विग्घं भेददि अग्घं दुट्ठा सुरा ण लंघंति।

इट्ठो अत्थो लब्भई जिणणामगहणमेत्तेण।।30।

जिन भगवान् के नाम के ग्रहण करने मात्र से विध्न नष्ट हो जाते हैं, पाप खण्डित होता है, दुष्ट देव लांघते नहीं अर्थात् किसी प्रकार का उपद्रव नहीं करते और इष्ट अर्थ की प्राप्ति होती है।

सत्थादि मज्झअवसाणएसु जिणतोत्तमंगलुच्चारो।

णासइ णिस्सेसाईं विग्घाइं रविव्व तिमिराई।।3।।

शास्त्र के आदि, मध्य और अन्त में किया गया है जिनस्तोत्ररूप मंगल का उच्चारण सम्पूर्ण विघ्नों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार सूर्य अंधकार को।

पूज्यपाद स्वामी, जिन भक्ति का महत्व प्रतिपादन करते हुए समाधि भक्ति में निम्न प्रकार कहते है :-

एकापि समर्थेयं जिनभक्तिदुर्गतिं निवारयितुम।

पुण्यानि य पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।8।।

एक ही जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति समस्त दुर्गतियों का निवारण करने के लिये, सातिशय पुण्य को सम्पादन करने के लिए मुक्ति श्री को प्रदान करने के लिए समर्थ है।

जन्म-जन्म कृतं पापं जन्मकोटि समार्जितम्।

जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात्।।5।।

जन्म-जन्म में किया हुआ पाप, कोटि जन्मों में उपार्जित पाप तथा जन्म-जरा-मृत्यु, जिनेन्द्र भगवान् की वन्दना से नष्ट हो जाते है।

विघ्नाः प्रणश्यन्ति भयं न जातु न दुष्टदेवाः परिलङ्घयन्ति।

अर्थान्यथेष्टाश्चे सदा जिनोत्तमानां परिकीर्तनेन।।2।।

धवला पु. पृ.4

जिनेन्द्र देव के गुणों का कीर्तन करने से विघ्न नाश को प्राप्त होते हैं, कभी भी भय नहीं होता है, दुष्ट देवता आक्रमण नहीं कर सकते हैं और निरंतर यथेष्ट पदार्थों की प्राप्ति होती है।

आदौ मध्येऽवसाने च मंगलं भाषितं बुधैः।

तज्जिनेन्द्रगुणस्तोत्रं तद्विघ्नप्रसिद्धये ।।22।।

विद्वान्, पुरुषों ने, प्रारम्भ किये गये किसी भी कार्य के आदि, मध्य और अंत में मंगल करने का विधान किया है। वह मंगल निर्विघ्न कार्य सिद्धि के लिये जिनेन्द्र भगवान् के गुणों का कीर्तन करना ही है।

इसी धवला में वीरसेन स्वामी मंगल, भक्ति, पूजा,, स्वाध्यायादि शुभोपयोग से जो सर्वांगीण लाभ होता है, उसको वर्णन करते हुए कहते हैं-

तत्र हेतुर्द्विविधःप्रत्यक्ष हेतुःपरोक्ष हेतुरिति।कस्य हेतुः? सिद्धान्ताध्ययनस्य तत्र प्रत्यक्ष हेतु द्विविध साक्षात्प्रत्यक्ष परम्परा प्रत्यक्ष भेदात्।

तत्र साक्षात्प्रत्यक्षमज्ञानविनाशः सज्ज्ञानोत्पत्तिर्देवमनुष्यादिभिः सततमभ्यर्चनं प्रति समयमसंख्यात गुणश्रेण्या कर्म निर्जुरा चा कर्म णामसंख्यात गुण श्रेणिनिर्जरां केषां प्रत्यक्षेति चेन्न, अवधि, मनःपर्यय ज्ञानिनासूत्रमधीयानानां तत्प्रत्यक्षतायाः समुपलम्भात् तत्र परम्पराप्रत्यक्षं शिष्यप्रशिष्यादिभिःसततमभ्यर्चनम्। परोक्षंद्विविध, अभ्युदय नेःश्रेयस मिति तत्राभ्युदयसुखं नामा सांतादि प्रशस्त-कर्म तीव्रानुभागोदय जिनेन्द्र प्रतीन्द्र सामानिक त्रायस्त्रिंशदादि-देव-चक्रवर्ति-बलदेव नारायणार्धमण्डलोक-मण्डलीक-महामण्डलीक-राजधिराज-महाराजाधिराज परमेश्वरादि दिव्य मानुष्य सुखम्। **धवला पु. पृ.55**

हेतु दो प्रकार का होता है। एक प्रत्यक्ष हेतु और दूसरा परोक्ष हेतु।

शंका : यहाँ पर किसके हेतु का कथन किया जाता है ?

समाधान : यहाँ पर सिद्धान्त के अध्ययन के हेतु का कथन किया जाता है।

उन दोनों प्रकार के हेतुओं में से प्रत्यक्ष हेतु दो प्रकार का है, साक्षात्प्रत्यक्ष हेतु और परंपरा-प्रत्यक्ष हेतु। उनमें से अज्ञान का विनाश, सम्यग्ज्ञान की उत्पत्ति, देव,मनुष्यादि के द्वारा निरंतर पूजा का होना और प्रत्येक समय में असंख्यात-गुणित-श्रेणी रूप से कर्मों की निर्जरा का होना साक्षात्प्रत्यक्ष हेतु फल समझना चाहिए।

शंका : कर्मों की असंख्यात्-गुणित-श्रेणी रूप से निर्जरा होती है, यह किनके प्रत्यक्ष है ?

समाधान : ऐसी शंका ठीक नहीं है ? क्योंकि, सृत्र का अध्ययन करने वालों की असंख्यात-गुणित-श्रेणी रूप से प्रति समय कर्म निर्जरा होती है, यह विषय अवधिज्ञानी और मनःपर्यय ज्ञानियों को प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध होती है।

शिष्य, प्रतिशिष्यादिक के द्वारा निरंतर पूजा जाना परंपरा,प्रत्यक्ष हेतु है। परोक्ष हेतु भी दो प्रकार का है, एक अभ्युदय सुख और दूसरा नैश्रेयस सुख। इनमें से साता-वेदनीय आदि प्रशस्त-कर्म-प्रकृतियों के तीव्र अनुभाग के उदय से उत्पन्न हुआ इन्द्र, प्रतीन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश आदि देव संबंधी दिव्य-सुख और चक्रवर्ती, बलदेव, नारायण, अर्ध मण्डलीक, मण्डलीक महामण्डलीक, राजाधिराज, महाराजधिराज, परमेश्वर आदि मनुष्य सुख को अभ्युदय सुख कहते हैं।

जिनदर्शनःनिजदर्शन-

दर्शन देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनम्।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शन मोक्ष साधनम्।।1।।

देवाधिदेव अरहन्त भगवान् का दर्शन पापों का नाशक है, स्वर्ग की सीढ़ी है और अधिक क्या दर्शन मोक्ष का भी साधन है।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्र हस्ते यथोदकम्।।2।।

जिस प्रकार छिद्र सहित हाथों में जल बहुत समय नहीं टिकता है, उसी प्रकार जिनेन्द्र देव के दर्शन और साधुओं की वंदना करने से पाप लम्बे समय तक नहीं ठहरते हैं।

बहुमान का स्वरूप

सुत्तत्थं जप्पंतो वार्यतो धावि णिज्जराहेतुं।
आसादणं ण कुज्जा तेण किदं होदि बहुमाणं।

निर्जरा के लिए सूत्र और उसके अर्थ को पढ़ते हुए तथा उनकी वाचना करते हुए आसादना नहीं करे। इससे बहुमान होता है।

मुनि निर्जरा के लिए – कर्मों के क्षय हेतु, अंग, पूर्व आदि के सूत्र और अर्थ को, जो जैसे व्यवस्थित है वैसे ही उनका उच्चारण करते हुए, पढ़ाते हुए, वाचना करते हुए और अन्यों का भी प्रतिपादन करते हुए आचार्य आदि की, शास्रों की और अन्य मुनियों की भी आसादना (तिरस्कार) नहीं करे अर्थात् गार्विष्ठ नहीं होवे। इससे शास्रादि का बहुमान होता है, पूजादिक करना होता है। तात्पर्य यह हुआ कि शास्त्र का,

गुरु का अथवा अन्य किसी मुनि या आचार्य का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। बल्कि उनके प्रति पूजा बहुमान आदि सूचक वचन बोलना चाहिए। यह बहुमान शुद्धि चौथी है।

अनिह्नव का स्वरूप

कुलवयसीलविहूणे सुत्तयं सम्मगागमित्ताणं।
कुलवयसीलमहल्ले णिण्हवदोसो दु जप्पंतो।

कुल व्रत, और शील से हीन होते हुए भी सूत्र और अर्थ को ठीक से पढ़कर कुल, व्रत और शील से महान् कहने लगना-यह निह्नव दोष होता है।

गुरु की संतति-परम्परा का नाम कुल है। हिंसा आदि पाँच पापों से विरति होना व्रत है। व्रतों के रक्षण आदि हेतु जो अनुष्ठान है उसे शील कहते हैं। इन कुल, व्रत और शील से जो हीन हैं,म्लान हैं वे कुल, व्रत और शील विहीन हैं। अर्थात् मठादिकों का पालन करने से अथवा अज्ञान आदि से गुरु सदोष होते हैं। ऐसे गुरु के शिष्य यद्यपि ज्ञानी और तपस्वी हैं। फिर भी वे शिष्य कुलहीन कहे जाते हैं। अथवा तीर्थंकर भगवान् गणधर देव और सत्रऋद्धि सम्पन्न महामुनियों से अतिरिक्त जो अन्य यतिगण हैं वे यहाँ पर कुल, व्रत और शील से विहीन माने गये हैं। उन कुलव्रतशील से विहीन यतियों से समीचीन शास्त्रों को समझना पढ़कर जो ऐसा कहते हैं कि 'मैंने कुल, व्रत और शील में महान् ऐसे गुरु से यह शास्त्र पढ़ा है इस प्रकार से कहने वाले उन मुनि के निह्नव नाम का दोष होता है। अपने आप में गर्व को धारण करते हुए मुनि के शास्त्र-निह्नव और गुरु निह्नव दोष होता है और इससे महान् कर्म बन्ध होता है। जिनेन्द्रदेव कथित शास्त्रों को पढ़कर या सुनकर पुनः यह कहता है कि मैंने यह शास्त्र नहीं पढ़ा है। उस शास्त्र में ज्ञानी नहीं हुआ हूँ। इस प्रकार निर्गन्थ यतियों से शास्त्र समझकर अन्य का नाम, प्रतिपादित करने लगता है। ऐसा किसलिए ?

लोक में पूजा के लिए। अर्थात् लोक में कोई अन्य ख्यातिप्राप्त है। और अपने गुरु कुछ कम ख्यात हैं। इसलिए इनका प्रसिद्ध गुरु या ग्रन्थ का नाम लेने से मेरी लोक में पूजा होगी। यदि ऐसा समझकर कोई मुनि गुरु निह्नव या शास्त्रनिह्नव करते हैं तो वे निह्नव दोष के निमित्त से उसी समय से मिथ्यादृष्टि हो जाते हैं। सामान्य यतियों से ग्रन्थ

को सुनकर जो तीर्थंकर आदि का नाम प्रतिपादित कर देते हैं। ऐसा करने से भी वे निह्नव दोष के भागी होते हैं। यह अनिह्नव शुद्धि पाँचवी है।

विनय से अध्ययन का फल

विणएण सुदम धीदं जदिवि पमादेण होदि विस्सरिदं।
तमुवट्ठादि परभवे केवलणाणं च आवहदि। (286)

विनय से पढ़ा गया शास्त्र यद्यपि प्रमाद से विस्मृत भी हो जाता है तो भी वह परभवं में उपलब्ध हो जाता है और केवल ज्ञान को प्राप्त करा देता है।

विनय से जो शास्त्र पढ़ा गया है। प्रसाद से यदि उसका विस्मरण भी हो जावे तो अन्य जन्म में यह सूत्र ग्रन्थ उपस्थित हो जाता है,स्मरण में आ जाता है। और वह पढ़ा हुआ शास्त्र केवल ज्ञान को भी प्राप्त कर देता है। इसलिए काल आदि की शुद्धिपूर्वक शास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

महावीर भगवान् के शिष्य गौतम गणधर ने भी कहा है-

तत्थ णाणायारो :- काले, विणये, उवहाणे, बहुमाणे तहेव अण्णिण्हवणे, विजंण अत्थदुभये चेदि, णाणायारो अट्ठविहो परिहाविदो, से अक्खरहीणं वा, सरहीणं वा, विंज-णहीणं वा, पदहीणं वा, अत्थहीणं वा, गंथहीणं वा, थवेसु वा, युईसु वा, अत्थक्खाणेसु वा, अणियोगेसु वा, अणियोग-द्दारेसु वा, अकाले वा, सज्झाओ कदो वा, कारिदो वा, किरंतो वा, समणुमण्णिदो, काले वा परिहाविदो,अच्छाकारिदं, मिच्छामेलिंद, आमेलिदं वा मेलिद, अण्णहादिण्णं, अण्णहापाड़िच्छिदं, आवासएसु परिहीणदाए, तरस मिच्छा मे दुक्कडं।। धर्मं ध्यान प्रकाश पृ.सं. 268

उस पाँच प्रकार के आचार में पहला ज्ञानाचार है उसके 1. मतिज्ञान 2.श्रुतज्ञान 3.अवधिज्ञान 4.मनःपर्ययज्ञान और 5.केवलज्ञान इस प्रकार ज्ञान के पांच भेद होते हुये भी यहाँ पर श्रुतज्ञान का ही ग्रहण हैं, क्योंकि उसी का कालादि आठ प्रकार से आचरण सम्भव है। श्रुतज्ञानाचार आठ प्रकार का है। 1.सन्ध्या, सूर्य का या चन्द्रका ग्रहण, उल्कापात (वज्रपात या उल्का का टूटना) आदि अकालों को छोड़कर गोसर्गिक, प्रादोषिक कालों में शास्त्र का पठन-पाठन, श्रवण(सुनाना) चिन्तवन, परिवर्तन,

व्याख्यानादि करना कालाचार है। 2. पर्यंकादि सुखासनों से बैठकर कायिक, (काय सम्बन्धी) वाचिक(वचन सम्बन्धी) शुद्ध परिणामों से पठन-पाठन आदि करना विनचायार है। 3. अवग्रह (नियम) विशेषपूर्वक पठन-पाठनादि करना उपधानाचार है। 4. गन्ध पुष्प आदि अष्टद्रव्य से पूजा और सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति और गुरुभक्तिरूप भाव पूजा पूर्वक पठन (पढ़ना) एवं पाठन (पढ़ाना) आदि करना बहुमानाचार है। 5. जिस गुरु से पढ़ा है उस गुरु का नाम न छिपाकर उसी का नाम कहना या जिस शास्त्र को पढ़कर ज्ञानी हुआ है उसे न छिपाकर उसी शास्त्र का नाम बताना अनिह्नवाचार है 6. वर्ण, पद,वाक्य की शुद्धिपूर्वक शास्त्रों का पठन-पठनादि व्यंजनाचार है 7. अर्थ के अनुकूल पठन-पठनादि करना अर्थाचार है। 8. तथा शब्द और अर्थ की शुद्धि पूर्वक पठन-पाठनादि करना उभयाचार है। 1.काल 2.विनय 3.उपधान 4.बहुमान 5.अनिह्नव 6.व्यंजनशुद्ध 7. अर्थशुद्ध 8. उभयशुद्ध इस प्रकार 8 प्रकार का ज्ञानाचार है उसका अनेक तीर्थङ्करदेवों के गुणों का वर्णन करने वाले स्तवनों में, एक तीर्थँकर के गुणों का वर्णन करने वाली स्तुतियों में चारित्र और पुराणरूप अर्थाख्यानों में, प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग इन चार अनुयोगों में, कृति, वेदना आदि चौबीस अनुयोग द्वारों में (क) स्वरहीन (ख) सुबन्ततिङ्न्तपद से हीन (ग) ककारादि, व्यञ्जनहीन (घ) अर्थहीन (ङ) वाक्य, अधिकारादि रहित, ग्रन्थहीन, पठन पाठनादि करके परिहापन किया (आवश्यकता में कमी की) सन्ध्या, ग्रहण, उल्कापातादि अस्वाध्याय काल में आगम (सिद्धान्त) का स्वाध्याय किया, कराया और दूसरे को करते हुये की अनुमोदना की, आगम में विहित (बतलाये हुये) गोसर्गिकादिकाल में स्वाध्याय नहीं किया; बिना विचारे श्रुत का जल्दी-जल्दी उच्चारण किया, किसी अक्षर या शब्द को किसी अविद्यमान अक्षर या शब्द के साथ मिलाया शास्त्र के अन्य अवयवको किसी अन्य अवयव के साथ जोड़ा, उच्चध्वनियुक्त पाठ को नीचध्वनि वाले पाठों के साथ और नीचध्वनियुक्त पाठ को उच्चध्वनिवाले पाठ को साथ जोड़कर पढ़ा, अन्यथा कहा, अन्यथा ग्रहण किया, छह आवश्यकों में उनके कालानुसार अनुष्ठानकर, परिहीनता (कमी) करके ज्ञानाचार का परिहापन किया उस ज्ञानाचार परिहापन सम्बन्धी मेरे दुष्कृत में विफलता हो। यथा -

नन्दी सूत्र में भी कहा है जो श्रुतज्ञान शुद्धि से युक्त है वहीं वास्तविक श्रुतज्ञान

है और उससे ही आत्मकल्याण होता है।

आगमसत्थग्गहणं जं, बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं
बिंति सुयणाणलंभं, तं पुव्वविसारया धीरा (94) नन्दी सूत्र

सम्यक्श्रुत को भी बुद्धि के आठ गुणों के साथ ग्रहण किया गया हो, तभी वास्तविक श्रुतज्ञान का लाभ है(अन्यथा नहीं)।

'पूर्व विशारद' - दृष्टिवाद के पाठी, धीर-उपसर्ग आदि के समय भी व्रत प्रत्याख्यानों को दृढ़तापूर्वक पालने वाले, संत भगवंत कहते हैं कि-

जो आगम शास्त्रों का (जिससे जीवादि तत्त्वों का सम्यक् यथार्थ बोध हो, ऐसे सम्यक श्रुत का) ग्रहण है, वहीं वास्तविक श्रुतज्ञान का लाभ है। मिथ्याश्रुत ग्रहण, वास्तविक श्रुतज्ञान का लाभ नहीं।

जिससे जीवादि तत्त्वों का यथार्थ सम्यक् बोध होता है, ऐसे सम्यक्श्रुत रूप आचारांग आदि तथा इनसे विपरीत मिथ्याश्रुत का परिचय पहले दे दिया है। अब सूत्रकार, बुद्धि के आठ गुणों को बतलाते हैं-

1 सुस्सूसइ 2 पडिपुच्छइ 3 सुणेइ 4 गिण्हइय 5 ईहए यावि।
6 तत्तो अपोहए वा, 7 धारेइ 8 करेइ वा सम्मं। (95)

जो 'शुश्रुषा करता है' - गुरुदेव जो कहते हैं उसे विनययुक्त सुनने की इच्छा रखता है एकाग्र होकर सुनता है। 2 'प्रतिपृच्छा करता है' - सुनते हुए श्रुत में जहाँ शंका हो जाये, वहाँ अति नम्र वचनों में गुरुदेव के हृदय को आह्लादित करता हुआ, 'पूछता' है। 3 'सुनता है' पूछने पर गुरुदेव जो कहते हैं, उन शब्दों को चित्त को डोलायमान न करते हुए सावधान चित्त हो सुनता है। 4 'ग्रहण करता है' उन शब्दों को सुनकर उनके अर्थों को समझता है। 5 'ईहा करता है' - गुरुदेव का पूर्व कथन और पश्चात् कथन में विरोध न आवे, इस प्रकार सम्यक् पर्यालोचना करता है। 6 'अपोह करता है- विचारणा के अन्त में गुरुदेव जैसा कहते हैं, तत्त्व वैसा ही है, अन्यथा नहीं, - इस प्रकार स्वमति में सम्यक् निर्णय करता है। 'धारण करता है'- वह निर्णय कालान्तर और स्मरण में रहे, इस प्रकार इसकी धारणा (अविच्युति) करता है। 8 'करता है' - श्रुतज्ञान में जिसे त्याग करना कहा है उसका त्याग करता है, जिसकी उपेक्षा करना कहा है, उसकी उपेक्षा करता है तथा जिसका धारण करना

कहा है, उसे धारण करता है।

अब सूत्रकार सुनने की विधि बताते हैं।

मूअं हुंकारं वा, वाढक्कारं पडिपुच्छ वीमंसा।

तत्तो पसंगपारायणं च, परिणिट्ठ सत्तमए।। (96)

सर्वप्रथम। 'मूक रहे' - गूंगे की भाँति चुपचाप होकर गुरुदेव के वचन सुने। 2 'हुंकार करते'- सुनने के पश्चात् गुरुदेव को विनय युक्त तीन बार वन्दना करे। 'बाढ़ंकार करे'- वन्दना के पश्चात गुरुदेव! आपने यथार्थ प्रतिपादन किया' - यों कहे। 4 'प्रतिपृच्छा करे' - यह 'तत्त्व यों कैसे ?' - यों सामान्य प्रश्न करे। 5 'विमर्श करे' - प्रश्न का सामान्य उत्तर मिलने के पश्चात् विशेष ज्ञान के लिए प्रमाण आदि पूछे। 6 'प्रसंग परायण करे'- प्रमाण आदि प्राप्त करके उस तत्त्व प्रसंग का आद्योपान्त सूक्ष्म बुद्धि से परायण करे। 7 'सातवें में परिनिष्ठ होवे'। ऐसा करने पर सातवीं दशा में श्रुतार्थी शिष्य, गुरुदेव के समान ही तत्त्व प्रतिपादन में समर्थ बन जाता है।

अब सूत्रकार, शिष्य को श्रुतज्ञान देने की विधि बताते हैं।

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ णिज्जुत्तिभीसिओ भणिओ।

तइओ य णिरवसेसो, एस बिही होइ अणु अणुओगे।(97)

प्रथम सूत्र पढ़ाने और सामान्य अर्थ बतावें, फिर निर्युक्ति मिश्रित सूत्रार्थ पढ़ावें और अन्त में नय, निक्षेप प्रमाणादि सहित 'निरवशेष' सूत्रार्थ पढ़ावें। यह श्रुतदान की विधि है।

आत्मानुशासनम् में गुणभद्र आचार्य ने उपर्युक्त विषय का वर्णन प्रकारान्तर से निम्न प्रकार से किया है-

भव्यः किं कुशलं ममेति विमृशन् दुःखाद् भृशं भीतवान्

सौख्येषी श्रणादिबुद्धिविभवः श्रुत्वा विचार्य स्फुटम।

वैयावृत्य शिक्षाव्रत का दूसरा लक्षण

व्यापत्तिव्यपनोदःपदयोःसंवाहनं च गुणरागात्।

वैयावृत्यं यावानुप, ग्रहोऽन्योऽपि संयमिनाम्।।112 रत्न. श्रा.

अर्थ : गुणों में प्रेम होने से संयमीजनों के दुःखों को दूर करना पैरों को दबाना

तथा अन्य भी जितना उपकार है, वैयावृत्य कहलाता है।

दान का लक्षण

नवपुण्यैः प्रतिपत्तिः सप्तगुण समाहितेन शुद्धेन।

अपसूनारम्भाणा, मर्याणा मिष्यते दानम्।।113

अर्थ :- सात गुण सहित, भद्र श्रावक के द्वारा नवधा भक्ति सहित एवं पाँच सूना और आरंभ रहित मुनि को आहार आदि देना दान कहलाता है।

दान का फल

गृह कर्मणापि निचितं, कर्म विमार्ष्टि खलु गृह विमुक्तानाम्।

अतिथीनां प्रतिपूजा, रुधिरमलं धावते वारि।।114

अर्थ :- जैसे जल खून को धो देता है वैसे ही गृह त्यागी अतिथि जनों को यथायोग्य आहार आदि देने से घर गृहस्थी के काम में संचित पाप भी निश्चय से नष्ट हो जाते हैं।

नवधा भक्ति का फल

उच्चैर्गोत्रं प्रणतेर्भोगो दाना दुपासनात्पूजा।

भक्तेः सुन्दररूपं, स्तवनात्कीर्तिस्तपोनिधिषु।।115

अन्वयार्थ :- तपोनिधिषु = तपस्वी मुनियों को, **प्रणतेः** = नमस्कार करने से, **उच्चैर्गोत्रं** = उच्च गोत्र, **दानात्**= दान से, **भोगः** = भोग, **उपासनात्** =सेवा उपासना करने से, पूजा=पूजा (सम्मान), **भक्तेः**=भक्ति करने से, **सुन्दर रूपं**=सुंदर रूप और, **स्तवनात्** = स्तुति करने से, **कीर्तिः** = कीर्ति होती है।

अर्थ :- मुनिराजों को नमस्कार करने से उच्च गोत्र की, दान देने से भोग की, सेवा (उपासना), करने से मान्यता (पूजा) की, भक्ति करने से सुन्दर रूप की, स्तुति करने से कीर्ति की प्राप्ति होती है।

सबसे पहिले उसे उपदेश सुनने की उत्कंठा(शुश्रूषा) होनी चाहिये, अन्यथा तदनुसार आचरण करना तो दूर रहा किन्तु वह उसे रूचिपूर्वक सुनेगा भी नहीं। अथवा शुश्रूषा से अभिप्राय गुरु की सेवा का भी हो सकता है, क्योंकि वह भी ज्ञान प्राप्ति का साधन है। इसके अनन्तर श्रवण (सुनता), सुने हुये अर्थ को ग्रहण करना,

ग्रहण किये हुए अर्थ को हृदय में धारण करना उसका स्मरण रखना, उसके योग्यायोग्य का युक्ति पूर्वक विचार करना, इस विचार से योग्य प्रमाणित हो उसे ग्रहण करके अयोग्य अर्थ को छोड़ना, तथा योग्य तत्त्व के विषय में दृढ़ रहना, ये श्रोता के आठ गुण है जो उसमें होने चाहिये। उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त श्रोता में हठाग्रह का अभाव भी होना चाहिये, क्योंकि यदि वह हठाग्रही है तो वह यथावत् वस्तुस्वरूप का विचार नहीं कर सकेगा। कहा भी है-

''आग्रही बत निनीषति युक्ति तत्र यत्र मतिरस्य निविष्य।
पक्षपातरहितस्य तु युक्तियंत्र तत्र मतिरेति निवेशम्।।

अर्थात् दुराग्रहीमनुष्यने जो पक्ष निश्चित कर रखा है वह युक्ति को उसी ओर ले जाना चाहता है किन्तु जो आग्रह से रहित होकर निष्पक्ष दृष्टि से विचार करना चाहता है वह युक्ति का अनुसरण करके उसके ऊपर विचार करता और तदनुसार वस्तुस्वरूप का निश्चय करता है। इस प्रकार जिस श्रोता में ये गुण विद्यमान होंगे वह सुरूचि पूर्वक धर्मोपदेश को सुन करके तदनुसार आत्महित के मार्ग में अवश्य प्रवृत होगा।

अध्ययन में विनय

काले विणए उवहाणे बहुमाणे तहेव णिण्हवणे।
वंजणअत्थतदुभयं विणुओ णाणम्हि अट्ठविहो। (मूलाचार)367

द्वाद्वशांग और चतुर्दश पूर्वों को कालशुद्धि से पढ़ना, व्याख्यान करना अथवा परिवर्तन-फेरना कालविनय है। उन्हीं ग्रन्थों का (या अन्य ग्रंथों का) हाथ पैर धोकर पर्यंकासन से बैठकर अध्ययन करना विनयशुद्धि नाम का ज्ञान विनय है। नियम विशेष लेकर पढ़ना उपधान है। जो ग्रंथ पढ़ते हैं और जिनके मुख से सुनते हैं उस पुस्तक और उन गुरु इन दोनों की पूजा करना और उनके गुणों का स्तवन करना बहुमान है। उसी प्रकार से जिस ग्रंथ को पढ़ते हैं और जिनसे पढ़ते हैं उनका नाम कीर्तित करना अर्थात् उस ग्रंथ का उन गुरु के नाम को नहीं छुपाना यह अनिह्वव है। शब्दों का शुद्ध पढ़ना व्यंजनशुद्ध विनय है। अर्थ शुद्ध करना अर्थ शुद्ध विनय है और इन दोनों को शुद्ध रखना व्यंजनार्थ उभयशुद्ध विनय है। इस न्याय से ज्ञान का विनय आठ प्रकार से करना चाहिए।

णाणं सिक्खदि णाणं गुणेदि णाणं परस्स उवदिसदि।
णाणेण कुणदि णायं णाणाविणीदो हवदि एसो।। (368)

ज्ञान विद्या को प्राप्त कराता है। ज्ञान अवगुण को गुणरूप से परिवर्तित करता है। ज्ञान पर उपदेश का प्रतिपादन करता है। ज्ञान से न्याय-सत्प्रवृति करता है वह ज्ञानविनीत होता है।

प्रश्न-दशर्नाचार और दर्शनविनय में क्या अन्तर है ? उसी प्रकार ज्ञानाचार और ज्ञानविनय में क्या अन्तर है ?

उत्तर – शंकादि परिणामों के परिहार में प्रयत्न करना और उपगूहन आदि गुणों के अनुष्ठान में प्रयत्न दर्शनविनय है। पुनः शंकादि के अभावपूर्वक तत्वों के श्रद्धान में यत्न करना दर्शनाचार है। उसी प्रकार कालशुद्धि आदि विषय अनुष्ठान में प्रयत्न करना काल आदि विनय है तथा द्रव्य, क्षेत्र और भाव आदि के विषय में प्रयत्न करना यह सब ज्ञानाचार है। काल शुद्धि आदि के होने पर श्रुत के पढ़ने का प्रयत्न करना ज्ञान विनय है और श्रुत के उपकरणों में अर्थात् ग्रन्थ, उपाध्याय आदि में प्रयत्न करना श्रुतविनय है।

उसी प्रकार से जो तप से अज्ञान तम को दूर करता है और आत्मा को मोक्ष मार्ग के समीप करता है वह तपोविनय है और नियमितमति होना है वह भी तप का विनय है ऐसा जानना चाहिये।

औपचारिक विनय –

बाइयवाइयमाणसिओ त्ति अकतिविहो दु पंचमो विणओ।
सो पुण सव्वो दुविहो पच्चक्खो तह परोक्खो य ।। (372)

काय से होने वाला कायिक है, वचन से होने वाला वाचिक और मन से होने वाला मानसिक विनय है। जो स्वर्ग मोक्षादि में विशेष रूप से ले जाता है वह विनय है। इस तरह औपचारिक नामक पाँचवाँ विनय तीन प्रकार का है अर्थात् काय के आश्रित, वचन के आश्रित और मन के आश्रित से यह विनय तीन भेद रूप है। वह तीनों प्रकार का विनय प्रत्यक्ष और परोक्ष के भेद से दो प्रकार है अर्थात् प्रत्यक्ष विनय के भी तीन भेद हैं, और परोक्ष के भी तीन भेद हैं। जब गुरु प्रत्यक्ष में है, चक्षु आदि इन्द्रियों के गोचर है तब उनका विनय प्रत्यक्ष विनय है तथा जब गुरु आदि से परे दूर

हैं तब उनकी जो विनय की जाती है वह परोक्ष विनय है।

भावार्थ-श्री जिनेन्द्र प्रभु के मुख कमल से समुत्पन्न जो सरस्वती भारती है वह माता के समान भव्य जीवों का पालन पोषण रक्षण करने वाली है। तत्त्व विभ्रम का निवारण माता की आज्ञानुसार चलने वाले भव्य जीवों का लौकिक और पारलौकिक जीवन सुखमय होता है। तथा शीघ्र ही मोक्ष लक्ष्मी को वह प्राप्त कर लेता है ऐसी जिनवाणी सरस्वती को मैं नमस्कार करता हूँ ।। 17।। 18।।

आगे गुरु वन्दना करते हुए आचार्य लिखते हैं-

जयन्तु गुरवो नित्यं सूरिपाठक साधवः।

ये सदा भव्यजन्तूनां संसाराम्बुधि सेतवः।। 19 (श्रीपाल चा.)

भावार्थ - निरन्तर ज्ञान, ध्यान तप में लीन रहने वाले जो सम्पूर्ण बाह्य आभ्यंतर परिग्रह के त्यागी दिगम्बर गुरु है अथवा आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी हैं, उनके वचन मोक्ष की प्राप्ति में उसी प्रकार साधक है जैसे समुद्र को पार करने में पुल-सेतु साधक होता है। गुरु के वचनानुसार प्रवृत्ति करने वाला निश्चय से मोक्ष को प्राप्त करता है। उस उत्तम मुक्ति की प्राप्ति के लिये आचार्य श्री ''जयन्तु गुरवो'' शब्दों में स्तुति करते हुए गुरु भक्ति को प्रकट करते हैं।। 19।।

अब अपने कार्य की निर्विघ्न सिद्धि के लिये विशेष रूप से गुरुजनों का स्मरण करते हैं-

कुन्दकुन्दाख्यविद्यादिनन्दिश्रीमल्लिभूषण ।

श्रुतादिसागरादीनां गुरुणांसंस्मराम्यहम्।।20।।

भावार्थ - गुरुभक्ति की पवित्र भावना से प्रेरित हुए आचार्य श्री, यहाँ पुनः कुन्दकुन्द स्वामी, श्री विद्यानन्द स्वामी, श्री मल्लिभूषण और श्रुतसागर आदि आचार्यों का स्मरण करते है जिसमें ग्रन्थ रचना का कार्य निर्विध्न समाप्त हो सके।। 20।।

पञ्चमगति मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा रखते हुए आचार्य पुनः गुरुजनों का आशीर्वाद चाहते हुए लिखते हैं -

पञ्चैते परमानन्ददायिनः परमेष्ठिनः।

सन्तु नः भव्यजीवानां पञ्चमीगति दायकः।। 21।।

भावार्थ - पुनः सामान्य रूप से पञ्चपरमेष्ठी का स्मरण करते हुए आचार्य कहते हैं कि आप सभी निराकुल स्थाई सुख को प्रदान करने वाले हैं, आपकी स्तुति करने से मुझे भी वह निराकुल स्थाई सुख प्राप्त होगा तथा श्रेष्ठतम जो पञ्चम मोक्षगति है वह भी परम्परा से प्राप्त हो सकेगी।। 21।।

अब पवित्र, सुखद मनोहारी, श्रीपाल चरित्र को लिखने की प्रतिज्ञा करते हुए आचार्य कहते हैं-

ए तेषां शर्म हेतूनां चरणस्तुतिमङ्गलम्।

कृत्वाहं तुच्छबुद्ध्यापि श्रीपाल चरितं ब्रु वे।।22।।

भावार्थ- यहाँ पञ्चपरमेष्ठी की स्तुति भक्तिपूर्वक आचार्य श्री 'श्रीपाल चरित्र' को लिखने का संकल्प करते हैं।। 22।।

चरित्रं सर्वदा सर्वरोग संतापनाशनम्।

सिद्धचक्रव्रतोपेतं सिद्धयौषधिमिवोत्तमम्।। 23।।

भावार्थ - समस्त जीवों के प्रति हित की पवित्र भावना से प्रेरित होकर आचार्य श्री यहाँ श्रीपाल चरित्र को लिखते हुए वह बता रहे हैं कि यह चरित्र उत्तम औषध के समान है। लौकिक और आत्मिक दोनों प्रकार के सुख को प्रदान करने वाला है।। 23।।

पुनः अन्य की प्रामाणिकता की सिद्धि के लिये आचार्य कहते है कि आचार्य परम्परा से प्राप्त कथा को ही मैं लिख रहा हूँ यह कोई कल्पित मनगढ़न्त कथा नहीं है-

यत्पुरा चरितं पूर्व सूरिभिः श्रुतसागरैः।

तवहं चापि वक्ष्यामि किमाश्चर्यमतः परम्।। 24

भावार्थ-श्रीपाल चरित्र मन गढ़न्त कपोलकल्पित नहीं है, अपितु पूर्व आचार्य परम्परा से प्राप्त श्री श्रुतसागर आचार्य के द्वारा कथित यथार्थ और प्रामाणिक है, पवित्र और पाप नाशक है। पुनः आचार्य कहते है कि मैं अल्प बुद्धिवाला हूँ, मुझमें यद्यपि उस महान् चरित को लिखने की क्षमता नहीं है फिर भी मैंने उस कार्य को करने का जो साहस किया है वह सर्वाधिक आश्चर्यकारी है। इस प्रकार यहाँ आचार्य श्री के द्वारा ग्रन्थ की प्रमाणता और अपनी विनम्रता और निरहंकारता भी प्रकट की गई है।।

यस्य श्रवणमात्रेण चरितेन विशेषतः।
पापराशि क्षयं याति भास्करेणेव दुस्तमः।।25।।

भावार्थ-जिस प्रकार सूर्य के द्वारा रात्रि का गहरा अन्धकार भी तत्काल नष्ट कर दिया जाता है उसी प्रकार इस पवित्र चरित्र को सुनने मात्र से पाप समूह क्षय को प्राप्त हो जाता है।

यस्यप्रभावतो नूनं कुष्ठादि व्याधिसञ्चयः।
प्रयाति विलयं सद्यो वायुनावा घनावलिः।।

भावार्थ- इस परम पुनीत श्रीपाल चरित्र के सुनने मात्र से भक्तजनों के कुष्ठ, लूती, क्षय आदि संक्रामक-असाध्य रोग भी क्षण-भर में उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे वायु के वेग से गहन बादल निमिष मात्र में बिखर जाते हैं।। 26।।

उपेक्षित जिनवाणी का अमृत सन्देश

- आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज : 1. होठों पे सच्चाई रहती है...2 हाँ तुम बिलकुल)

मैं जिनवाणी सर्वज्ञवाणी सबसे उपेक्षित मैं दिव्यवाणी।
सर्वज्ञसुता मैं सरस्वती मेरे(हैं) पुत्र गणधर ज्ञानी।। (टेक)

मेरी सन्तति आचार्य यति पाठक साधुसन्त आर्यिका सती।
मेरी कोख से जन्म लेते हैं ज्ञान-विज्ञान भाषा संस्कृति।।
तथापि मुझे कोई न जाने न माने हैं वे मन्दमती।
जो भव्य जाने जो भव्य माने सो ही बने मोक्षपति।। (1)

पढाई-बढाई चमड़ी-दमड़ी में लगे रहते हैं मूढ अज्ञानी।
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि डिग्री को ही सब कुछ माने अज्ञानी।।
कोई मुझे पढे पर गुने नहीं अतः हैं वे पंथ मतगामी।
स्वार्थ में मेरा करे उपयोग स्व-पर घातक अन्धश्रद्धानी।। (2)

अनेकान्त को एकान्तवाद रूप मे वीतराग को वित्तराग में माने।
परमार्थ को स्वार्थरूप में आत्मसिद्धि को प्रसिद्धि रूप माने।।

मैं जो बताऊँ ज्ञान-विज्ञान आत्मिक ज्ञान में नहीं है रूचि।
किंतु अढ़ाई वर्ष आयु से पढ़ने-पढ़ाने में होती है रूचि।। (3)

मेरा ज्ञान तो अनंतज्ञान लौकिक अलौकिक आध्यात्मज्ञान।
लौकिकज्ञान भौतिकज्ञान तथापि मेरा न लेता ज्ञान।।
ऊँट को यथा नीम सुहाए मोही को लौकिकज्ञान ही भाये।
इसलिए मैं होती उपेक्षित उल्लू को यथा सूर्य न भाए।। (4)

'कनकनन्दी' का सुनो आह्वान स्वाध्याय से तुम नाश करो अज्ञान।
अमृत समान मेरा है ज्ञान समस्त दुःखों के नाशक ज्ञान।।
मैं जिनवाणी सर्वज्ञवाणी सबसे उपेक्षित मैं दिव्यवाणी।
सर्वज्ञसुता मैं सरस्वती मेरे हैं पुत्र गणधर ज्ञानी।। (5)

ज्ञान-सुख-लाभ शक्ति आदि न बढ़ने के व बढ़ने के कारण)

अज्ञानी-मोही बिना प्रयोजन करते अधिक पाप

(ज्ञानदर्शनावरणीय मोहनीय अन्तराय कर्म बन्ध व क्षय के कारण)

(चाल :- आत्मशक्ति...)

बिना प्रयोजन अधिक पाप करते हैं अज्ञानी-मोही।
ज्ञानदर्शनावरणीय मोहनीय अन्तराय बान्धते हैं अज्ञानी-मोही।।
सर्वज्ञ कथित गणधर ग्रन्थित आचार्य द्वारा जो प्रतिपादित।
उनके अनुसार कुछ वर्णन कर रहा हूँ मैं निम्नलिखित।। (1)

जो ज्ञान व दर्शन सम्बन्धी करते है निम्नोक्तदोष।
वे ज्ञानावरणीय व दर्शनावरणीय कर्म बान्धते हैं विशेष।।
ज्ञानी-ज्ञानी की प्रशंसा सुनकर जो न होते हैं प्रसन्न।
किन्तु ईर्ष्या से चुप रहते हैं उन्हें लगता हैं प्रदोष भाव।। (2)

स्वजान या ग्रन्थों को पात्रों को जो न देते हैं वञ्चना से।

वे करते ते हैं निह्नव दोष (क्योंकि) वे ज्ञान को छिपाते अन्य से।।
ज्ञानदाता गुरु का नाम छिपाना तथा पठित ग्रंथों का भी।
उनका गुण न वर्णन करना यह दोष निह्नव भी।। (3)

देय ज्ञान को भी जो योग्य पात्र में नहीं देने वे करते मात्सर्य दोष।
ज्ञानार्जन में व्यवधान करना वे करते हैं अन्तराय कर्म।।
अन्य के द्वारा प्रकाशित ज्ञान को जो नहीं करते प्रशंसा विनय।
तन व वचन से ये न करते व करते आसादना दोष।। (4)

स्वदूषित भाव के कारण जो प्रशस्त ज्ञान में करते दोषारोपण।
वे करते हैं उपधान दोष को व बान्धते ज्ञान दर्शनावरणीय।।
आचार्य-उपाध्याय के प्रतिकूल चलना या उनका अपमान करना।
सूत्र विरूद्ध कथन करना स्वहठाग्रह दुराग्रह को नहीं छोड़ना।।(5)

मिथ्योपदेश करना व स्वज्ञान का गर्व भी करना।
ज्ञान व शास्त्र बेचना शास्त्राभ्यास में आलस्य करना।।
अनादर से शास्त्र सुनना व अयोग्य व्यक्ति से ज्ञानलेना।
अकाल व अशुद्धि में स्वाध्याय करना व अपमान करना।। (6)

सम्यग्दृष्टि से घृणा करना व मुनिगणों से ग्लानि करना।
नास्तिक होना व आलस्य आदि करना दर्शनावरणीय बान्धना।।
केवली श्रुत संघ धर्म व दोषों का जो अवर्णवाद करते हैं।
वे दर्शन मोहनीय कर्मबान्धते संसार में भ्रमण करते।। (7)

कषाय उदय से तीव्रपरिणाम से चारित्र मोहनीय बान्धते।
धर्म कार्य में जो विघ्न डालते वे अन्तराय कर्म बान्धते।।
उक्त दोषों में भाव प्रदूषण होता है प्रमुख कारण।
अज्ञान-मोह-अहंकार-ईर्ष्या-द्वेष-घृणादि मुख्य कारण।। (8)

उक्त कर्म ही है घोरातिघोर पाप कर्म जो संसार के कारण।
उक्त चारों घाती कर्म क्षय से साधु बनते हैं अरिहंत महान्।।
अरिहंत बनते अवश्य सिद्ध, अज्ञानी मोही पाते दुःख अनन्त।
ऐसे घोर पाप त्याग करने हेतु 'सूरी कनक' करे सदा प्रयत्न।। (9)

सत्तर कोटा-कोटि सागर बन्धे मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति।
ज्ञानदर्शनावरणीय अन्तराय तीस कोटा कोटि सागर स्थिति।।
इस अवधि में वे पापी जीव नरक-निगोद में जन्मते अनन्त बार।
घोरातिघोर दुःख सहते ऐसा ही घातीकर्म चार प्रकार ।। (10)

ऐसे पाप को दूर करने हेतु सच्चे गुरु से लेना चाहिए प्रायश्चित।
ज्ञान-ज्ञानी प्रशंसा व ज्ञानदान करना चाहिए यथायोग्य।।
उक्त पापों को दूर करने हेतु करणीय है उक्तदोष दूर।
देवशास्त्र गुरु गुण-गुणी की श्रद्धा-प्रशंसा अनिवार्य।। (11)

इस हेतु ही होते हैं देवशास्त्र गुरु के पंचप्रकार विनय।
पूजा प्रार्थना-आरती-वन्दना-तीर्थयात्रा-पंचकल्याण।।
पूर्ण घातीकर्म नाश हेतु श्रमण बनना है अनिवार्य।
ध्यान-अध्ययन-समता-शुचि से क्षपक श्रेणी आरोहण।। (12)

सागवाड़ा दिनांक 9.6.2018 रात्रि 11:9

संदर्भ -

ज्ञानावरण और दर्शनावरण के आस्रव

तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः। (10) त. सू.

1. प्रदेष Depreciation of the learned scriptures

2. निह्नव Concealment of knowledge.

3. मात्सर्य Envy, jealousy Refusal to import knowledge of every.

4. अन्तराय obstruction. Hindering the progress of knowledge

5.आसादना Denying the truth proclaimed by another by body and speech.

6.उपघात Refuting the truth, although it is known to be such.

ज्ञान और दर्शन के विषय में प्रदोष, निह्नव मात्सर्य, अन्तराय, आसादना और उपघात ये ज्ञानावरण और दर्शनावरण के आस्रव हैं।

1. प्रदोष – किसी के ज्ञानकीर्तन (महिमा सुनने) के अनन्तर मुख से कुछ न कहकर अंतरंग में पिशुनभाव होना, ताप होना प्रदोष है। मोक्ष की प्राप्ति के साधनभूत मति, श्रुत आदि पाँच ज्ञानों की वा ज्ञान के धारी के धारी की प्रशंसा करने पर वा उसकी प्रशंसा सुनने पर सुख से कुछ नहीं कहकर के मानसिक परिणामों से पैशून्य होता है वा अंतकरण में उसके प्रति जो ईर्ष्या का भाव होता है, वह प्रदोष कहलाता हैं।

2. निह्नव–दूसरे के अभिसन्धान से ज्ञान का व्यपलाप करना निह्नव है। यत् किश्चित् परनिमित्त को लेकर किसी बहाने से किसी बात को जानने पर भी मैं इस बात को नहीं जानता हूँ, पुस्तक आदि के होने पर भी 'मेरे पास पुस्तक आदि नहीं है' इस प्रकार ज्ञान को छिपाना ज्ञान का व्यपलपन करना, ज्ञान के विषय में वञ्चन करना निह्नव है।

3.मात्सर्य– देय ज्ञान को भी योग्य पात्र के लिए नहीं देना मात्सर्य है। किसी कारण से आत्मा के द्वारा भावित, देने योग्य ज्ञान को भी योग्य पात्र के लिए नहीं देना मात्सर्य है।

4.अन्तराय–ज्ञान का व्यवच्छेद करना अन्तराय है। कलुषता के कारण ज्ञान का व्यवच्छेद करना, कलुषित भावों के वशीभूत होकर ज्ञान के साथ पुस्तक आदि का व्यवच्छेद करना, नाश करना, किसी के ज्ञान में विघ्न डालना अन्तराय है।

5. आसादना–वचन और काय से वर्जन करना आसादना है। दूसरे के द्वारा प्रकाशित ज्ञान का काय एवं वचन से वर्जन (गुण-कीर्तन, विनय आदि नहीं करना) आसादना है।

6. उपघात–प्रशस्त ज्ञान में दूषण लगाना उपघात है। स्वकीय बुद्धि और हृदय की कलुषता के कारण प्रशस्त ज्ञान भी अप्रशस्त युक्त भी अयुक्त प्रतीत होता है अतः समीचीन ज्ञान में भी दोषों का उद्भावन करना झूठा दोषारोपण करना उपघात कहलाता है, उसको उपघात जानना चाहिये।

आसादना और उपघात में एकत्व नहीं है क्योंकि आसादना में विद्यमान ज्ञान का विनय प्रकाशन-गुणकीर्तन आदि न करके अनादर किया जाता है और उपघात में ज्ञान को अज्ञान कहकर ज्ञान का ही नाश किया जाता है अन्यथा ज्ञान के नाश करने का अभिप्राय रहता है; अतः आसादना और उपघात में भेद स्पष्ट है।

'तत्' शब्द से ज्ञान-दर्शन ग्रहण किये जाते हैं। 'तत्' शब्द से ज्ञान-दर्शन के प्रति निर्देश किया गया है। अर्थात् ज्ञान और दर्शन के प्रति प्रदोष, निह्नव, मात्सर्य, अन्तराय, आसादना और उपघात, ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्म के आस्रव के कारण है।

प्रदोषादि के विषयभेद से भेद सिद्ध होने से ज्ञानावरण और दर्शनावरण के आस्रव पृथक्-पृथक् है। ज्ञानावरण और दर्शनावरण के आस्रव भिन्न-भिन्न समझने चाहिये, क्योंकि विषय-भेद से प्रदोषादि भिन्न हो जाते हैं। ज्ञान विषयक प्रदोषादि ज्ञानावरण के और दर्शन विषयक प्रदोषादि दर्शनावरण के आस्रव के कारण होते हैं। आचार्य और उपाध्याय के प्रतिकूल चलना, अकाल में अध्ययन करना, अश्रद्धा, शास्त्राभ्यास में आलस्य करना, अनादर से अर्थ का श्रवण,तीथर्रोपरोध (दिव्य ध्वनि) के काल में स्वयं व्याख्यान करने लगना, स्वकीय बहुश्रुत का गर्व करना, मिथ्योपदेश देना, बहुश्रुतवान् का अपमान वा अनादर करना, अपने पक्ष का दुराग्रह, स्वपक्ष के दुराग्रह के कारण असंबद्ध प्रलाप करना, सूत्र विरुद्ध बोलना, असिद्ध से ज्ञानाधिगम (असिद्ध से ज्ञान प्राप्ति) शास्त्र विक्रय और हिंसादि कार्य ज्ञानावरण कर्म के आस्रव के कारण हैं। दर्शन मात्सर्य, दर्शनान्तराय, आँखे फोड़ना,इन्द्रियों के विपरीत प्रवृत्ति, अपनी दृष्टि का गर्व, बहुत देर तक सोये रहना, दिन में सोना, आलस्य, नास्तिक्य, सम्यग्दृष्टियों में दूषण लगाना, कुतीर्थ प्रशंसा, जीव हिंसा और मुनिगणों के प्रति ग्लानि के भाव आदि भी दर्शनावरण कर्म के आस्रव के कारण है।

महाभारत में कहा भी है-

ये पुरा मनुजा देवि ज्ञानदर्पसमन्विताः।
श्लाघमानाश्च तत् प्राप्य ज्ञानाहङ्कारमोहिताः।।
वदन्ति ये परान् नित्यं ज्ञानाधिक्येनदर्पिताः।
ज्ञानादसूयां कुर्वन्ति न सहन्ते हि चापरान्।।
तादृशा मरण प्राप्ताः पुनर्जन्मनि शोभने।
मानुष्यं सुचिरात् प्राप्य तत्र बोधविवर्जिताः।।
भवन्ति सततं देवि यतत्रो हीनमेधसः।।

जो मनुष्य ज्ञान के घमण्ड में आकर अपनी झूठी प्रशंसा करते है और ज्ञान पाकर अहंकार से मोहित हो दूसरों पर आक्षेप करते हैं, जिन्हें सदा अपने अधिक ज्ञान का गर्व रहता है, जो ज्ञान से दूसरों के दोष प्रकट किया करते हैं, और दूसरे ज्ञानियों को नहीं सहन कर पाते हैं, शोभने! ऐसे मनुष्य मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म लेने पर चिरकाल के बाद मनुष्य योनि पाते हैं। देवि! उस जन्म में वे सदा यत्न करने पर भी बोधहीन और बुद्धि रहित होते हैं।

दर्शनमोहनीय का आस्रव

केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य। (13)

The inflow of दर्शनमोहनीय right belief deluding karmic matter is casused by अवर्णवाद defeming the Omniscint Lord अरहत् i.e. केवल the scriptures श्रुत, The saint's brother hoods संघ, the true beings take meant of wine, etc.and to offer these of sacrifices to them.

केवली श्रुत, संघ धर्म और देव इनका अवर्णवाद दर्शनमोहनीय कर्म का आस्रव है।

जिनका ज्ञान आवरण रहित है वे केवली कहलाते हैं। अतिशय बुद्धि वाले गणधर देव उनके उपदेशों का स्मरण करके जो ग्रंथों की रचना करते हैं वह श्रुत कहलाता है। रत्नत्रय से युक्त श्रमणों का समुदाय संघ कहलाता है। सर्वज्ञ-द्वारा प्रतिपादित आगम में उपदिष्ट अहिंसा ही धर्म है। चार निकाय वाले देवों का कथन

पहले कर आये हैं। गुण वाले बड़े पुरुषों में जो दोष नहीं है उनका उद्भावन करना अवर्णवाद है। इन केवली आदि के विषय में किया गया अवर्णवाद दर्शनमोहनीय के आस्रव का कारण है। यथा केवली कवलाहार से जीते है इत्यादि रूप से कथन करना केवलियों का अवर्णवाद है। शास्त्रों में माँस भक्षण आदि को निर्दोष कहा है इत्यादि रूप से कथन करना श्रुत का अवर्णवाद है। ये शूद्र हैं, अशुचि हैं, इत्यादि रूप से अपवाद करना संघ का अवर्णावाद है। जिनदेव द्वारा उपदिष्ट धर्म में कोई सार नहीं जो इसका सेवन करते हैं वे असुर होगे इस प्रकार कथन करना धर्म का अवर्णवाद है। देव सुरा और माँस आदि का सेवन करते हैं इस प्रकार का कथन देवों का अवर्णवाद है।

चारित्र मोहनीय का आस्रव

कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्र मोहस्य। (14)

The inflow of चारित्र मोहनीय Right conduct deluding karmic matter is caused by the intense thought activity prodused by the rise of the passions and of the quest passions no kasaya.

कषाय के उदय से होने वाला तीव्र आत्मपरिणाम चारित्र मोहनीय के आस्रव के कारण है।

कषायों के उदय से जो आत्मा का तीव्र परिणाम होता है वह चारित्र मोहनीय का आस्रव जानना चाहिए।

1. कषाय वेदनीय के आस्रव- स्वयं कषाय करना, दूसरों में कषाय उत्पन्न करना, तपस्वीजनों के चारित्र में दूषण लगाना, संक्लेश को पैदा करने वाले लिंग (वेष) और व्रत को धारण करना, धर्म का विध्वंस करना, किसी को शीलगुण, देशसंयम और सकलसंयम से च्युत करना, मद्य-माँस आदि से विरक्त जीवों को उनसे बिचकाना धार्मिक कार्यों में अन्तराय करना, आदि क्रियाएँ एवं भाव, कषाय वेदनीय के आस्रव के कारण हैं।

2. हास्य वेदनीय के आस्रव - सत्य धर्म का उपहास करना, दीन मनुष्य का उपहास करना, कुत्सित राग को बढ़ाने वाला हँसी-मजाक करना, बहुत बकने और हँसने की आदत रखना आदि हास्य वेदनीय के आस्रव हैं।

रति. वेदनीय के आस्रव - नाना प्रकार की क्रीड़ाओं में लगे रहना, व्रत और शील के पालन में रूचि न रखना, आदि रति वेदनीय के आस्रव हैं।

4. **अरति वेदनीय के आस्रव**- दूसरों में अरति उत्पन्न हो और रति का विनाश हो ऐसी प्रवृत्ति करना और पापी लोगों की संगति करना आदि अरति वेदनीय के आस्रव हैं।

5. **शोक वेदनीय के आस्रव** - स्वयं शोकातुर होना, दूसरों के शोक को बढ़ाना तथा ऐसे मनुष्यों का अभिनन्दन करना शोक वेदनीय के आस्रव हैं।

6. **भय वेदनीय के आस्रव** - भयरूप परिणाम और दूसरों को भय पैदा करना आदि भय वेदनीय के कारण हैं।

7. **जगुप्सा वेदनीय के आस्रव**- सुखकर क्रिया और सुखकर आचार से घृणा करना और अपवाद करने में रूचि रखना आदि जगुप्सा वेदनीय के आस्रव हैं।

8. **स्त्री वेदनीय के आस्रव** - असत्य बोलने को आदत, अतिसन्धानपरता (दूसरों के भेद खोलना), दूसरों के छिद्र ढूँढना और बढ़ा हुआ राग आदि हैं।

येऽत्रमायाविनो मर्त्या अतृप्ताःकामसेवने।
विकारकारिणोऽङ्गदौ योषिद्वेषादिधारिणः।। (96) (श्री वीर वर्धमान चरिते)

मिथ्यादृशश्च रागान्धा निःशीला मूढ़ चेतसः।
नार्यो भवन्ति ते लोके मृत्वा स्त्रीवेदपाकतः।।

जो मनुष्य यहाँ पर मायावी होते हैं, काम सेवन करने पर भी जिनकी तृप्ति नहीं होती शरीरादि में विकारी कार्य करते हैं, स्त्री आदि के वेष को धारण करते हैं, मिथ्यादृष्टि है रागान्ध है, शील रहित हैं और मूढ़ चित्त है, ऐसे मनुष्य मरकर स्त्री वेद के परिपाक से इस लोक में स्त्री होते हैं। अधिक श्रृंगार प्रिय होना (फैशन करना) स्व-पर श्रृंगार में रूचि रखना आदि कार्य सभी स्त्री वेदनीय के आस्रव हैं।

9. **पुरुष वेदनीय के आस्रव**- क्रोध का अल्प होना, ईर्ष्या नहीं करना, अपनी स्त्री में संतोष करना आदि पुरुष वेदनीय के आस्रव हैं।

शुद्धाचरणशीला या मायाकौटिल्यवर्जिताः।
विचाराचतुरा दक्षा दानपूजादितत्पराः।।98।।
स्वल्पाक्षशर्मसंतोषान्विता दृग्ज्ञानभूषिताः।
नार्यः पुंवेदपाकेन जायन्तेऽत्र च मानवाः।।99।।

जो शुद्धाचरणशाली है, माया-कुटिलता से रहित हैं, हेय-उपादेय के विचार में चतुर हैं, दक्ष है, दान-पूजादि में तत्पर हैं, अल्प इन्द्रिय सुख से जिनका चित्त संतोष युक्त है, और सम्यग्दर्शन ज्ञान से विभूषित हैं, ऐसी स्त्रियाँ पुरुष वेद के परिपाक से यहाँ पर मनुष्य होती हैं।

10. **नपुसंक वेदनीय` आस्रव** - प्रचुर मात्रा में कषय करना, गुप्त इन्द्रियों का विनाश करना और परस्त्री से बलात्कार करना आदि नपुसंक वेदनीय के आस्रव हैं।

अतीवकामसेवान्धाः परदारादिलम्पटाः।
अनङ्गक्रीडानासक्ता निःशीला व्रतवर्जिताः।।100।।
नीचधर्मरता नीचा नीचमार्गप्रवर्तिनः।
ये तो नपुसंकाः स्युश्च क्लीबवेदवशाज्जडाः।।10।।

जो पुरुष काम -सेवन में अत्यन्त अंध (आसक्त) होते हैं, पर स्त्री, पुत्री आदि में लम्पट हैं, हस्त मैथुनादि अनंगक्रीड़ा में आसक्त रहते हैं, शील-रहित है, व्रत रहित है, नीच धर्म में संलग्न है, नीच है, और नीच मार्ग के प्रवर्तक है, ऐसे जड़-जीव नपुसंक वेद के वश में नपुसंक होते हैं।

अन्तराय कर्म का आस्रव

विघ्नकरणमन्तरायस्य।(27)

The follow of obstructive अन्तराय Karma is caused by distubing others in दान Charity लाभ gain, भोग enjoyment of consumable things: and वीर्य Making use of their powers.

दानादिक में विघ्न डालना अन्तराय कर्म का आस्रव है।

दानादि का विघात करना विघ्न कहलाता है। दानादि अर्थात् दान, लाभ, भोग,

उपभोग और वीर्य। किसी के दान लाभादि में विघ्न उपस्थित करना विघ्न कहलाता है। ज्ञान का प्रतिच्छेद सत्कारोपघात (किसी के सत्कार में विघ्न डालना) दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, स्नान, अनुलेपन , गन्ध, माल्य, आच्छादन, विभूषण, शयन, आसन, भक्ष्य, भोज्य, पेय लेह्य और परिभोग आदि में विघ्न करना, किसी के विभव, समृद्धि में विस्मय करना, द्रव्य का त्याग नहीं करना, द्रव्य के उपयोग के समर्थन में प्रमाद करना, देवता के लिए निवेदित किये गये या अनिवेदित किये गये द्रव्य का ग्रहण करना, देवता का अवर्णवाद करना, निर्दोष उपकरणों का त्याग, दूसरी की शक्ति का अपहरण, धर्म का व्यवच्छेद करना, कुशल चारित्र वाले तपस्वी, गुरु तथा चैत्य की पूजा में व्याघात करना, दीक्षित, कृपण, दीन, अनाथ आदि को दिये जाने वाले वस्त्र, पात्र, आश्रय, आदि में विघ्न करना, परनिरोध, बन्धन, गुह्य अंगच्छेदन, कान, नाक, ओंठ आदि का काट देना, प्राणिवध आदि अन्तराय कर्म के आस्रव के कारण हैं।

तपस्विगुरुचैत्यानां पूजालोपप्रवर्तनम्।
अनाथदीनकृपणभिक्षादिप्रतिषेधनम्।।55।।
बधबन्धनिरोधैश्च नासिकाच्छेदकर्तनम्।
प्रमादाद्देवतादत्तनैवेद्यग्रहणं तथा ।। 56।।
निरवद्योपकरणपरित्यागो वधोऽङ्गिनाम्।
दानभोगोपभोगादिप्रत्यूहकरणं तथा।। 57।।
ज्ञानस्य प्रतिषेधश्च धर्मविघ्नप्रकृतिस्तथा।
इत्येवमन्तरायस्य भवन्त्यास्रवहेतवः।।58।। (तत्त्वार्थसार)

तपस्वी, गुरु और प्रतिमाओं की पूजा न करने की प्रवृत्ति चलाना, अनाथ, दीन तथा कृपण मनुष्यों को भिक्षा आदि देने का निषेध करना, वध-बन्धन तथा अन्य प्रकार की रुकावटों के साथ पशुओं की नासिका आदि का छेद करना, देवताओं को चढ़ाये हुए नैवेद्य का प्रमाद से ग्रहण करना, निर्दोष उपकरणों का परित्याग करना (जिन पीछी या कमण्डल आदि उपकरणों में कोई खराबी नहीं आई है उन्हें छोड़कर नये ग्रहण करना) जीवों का घात करना, दान-भोग-उपभोग आदि में विघ्न करना, ज्ञान का प्रतिषेध करना-स्वाध्याय या पठन-पाठन का निषेध करना तथा धर्मकार्यों में विघ्न करना ये सब अन्तराय-कर्म के आस्रव के हेतु हैं।

अन्तराय कर्म के भेद

दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम्। (13)

अन्तराय Obstructive Karma is of 5 kinds as it obstruts.

1. **दानान्तराय**-Charity
2. **लाभान्तराय**- gain
3. **भोगान्तराय** Enjoyment of consumable things.
4. **उपभोगान्तराय** Enjoyment of non consumable things.
5. **वीर्यान्तराय** - Exercise of one's capacities power.

(1) **दानान्तराय**-दानादि परिणाम के व्याघात का कारण होने से दानान्तराय आदि व्यपदेश होते हैं। जिसके उदय से देने की इच्छा होने पर भी दे नहीं सकता, दानान्तराय है।

(2) **लाभान्तराय**-लाभ की इच्छा होने पर भी लाभ नहीं हो पाता है, वह लाभान्तराय है।

(3) **भोगान्तराय**-जिसके उदय से भोगने की इच्छा होने पर भी भोग नहीं कर सकता वह भोगान्तराय कर्म है।

(4) **उपभोगान्तराय**-उपभोग की इच्छा होने पर भी जिसके उदय से वस्तु का उपभोग कर नहीं सकता, वह उपभोगान्तराय है।

(5) **वीर्यांतराय**-कार्य करने का उत्साह होते हुए भी जिसके उदय से निरुत्साहित हो जाता है, वह वीर्यातराय कर्म है।

ये दानान्तराय आदि पाँच अन्तराय कर्म के भेद हैं।

प्रश्न-भोग और उपभोग दोनों ही सुखानुभव में निमित्त है अतः इन दोनों में अविशेषता होने से अभेदत्व (भेद नहीं) है ?

उत्तर-यद्यपि भोग और उपभोग दोनों सुखानुभव में निमित्त है तथापि एक बार भोगने में आने वाली गंध, माला, स्नान अन्न-पानादि वस्तुओं में भोग व्यपदेश(संज्ञा) होता है (भोग है, ऐसा व्यवहार होता है) और शय्या,आसन, स्त्री, हाथी, घोड़ा, रथ आदि बार-बार भोगने में आने वाली वस्तुओं से उपभोग-व्यपदेश होता है। इस प्रकार

आदि कर्मों की उत्तर प्रकृतियों की संख्या कही है। फलविशेष की अपेक्षा ज्ञानावरण और नामकर्म की उत्तर प्रकृतियाँ असंख्यात भी होती हैं।

स्थितिबंध का वर्णन

आदितस्तिसृणामन्तरायस्यचत्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परास्थितिः। (14)

The maximum duration of the 3 form that first, ज्ञानावरणीय feeling karmas and of अन्तराय obstructive karmas is 30 crore x crore सागर sagaras.

आदि की तीन प्रकृतियाँ अर्थात् ज्ञानावरण, दर्शनावरण और वेदनीय तथा अन्तराय इन चार की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोटा-कोटि सागरोपम है। यह उत्कृष्ट स्थिति संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के हैं। अन्य एकेन्द्रिय आदि के ज्ञानावरण आदि का उत्कृष्ट स्थितिबंध आगम से जानना चाहिये। जैसे-एकेन्द्रिय पर्याप्त के ज्ञानावरण आदि का उत्कृष्ट स्थिति बंध 3/7 सागर (एक सागर के सात भागों में से तीन भाग) प्रमाण हैं। द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीव के उत्कृष्ट स्थिति पच्चीस सागर के सात भागों में से तीन भाग प्रमाण हैं। तीन इन्द्रिय पर्याप्तक के पचास सागर के सात भागों में से तीन भाग प्रमाण हैं। चतुरिन्द्रिय पर्याप्त के सौ सागर के सात भागों में से तीन भाग प्रमाण हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के एक हजार सागर के सात भागों में से तीन भाग प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के अन्तःकोटाकोटि सागर उत्कृष्ट स्थिति एकेन्द्रिय अपर्याप्त के पल्योपम के असंख्यात भाग कम स्वपर्याप्तक की उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण हैं। इसी प्रकार दो इन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक की उत्कृष्ट स्थिति का प्रमाण अपनी-अपनी पर्याप्तक की उत्कृष्ट स्थिति में से पल्योपम का असंख्यात भाग कम हैं।

मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति

सप्ततिर्मोहनीयस्य। (15)

The maximum duration of मोहनीय Deluding karma is 70 crore x crore sagars.

मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपम है। सागरोपमकोटीकोट्य परास्थिति इसका अनुवर्तन ऊपर के सूत्र से करना चाहिये। इस मोहनीय कर्म की भी उत्कृष्ट स्थिति का बंध संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही होता है। मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट स्थितिबंध संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के 70 कोड़ाकोड़ी,एकेन्द्रिय पर्याप्तक के एक सागर पर्याप्तक दो इन्द्रिय के पच्चीस सागर, पर्याप्तक तीन इन्द्रिय के पचास सागर, पर्याप्तक चतुरिन्द्रिय के सौ सागर और पर्याप्तक असंज्ञी पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट मोहनीय कर्म-स्थिति एक हजार सागर प्रमाण हैं। एकेन्द्रिय अपर्याप्तक के पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक सागर प्रमाण है। दो इन्द्रिय अपर्याप्तक, तीन इन्द्रिय अपर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक के पल्योपम के असंख्यातवें भाग से कम स्व-पर्याप्तक की उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति समझनी चाहिये, अर्थात् अपर्याप्तक दो इन्द्रिय के मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति पल्य के संख्यातवें भागहीन पच्चीस सागर, अपर्याप्तक तीन इन्द्रिय के पल्योपम के संख्यातवें भाग हीन पचास सागर, अपर्याप्तक चतुरिन्द्रिय के पल्योपम के संख्यातवें भाग हीन से अपर्याप्तक असंज्ञी पंचेन्द्रिय के पल्योपम के संख्यातवें भागहीन एक हजार सागर तथा अपर्याप्तक संज्ञी पंचेन्द्रिय के अन्तः कोटाकोटि सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति है।

नाम और गोत्र की उत्कृष्ट स्थिति

विंशतिर्नामगोत्रयोः। (16)

The maximum duration of नाम Nama, body making and गोत्र Gotra family determining Karmas is 20 (Crore x Crore सागर sagar for each).

नाम और गोत्र की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोटाकोटि सागरोपम है। सागरोपम कोटाकोटि स्थिति का ऊपर से अनुर्वतन करना चाहिये, क्योंकि उनका प्रकरण चल रहा है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के नाम और गोत्र की उत्कृष्ट स्थिति 20 कोड़ाकोड़ी सागर है। एकेन्द्रिय पर्याप्तक की उत्कृष्ट स्थिति एक सागर के सात भागों में से दो भाग प्रमाण है। दो इन्द्रिय पर्याप्तक की नामगोत्र की उत्कृष्ट स्थिति पच्चीस सागर के सात भागों में से दो भाग प्रमाण है। तीन इन्द्रिय पर्याप्तक की उत्कृष्ट स्थिति पचास सागर के सात भागों में से दो भाग प्रमाण है चार इन्द्रिय पर्याप्तक की सौ सागर के सात भागों में से दो भाग

प्रमाण है। संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक की उत्कृष्ट स्थिति अनतः कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण है। एकेन्द्रिय अपर्याप्तक की पल्य के असंख्यातवें भाग कम 2/7 सागर प्रमाण है। दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक के पल्योपम के संख्यातवें भाग से कम स्वपर्याप्तक की उत्कृष्ट स्थिति ही इनकी उत्कृष्ट स्थिति समझनी चाहिये।

आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः। (17)

The maximum duration of आयु Ayu karma is 33 सागर sagars.

आयु की उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागरोपम प्रमाण है। पुनः 'सागरोपम' शब्द का ग्रहण कोड़ाकोड़ी की निवृत्ति के लिये है। अर्थात् सागरोपम का प्रकरण होने पर भी सूत्र में पुनः सागरोपम का ग्रहण कोड़ाकोड़ी सागर की व्यावृत्ति(निराकरण) के लिये है। उत्कृष्ट स्थिति का अनुवर्तन करना चाहिये, अर्थात् 'परा' शब्द का ग्रहण प्रकरण से करना चाहिये। संज्ञी पर्याप्तक के आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागर प्रमाण है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के उत्कृष्ट आयु पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण है तथा शेष जीवों की उत्कृष्ट आयु कोटि पूर्व प्रमाण है।

वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति

अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य। (18)

The minimum duration of वेदनीय feeling karma is 12 मुहूर्त= 12x48 मिनट minutes.

वेदनीय की उत्कृष्ट स्थिति बारह मुहूर्त है।

सूक्ष्म साम्पराय नामक दसवें गुणस्थान में वेदनीय की जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त प्रमाण है। अर्थात् वेदनीय कर्म की जघन्य स्थितिबंध साम्पराय गुणस्थान में होता है।

नाम और गोत्र की जघन्य स्थित

नामगोत्रयोष्टौ। (19)

That of नाम Body making and Gotra गोत्र family determining is 8

मुहूर्त muhurtas.

नाम और गोत्र की जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त है।

यहाँ पर भी सूक्ष्म साम्पराय इस वाक्यविशेष का सम्बन्ध करना चाहिये। 'मुहूर्ता' और 'अपरास्थिति' इनका भी अनुवर्तन करना आवश्यक है, अतः इस सूत्र का अर्थ हुआ नाम और गोत्र की आठ मुहूर्त प्रमाण जघन्य स्थिति का बंध सूक्ष्म साम्पराय नामक दसवें गुणस्थान में होता है।

शेष पाँच कर्मों की जघन्य स्थिति

शेषाणामन्तर्मुहूर्ता। (20)

Of all the rest the minimum is one अंतर्मुहूर्त Which ranges from 1 समय and one आवली at the lowest to 48 minutes 1 समय samaya शेष पाँच कर्मों की जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त है।

भावविशुद्धि बिन बाह्य धार्मिक क्रिया से भी न होते धार्मिक

- आचार्य कनकनन्दी

(चालः-आत्मशक्ति.....क्या मिलिए.....)

भाव विशुद्धि रूप धर्म न जानते/(मानते, करते) करते केवल बाह्य धार्मिक क्रियायें।
धार्मिक क्रियायें तो भाव विशुद्धि हेतु, अन्यथा व्यर्थ/(मिथ्या) धार्मिक क्रियायें।
''वस्तुस्वभाव धर्म' होने से स्वशुद्ध आत्मद्रव्य है 'स्व-परमधर्म।
आत्मविश्वास-ज्ञान-चारित्रमय या उत्तमक्षमादि दशधा धर्म।। (1)

इस हेतु ही सच्चे देव शास्त्र-गुरु श्रद्धान होना है अनिवार्य।
सप्त तत्त्व-नव पदार्थ का भी श्रद्धान ज्ञान है अनिवार्य।।
स्व-शुद्ध आत्म का स्वरूप है, राग-द्वेष-मोह-काम-क्रोध से रहित।
समता-शान्ति-शुचिता-सहिष्णुता व उत्तमक्षमादि भाव सहित।। (2)

इस हेतु ही चाहिए ध्यान-अध्ययन-तप-त्याग व संयम।
श्रावक के लिए चाहिए इस हेतु ही दान-पूजादि धर्म-कर्म।।
अन्यथा समस्त होते हैं व्यर्थ श्रावक धर्म व श्रमण धर्म।
यथा रेत से न निकले तेल, पानी से यथा न निकले मक्खन।। (3)

भाव रहित द्रव्यलिंगधारी साधु भी, करोड़ों भवों न पाते मोक्ष।
भले बाह्य तप-त्याग-संयम भी पालते हो कठोर तम।।
सम्यग्दर्शन से होता है धर्म प्रारम्भ, यहाँ से जैन संज्ञा प्रारंभ।
चारों गति के संज्ञी पंचेन्द्रिय साकार उपयोगी हो सकते है जैन।।(4)

इससे युक्त अणुव्रत सहित होते हैं सच्चे जैन श्रावक।
इससे आगे महाव्रत सहित होते है सच्चे जैन श्रमण।।
ऐसे जीव ही पाते हैं मोक्ष आत्मविशुद्धि से परम्परा से।
ऐसा ही आत्मविशुद्धि हेतु, 'कनक' सूरी पालते हैं सभी धर्म।। (5)

सागवाडा 09.06.2018 प्रातः 08:33
(यह कविता मुनि सुविज्ञसागर जी के कारण बनी।)

सन्दर्भ :-

भावपाहुड

भावो हि पढमलिंगं, च ण दव्वलिंगं जाण परमत्थं।
भावो कारणभूदो, गुणदोसाणं जिणा विंति।।2।।

निश्चय से भाव जिनदीक्षाका प्रथम लिंग है, द्रव्यलिंग को तू परमार्थ मत जान, भाव ही गुण दोषों का कारण है ऐसा जिन देव कहते हैं।

भावविसुद्धिणिमित्तं, बाहिरगंथस्स कीरए चाओ।
बाहिरचाओ विहलो, अब्भंतरगंथजुत्तस्स।। 3।।

भावशुद्धि के कारण ही बाह्यपरिग्रह का त्याग किया जाता है। जो आभ्यंतर परिग्रह से युक्त है इसका बाह्य परिग्रह का त्याग निष्फल है।

भावरहिओ ण सिज्झइ, जइ वि तवं चरइ कोडिकोडीओ।
जम्मंतराइ बहुसो, लंबियहत्थो गलियवथो।। 4।।

भावरहित जीव यदि करोड़ों जन्मतक अनेक बार हाथ लटका कर तथा वस्त्रों का त्याग कर तपश्चरण करे तो भी सिद्ध नहीं होता।

परिणामम्मि असुद्धे, गंथे मुंचेइ बाहिरे च जई।
बाहिरगंथूच्चाओ, भावविहूणस्स किं कुणइ।। 5।।

यदि कोई यति भाव अशुद्ध रहते हुए बाह्य परिग्रह का त्याग करता है तो भावहीन यतिका वह बाह्य परिग्रहत्याग क्या कर सकता है ? कुछ नहीं।

जाणहि भावं पढमं, किं ते लिंगेण भावरहिएण।
पंथिय शिवपुरिपंथं, जिणउवइट्ठं पयत्तेण।। 6।।

हे पथिक ! तू सर्वप्रथम भावको ही जान। भावरहित वेष से तुझे क्या प्रयोजन? भाव ही जिनेन्द्रदेव के द्वारा प्रयत्नपूर्वक शिवपुरी का मार्ग बतलाया गया है।

भावरहिएण सपुरिस, अणाइकालं अणंतसंसारे।
गहिउज्झियाइं बहुसो, बाहिरणिग्गंथरूवाइं।। 7।।

हे सत्पुरुष ! भावरहित तूने अनादिकाल से इस अनंत संसार में बाह्य निर्गंथ रूप-द्रव्यलिंग अनेक बार ग्रहण किये हैं और छोड़े हैं।।

भीसणणरयगईए, तिरियगईए कुदेवमणुगईए।
पत्तोसि तिव्वदुक्खं, भावहि जिणीभावणा जीव।। 8।।

हे जीव ! तूने भयंकर नरकगति में, तिर्यंचगति में, नीच देव और नीच मनुष्यगति में तीव्र दुःख प्राप्त किये हैं, अतः तू जिनेंद्रप्रणीत भावना का चिंतवन कर।

सत्तसु णरयावासे, दारुणभीसाइं असहणीयाइं।
भुत्ताइं सुइरकालं, दुक्खइं णिरंतरं सहियाइं।। 9।।

हे जीव ! तूने सात नरकावासों में बहुत काल तक अत्यंत भयानक और न सहने योग्य दुःख निरंतर भोगे तथा सहे हैं।।

खणणुत्तालनवालणवेयणविच्छेयणाणिरोहं च।
पत्तोसि भावरहिओ, तिरियगईए चिरं कालं।।10।।

हे जीव! भावरहित तूने तिर्यंचगति में चिरकाल तक खोदा जाना, तपाया जाना, जलाया जाना, हवा किया जाना, तोड़ा जाना और रोका जाना आदि के दुःख प्राप्त किये हैं।।

आगंतुअमाणसियं, सहजं सारीरियं च चत्तारि।
दुक्खाइं मणुयज्म्मे, पत्तोसि अणंतयं कालं।। 11।।

हे जीव! तूने मनुष्यगति में आगंतुक, मानसिक, साहजिक और शारीरिक ये चार प्रकार के दुःख अनंतकाल तक प्राप्त किये हैं।

सुरणिलयेसु सुरच्छरविओयकाले य माणसं णिच्चं।
संपत्तोसि महाजस, दुक्खं सुहभावणारहिओ।। 12।।

हे महायश के धारक ! तूने शुभ भावना से रहित होकर स्वर्ग लोक में देव में देवियों का वियोग होने पर तीव्र मानसिक दुःख प्राप्त किया है।

कंदप्पमाइयाओ, पंचवि असुहादिभावणाई य।
भाऊण दव्वलिंगी, पहीणदेवो दिवे जाओ।।13।।

हे जीव! तू द्रव्यलिंगी होकर 'कांदर्दी' आदि पाँच अशुभ भावनाओं का चिंतवन का स्वर्ग में नीच देव हुआ।

पासत्थभावणाओ, अणाइकालं अणेयवाराओ।
भाऊण दुहं पत्तो, कुभावणाभावबीएहिं।।14।।

हे जीव ! तूने अनादि काल से अनेक बार पार्श्वस्थ कुशील, संसक्त, अवसन्न और मृगचारी आदि भावनाओं का चिंतवन कर खोटी भावनाओं के भावरूप बीजों से दुःख प्राप्त किये हैं।।

देवाण गुण विहूई, इड्ढी माहप्प बहुविहं दट्ठुं।
होऊण हीणदेवो, पत्तो बहुमाणसं दुक्खं।।15।।

हे जीव! तूने नीच देव होकर अन्य देवों के गुण विभूति ऋद्धि तथा बहुत प्रकार का माहात्म्य देखकर बहुत भारी मानसिक दुःख प्राप्त किया है।

चउविह विकहासत्तो, मयमत्तो असुहभावपयडत्थो।
होऊण कुदेवत्तं, पत्तोसि अणेयवाराओ।।16।।

हे जीव! तू चार प्रकार की विकथाओं में आसक्त होकर,आठ मदों से मत्त होकर और अशुभ भावों से स्पष्ट प्रयोजन धारण कर अनेक बार कुदेव पर्याय-भवनत्रिक में उत्पन्न हुआ है।

अप्पा अप्पम्मि रओ, सम्माइट्ठी हवेइ फुडु जीवो।
जाणइ तं सण्णाणं चरदिह चारित्तमग्गुत्ति।। 31।।

आत्मा आत्मा में लीन होता है यह सम्यग्दर्शन है, जीव उस आत्मा को जानता है यह सम्यग्ज्ञान है तथा उसी आत्मा में चरण रखता है यह चरित्र है।

अण्णे कुमरणमरणं, अणेयजम्मंतराईं मरिओसि।
भावहि सुमरणमरणं, जरमरणविणासणं जीव।। 32।।

हे जीव! तू अन्य अनेक जन्मों में कुमरणमरण से मृत्यु को प्राप्त हुआ है अतः जरामरणका विनाश करने वाले सुमरण मरणका चिंतन कर।।

सो णत्थि दव्वसवणो, परमाणुपमाणमेत्तओ णिलओ।
जत्थ ण जाओ ण मओ, तियलोयपमाणि तियलोयपमाणिओ सव्वो।। 33।।

तीन लोक प्रमाण इस समस्त लोकाकाश में ऐसा परमाणु मात्र भी स्थान नहीं है जहाँ कि द्रव्यलिंगी मुनि न उत्पन्न हुआ हो और न मरा हो।

कालमणंतं जीवो, जम्मजरामरणपीडिओ दुक्खं।
जिणलिंगेण वि पत्तो, परंपराभावरहिएण।। 34।।

आचार्य परंपरा से उपदिष्ट भावलिंग से रहित द्रव्यलिंग द्वारा भी इस जीवने अनंतकाल तक जन्म जरा मरण से पीड़ित हो दुःख ही प्राप्त किया है।

पडिदेससमयपुग्गलआउगपरिणामणामकालट्ठं।
गहिउज्झियाइं बहुसो, अणंतभवसायरे जीवो।। 35।।

अनंत संसार सागर के बीच इस जीव ने प्रत्येक देश, प्रत्येक समय, प्रत्येक पुद्गल, प्रत्येक आयु प्रत्येक रागादि भाव, प्रत्येक नामादि कर्म तथा उत्सर्पिणी आदि काल में स्थित अनंत शरीरों को अनेक बार ग्रहण किया और छोड़ा।।

तेयाला तिण्णिसया, रज्जूणं लोयखेत्तपरिमाणं।
मुत्तूणट्ठपएसा, जत्थ ण ढुरुढल्लियो जीवो।। 36।।

343 राजूप्रमाण लोक क्षेत्र में आठ मध्यप्रदेशों को छोड़कर ऐसा कोई प्रदेश नहीं जहाँ इस जीव ने भ्रमण न किया हो।

भावसमणो य धीरो, जुबईजणवेढ्ढिओ विसुद्धमई।
णामेण सिवकुमारो, परीत्तसंसारिओ जादो।।51।।

भावलिंग का धारक धीर वीर शिवकुमार नाम का मुनि युवतिजनों से परिवृत होकर भी विशुद्धह्रदय बना रहा और इसीलिए संसारसमुद्र से पार हुआ।

अंगाइं दस य दुण्णि य, चउदसपुव्वाई सयलसुयणाणं।
पढिओ अ भव्वसेणो, ण भावसवणत्तणं पत्तो।। 52।।

भव्यसेन नामक मुनि ने बारह अंग और चौदह पूर्वरूप समस्त श्रुतज्ञान को पढ़ लिया तो भी वह भावश्रवणपने को प्राप्त नहीं हुआ।

तुसमासं घोसंतो, भावविसुद्धो महाणुभावो य।
णामेण य सिवभूई, केवलणाणी फुडं जाओ।।53।।

यह बात सर्वप्रसिद्ध है कि विशुद्ध भावों के धारक और अत्यंत प्रभाव से युक्त शिवभूति मुनि 'तुषमाष' पद को घोकते हुए याद करते हुए केवलज्ञानी हो गये।

भावेण होइ णग्गो, बाहिरलिंगेण किं च णग्गेण।
कम्मपयडीयणियरं णासइ भावेण दव्वेण।। 54।।

भाव से ही निर्गंथ रूप सार्थक होता है, केवल बाह्यलिंगरूप नग्न मुद्रा से क्या प्रयोजन है ? कर्मप्रकृतियों का समुदाय भावसहित द्रव्यलिंग से ही नष्ट होता है।

णग्गत्तणं अकज्जं भावणरहियं जिणेहिं पण्णत्तं।
इय णाऊण य णिच्चं, भाविज्जहि अप्पयं धीर।। 55।।

जिनेंद्र भगवान् भावरहित नग्नता को व्यर्थ कहा है ऐसा जानकर हे धीर! सदा आत्मा की भावना कर।

देहादिसंगरहिओ, माणकसाएहिं सयलपरिचत्तो।
अप्पा अप्पम्मि रओ, स भावलिंगी हवे साहू।। 56।।

जो शरीरादि परिग्रह से रहित है, मान-कषाय से सब प्रकार मुक्त है और जिसका आत्मा आत्मा में रत रहता है वह साधु भावलिंगी है।

ममत्तिं परिवज्जामि, निम्ममत्तिमुवट्ठिदो।
आलंबणं च मे आदा, अवसेसाइं वोसरे।। 57।।

भावलिंगी मुनि विचार करता है कि मैं निर्ममत्व भाव को प्राप्त होकर ममता बुद्धि को छोड़ता हूँ और आत्मा ही मेरा आलंबन है, इसलिए अन्य समस्त पदार्थों को छोड़ता हूँ।

आदा खु मज्झ णाणे, आदा मे संवरे जोगे।
आदा पच्चक्खाणे, आदा मे संवरे जोगे।। 58।।

निश्चय से मेरे ज्ञान में आत्मा है, दर्शन और चारित्र में आत्मा है, प्रत्याख्यान में आत्मा हैं, संवर और योग में आत्मा है।।

एगो मे सस्सदो अप्पा, णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भाँवा, सव्वे संजोगलक्खणा।। 59।।

नित्य तथा ज्ञान दर्शन लक्षणवाला एक आत्मा ही मेरा है, उसके सिवाय परद्रव्य के संयोग से होने वाले समस्त भाव बाह्य हैं-मुझसे पृथक हैं।

भावेह भावसुद्धं, अप्पा सुविसुद्धणिम्मलं चेव।
लहु चउगइ चइऊणं, जइ इच्छसि सासयं सुक्खं।। 60।।

हे भव्य जीवों! यदि तुम शीघ्र ही चतुर्गति को छोड़कर अविनाशी सुख की इच्छा करते हो तो शुद्ध भावों के द्वारा अत्यंत पवित्र और निर्मल आत्मा की भावना करो।

जो जीवो भावंतो, जीवसहावं सुझावसंजुत्तो।
जो जरमरणविणासं, कुडइ फुडं लहइ णिव्वाणं।।61।।

जो जीव अच्छे भावों से सहित होकर आत्मा के स्वभाव का चिंतन करता है वह जरामरण का विनाश करता है और निश्चय ही निर्वाण को प्राप्त होता है।

जीवो जिणपण्णत्तो, णाणसहाओ य चेयणासहिओ।
सो जीवो णायव्वो, कम्मक्खयकारणणिमित्तो।। 62।।

जीव ज्ञानस्वभाववाला तथा चेतनासहित है ऐसा जिनेन्द्र भगवान् ने कहा है। वह जीव ही कर्मक्षय का कारण जानना चाहिए

जेसिं जीवसहावो, णत्थि अभावो य सव्वहा तत्थ।

ते होंति भिण्णादेहा, सिद्धा वचिगोयरमतीदा।।63।।

जिसके मन में जीव का सद्भाव है उसका सर्वथा अभाव नहीं है। वे शरीर से भिन्न तथा वचन के गोचर पर होते हैं।

अरसमरूवमगंधं, अव्वत्तं चेयणागुणमसद्दं।

जाणमलिंगग्गहणं, जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।64

जो रसरहित, रूप रहित, गन्ध रहित, अव्यक्त, चेतनागुण से युक्त, शब्द रहित, इन्द्रियों के द्वारा अग्राह्य और आकार रहित उसे जीव जानो।।

तीर्थंकर का सन्देश महान्ः भव्य ही भावी भगवान्

- आचार्य कनकनन्दी

(चालः-क्या मिलिए...धन्य गुरुवर धन्य हो तुम...)

धन्य हे तीर्थंकर धन्य है आप अनन्तगुणगण सहित हो।
सर्वज्ञ-वीतरागी-हितोपदेशी भव्य को भावी भगवान् कहते हो।। (1)

आपने जाना है समस्त ज्ञेयों को त्रिकालवर्ती पर्याय सहित।
परम सत्य के समपूर्ण ज्ञाता अणु से लेकर विश्व सहित।।(2)

आपने जाना तथाहि कहा, 'भव्य जीव' ही बनते भगवान्।
यथा बीज सुयोग्य निमित्त पाकर बनता है विशाल द्रुम।। (3)

छोटा सा वट बीज यथा सुयोग्य निमित्त से बन जाता विशाल वृक्ष।
अन्तरंग शक्ति से भव्य (जीव) बने भगवान् प्राप्त करके बाह्य निमित्त।।(4)

भव्य जीव जब आत्मश्रद्धान से स्वयं को मानता मैं जीवद्रव्य।
अनादि कर्म बन्ध से बना हूँ संसारी, साधना से बनूँगा सिद्ध।। (5)

इससे भव्य को होता आत्मज्ञान, जो है यथार्थ से सम्यग्ज्ञान।
इससे उसे होता भेदविज्ञान मैं हूँ द्रव्य-भाव-नोकर्म से भिन्न।। (6)

दीनों से युक्त उसे होता सम्यग्चारित्र जिससे त्यागता समस्त पाप।
पंचपाप-सप्त व्यसन-अष्टमद-क्रोधमान माया लोभ प्रमाद।। (7)

ध्यान-अध्ययन व समता-शान्ति से करता जाता आत्म विशुद्धि।
लक्ष्य उसका होता बनता सिद्ध, अनन्त आध्यात्मिक गुण सहित।। (8)

ऐसा भव्य-मुमुक्षु जीव राजा महाराजा से लेकर इन्द्र सहित।
स्वयं को मानता उनसे महान् अतः राजादि बनने का न होता लक्ष्य ।।(9)

अभव्य जीव या मिथ्यादृष्टि ऐसा न करपाता है महान् लक्ष्य।
अतएव वह भव्य मुमुक्षु के भाव-व्यवहार-कथन को मानता दंभ।। (11)

स्वयं तो होता वह सम्पूर्ण दंभी तो भी अज्ञान-मोह होकर विवश।
स्वयं के दंभ व अज्ञान-मोह को नहीं जानता किन्तु स्व को मानता श्रेष्ठ(12)

सत्ता-सम्पत्ति व प्रसिद्धि-डिग्री हेतु करना है बाह्य धर्म।
दिखावा-ढोंग व रूढि परम्परा से पालता है अभव्य/(मिथ्यादृष्टि) धर्म।। (13)

अतएव दोनों के भाव-व्यवहार, होते हैं परस्पर विरोधी।
तो भी भव्य-मुमुक्षु जीव होते सत्य न होता सत्य अज्ञानी-दंभी।।(14)

ऐसा महान् सत्य का ज्ञान दिया है तीर्थंकर महान्।
अतएव आप हो परम पूज्य 'कनक' के आप हो आदर्श महान्।। (15)
सागवाडा- 1.6.2018 रात्रि 9:24
यह कविता आ. समन्तभद्र की स्तुति विद्या से प्रभावित है।

(आत्मःसम्बोधन)
विशुद्ध भाव के कारण व परिणाम

आचार्य कनकनन्दी

(चालः-आओ झूले मेरे चेतन...)

आओ धीरे-धीरे कनक/(चेतन) विशुद्ध भाव में...

विशुद्ध भाव में ...जिया समता भाव में...(ध्रुव)

इस हेतु त्यागो रागद्वेष मोह...काम क्रोध व ईर्ष्याद्रोह...
ख्याति पूजा लाभ वर्चस्व भाव...संकल्प-विकल्प-संक्लेश भाव...(1)

इससे होगी तेरी आत्म विशुद्धि...जिससे श्रद्धा-प्रज्ञा में होगी शुद्धि...
इससे होंगे भाव-व्यवहार शुद्ध...जिससे होगा तुझे आत्मानुभव...(2)

अनुभव होगा तुझे निज/(आत्म) स्वरूप...शुद्ध-बुद्ध व आनन्द कन्द...
द्रव्य भाव व नोकर्म रहित...जन्म-जरा-मृत्यु-रोग रहित...(3)

इससे दृढ़ता-स्थिरता आएगी...आशा-निराशा तेरी नशेगी...
संकीर्ण भेद-भाव तेरे नशेंगे...समता-शान्ति-तृप्ति बढ़ेगी...(4)

परपरिणति व चिन्ता नशेगी...आत्मपरिणति में स्थिरता आयेगी...
ध्यान-अध्ययन व मनन-चिन्तन...बढेंगे तेरे शोध-बोध-लेखन...(5)

धर्म प्रभावना स्वतः होगी...सरल-सहजता से प्रभावना होगी...
धन-जन=मान बिना होगी...ईर्ष्या-तृष्णा-घृणा बिना होगी...(6)

सूर्य समान स्व-पर प्रकाश होगा...सातिशयपुण्य बन्ध बढ़ता जायेगा...
पापबन्ध भी तेरे नहीं होंगे...स्वेच्छिक सेवा-दानी लाभान्वित होंगे...(7)

शुद्धता से शुद्धता की वृद्धि होगी...आध्यात्मिक शक्ति की वृद्धि होगी...
इससे परम्परा से मुक्ति मिलेगी...'कनक' को स्वपरिणति मिलेगी...(8)
सागवाड़ा - 1.6.2018 मध्याह्न 2:43

मेरी(आ. कनकनन्दी की) प्रशंसा दि. श्वे. हिन्दु साधु-साध्वी व गृहस्थ कर रहे है, उस प्रशंसा से मैं विचलित न होकर और भी आत्म विशुद्धि करूँ, इस भावना से प्रेरित होकर यह कविता बनी।

जीव द्रव्य की आत्मकथा व आत्मव्यथा
(विश्व के सर्वश्रेष्ठ द्रव्य-तत्त्व-पदार्थ मैं जीवद्रव्य)

आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- आत्मशक्ति...क्या मिलिए...)
मैं हूँ द्रव्य श्रेष्ठ द्रव्य मेरे सम नहीं है अन्य द्रव्य।
अन्य द्रव्य तो निर्जीव-द्रव्य मैं हूँ चैतन्यमय जीव द्रव्य।।
मेरी प्रजाति में ही (है) निगोदिया अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधु।
गणधर ऋद्धिधारी साधु इन्द्र चक्रवर्ती से ले सभी जीव द्रव्य।। (1)

मुझ में ही है अनन्त चैतन्य गुण ज्ञान दर्शन सुख वीर्य श्रद्धान।
मेरे अतिरिक्त धर्म-अधर्म-आकाश-काल-पुद्गल में नहीं ये गुण।।
असंख्यात प्रदेशी धर्म-अधर्म व, अनन्त प्रदेशी आकाश द्रव्य।
असंख्यात प्रमाण काल द्रव्य व अनन्त पुद्गल से न बने एक जीव द्रव्य।।(2)

समस्त विश्व की भौतिक सम्पत्ति से भी मेरा मूल्य न कभी संभव।
देव-दानव-मानव-विद्याधर-वैज्ञानिक भी मिलकर न बना सकेंगे मेरा द्रव्य,
ये सभी मिलकर भी मुझे न नाश कर पायेंगे न तथाहि उत्पन्न।
मैं हूँ स्वयंभू-स्वतंत्र-मौलिक-अनादि अनन्त -शाश्वत-पूर्ण।। (3)

मुझे न देख पाती हैं इन्द्रियाँ तथाहि भौतिक वैज्ञानिक समस्त यंत्र।
मन-मस्तिष्क भी मुझे पुर्णतः न जान पाते हैं मैं सर्वज्ञ ज्ञान गम्य।।
आत्मश्रद्धान होता मेरा विश्वास तब ही होता मेरा सही ज्ञान।
आत्म विशुद्धि से होता मेरा अनुभव, केवल ग्रन्थों से न संभव।। (4)

इस हेतु राजा-महाराजा चक्रवर्ती भी बनते साधु करते मेरा ध्यान।
तप-त्याग व संयम द्वारा आत्मविशुद्धि से बनते भगवान्।।
भगवत् अवस्था ही मेरा श्रेष्ठ अवस्था, तथाहि द्रव्य-तत्त्व-पदार्थ।
यह ही अवस्था सच्चिदानन्द है, सत्य-शिव-सुन्दर-परमात्मा।। (5)

किन्तु अज्ञानी-मोही मुझे न जान पाते, जिससे संसार में पाते दुःख
संसार अवस्था व दुःख अवस्था मेरे श्रद्धान-ज्ञान-आचरण बिना उत्पन्न।।
मेरे श्रेष्ठ-द्रव्य-तत्त्व पदार्थ का श्रद्धान जो करते हैं वे भव्य जीव।
वे ही आत्मज्ञान व आचरण से बनते हैं श्रेष्ठ द्रव्य-तत्त्व-पदार्थ।। (6)

ये ही परम धर्म दर्शन विज्ञान व शिक्षा-संस्कृति से लेकर-श्रेष्ठ उपलब्धि।
इसे ही प्राप्त करने हेतु आत्म-श्रद्धान ज्ञान आचरण करे 'कनकनन्दी'।। (7)

सागवाड़ा 8.6.2018 रात्रि 9:13

संदर्भ-भावलिंगी मुनि विचार करता है कि मैं निर्ममत्व भावको प्राप्त होकर ममता बुद्धि को छोड़ता हूँ और आत्मा ही मेरा आलंबन है, इसलिए अन्य समस्त पदार्थों को छोड़ता हूँ।।57।।

अदा खु मज्झ णाणे, आदा मे संवरे जोगे।
आदा पच्चक्खाणे, आदा मे संवरे जोगे।। 58।। अष्टपाहुड

निश्चय से मेरे ज्ञान में आत्मा है, दर्शन और चारित्र में आत्मा है, प्रत्याख्यान में आत्मा है, संवर और योग में आत्मा है।।

एगो मे सस्सदो अप्पा, णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।।59।।

नित्य तथा ज्ञान दर्शन लक्षणवाला एक आत्मा ही मेरा है, उसके सिवाय परद्रव्य के संयोग से होने वाले समस्त भाव बाह्य हैं मुझसे पृथक् हैं।।

भावेह भावसुद्धं, अप्पा सुविसुद्धणिम्मलं चेव।
लहु चउगइ चइऊणं, जइ इच्छसि सासयं सुक्खं।।60।।

हे भव्य जीवों! यदि तुम शीघ्र ही चतुर्गति को छोड़कर अविनाशी सुख की इच्छा करते हो तो शुद्ध भावों के द्वारा अत्यंत पवित्र और निर्मल आत्मा की भावना करो।।

जो जीवो भावंतो, जीवसहावं सुझावसंजुत्तो।
जो जरमरणविणासं, कुडइ फुडं लहइ णिव्वाणं।। 61।।

जो जीव अच्छे भावों से सहित होकर आत्मा के स्वभाव का चिंतन करता है वह जरामरणका विनाश करता है और निश्चय ही निर्वाण को प्राप्त होता है।

जीवो जिणपण्णत्तो, णाणसहाओ य चेयणासहिओ।
सो जीवो णायव्वो, कम्मक्खयकारणणिमित्तो।।62।।

जीव ज्ञान स्वभाव वाला तथा चेतना सहित है ऐसा जिनेंद्र भगवान् ने कहा है। वह जीव ही कर्मक्षय का कारण जानना चाहिए।

जेसिं जीवसहावो, णत्थि अभावो य सव्वहा तत्थ।
ते होंति भिण्णदेहा, सिद्धा वचिगोयरमतीदा।।63।।

जिसके मन में जीव का सद्भाव है उसका सर्वथा अभाव नहीं है। वे शरीर से भिन्न तथा वचन के गोचर परे होते हैं।

अरसमरूवमगंधं, अव्वत्तं चेयणागुणमसद्दं।
जाणमलिंगग्गहणं, जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।64।।

जो रसरहित है, रूपरहित है, गंधरहित है, अव्यक्त है, चेतना गुण से युक्त है, शब्दरहित है, इद्रिंयों के द्वारा अग्राह्य है और आकाररहित है उसे जीव जान।

भावहि पंचपयारं, णाणं अण्णाणणासणं सिग्घं।
भावणभावियसहिओ, दिवसिवसुहभायणो होइ।।65।।

हे जीव! तू अज्ञान का नाश करनेवाला पाँच प्रकार के ज्ञान का शीघ्र ही भावना कर। क्योंकि ज्ञानभावना से सहित जीव स्वर्ग और मोक्ष के सुख का पात्र होता है।

पढिएणवि किं कीरइ, किंवा सुणिएण भावरहिएण।
भावो कारणभूदो, सायारणयारभूदाणं।। 66।।

भावरहित पढ़ने अथवा भावरहित सुनने से क्या होता है ? यथार्थ में भाव ही गृहस्थपने और मुनिपने का कारण है।।

दव्वेण सयलणग्गा, सारयतिरिया व सयलसधाया।
परिणामेण असुद्धा, ण भावसवणत्तणं पत्ता।।67।।

द्रव्य सभी रूप से नग्न रहते हैं। नारकी और तिर्यचों की समुदाय भी नग्न रहता है, परंतु परिणामों से अशुद्ध रहने के कारण भाव मुनिपने को प्राप्त नहीं होते।

णग्गो पावइ दुक्खं, णग्गो संसारसायरे भमई।
णग्गो ण लहइ बोहिं, जिणभावणवज्जियं सुइ सुइरं।।68।।

जो नग्न जिनभावना की भावना से रहित है वह दीर्घकाल तक दुःख पाता है, संसारसागर में भ्रमण करता है और रत्नत्रय को नहीं प्राप्त करता है।

अयसाण भायणेण य, किंते णग्गेण पावमलिगेण।
पेसुण्णहासमच्छरमायाबहुलेण सवणेण।।69।।

हे जीव! तुझे उस नग्न मुनिपने से क्या प्रयोजन ? जो कि अपयश का पात्र है, पाप से मलिन है, पैशुन्य, हास्य, मात्सर्य और माया से परिपूर्ण है।

पयडहिं जिणवरलिंगं, अब्भिंतरभावदोसपरिसुद्धो।
भावमलेण य जीवो बाहिरसंगम्मि मयलियई।।70।।

हे जीव! तू अंतरंग भाव के दोषों से शुद्ध होकर जिनमुद्रा को प्रकट कर धारण कर। क्योंकि भावदोष से दूषित जीव बाह्य परिग्रह के संग में अपने आपको मलिन कर लेता है।

धम्मम्मि णिप्पवासो, दोसावासो य इच्छुफुल्लसमो।
णिप्फलणिग्गुणयारो, णउसवणो णग्गरूवेण।।71।।
कत्ता भोइ अमुत्तो, सरीरमित्तो अणाइणिहणो य।
दंसणणाणुवओगो, णिद्दिट्ठो जिणवरिंदेहिं।।148।।

यह आत्मा कर्त्ता है, भोक्ता है, अमूर्तिक है, शरीरप्रमाण है, अनादि-निधन है और दर्शनोपयोग तथा ज्ञानोपयोगरूप है ऐसा जिनेंद्र भगवान् ने कहा है।

दंसणणाणावरणं, मोहणियं अंतराइय कम्मं।
णिट्ठवइ भवियजीवो, सम्मं जिणभावणाजुत्तो।।149।।

भलीभाँति जिनभावना से युक्त भव्य जीव दर्शनावरण, ज्ञानावरण, मोहनीय और अंतराय कर्म को नष्ट करता है।

बलसोक्खणाणदंसण, चत्तरि वि पायडा गुणा होंति।
णट्ठे घाइचउक्के, लोयालोयं पयासेदि।।150।।

घातिचतुष्क के नष्ट होने पर अनंत बल, अनंत सुख, अनंत ज्ञान और अनंत दर्शन ये चारों गुण प्रकट होते हैं तथा यह जीव लोकालोक को प्रकाशित लगता है।

णाणी सिव परमेट्ठी, सव्वण्हू विण्हू चउमुहो बुद्धो।
अप्पो विय परमप्पो, कम्मविमुक्को य होइ फुडं।।151।।

यह आत्मा कर्म से विमुक्त होने पर स्पष्ट ही परमात्मा हो जाता है और ज्ञानी, शिव, परमेष्ठी,सर्वज्ञ, विष्णु, चतुर्मुख तथा बुद्ध कहा जाने लगता है।

भावार्थ-कर्मविमुक्त आत्मा केवलज्ञान से युक्त होता है अतः ज्ञानी कहलाता है, कल्याणरूप है अतः शिव कहलाता है, परमपद में स्थित है अतः परमेष्ठी कहलाता है, समस्त पदार्थों को जानता है अतः सर्वज्ञ कहलाता है, ज्ञान के द्वारा समस्त लोक-अलोक में व्यापक है अतः विष्णु कहलाता है, चारों ओर से सबको देखता है अतः चतुर्मुख कहलाता है और ज्ञाता है अतः बुद्ध कहलाता है।

इय घाइकम्ममुक्को, अट्ठारहदोसवज्जिओ सयलो।
तिहुवणभवणपदीवो, देऊ मम उत्तमं बोहिं।।152।।

इस प्रकार घातिया कर्मों से मुक्त, अठारह दोषों से वर्जित, परमौदारिक शरीर से सहित और तीन लोकरूपी घर को प्रकाशित करने के लिए दीपकस्वरूप अरहंत परमेष्ठी मुझे उत्तम रत्नत्रय प्रदान करें।

जिणवरचरणंबुरुहं णमंति जे परमभत्तिरायेण।
ते जम्मवेलिमूलं, खणंति वरभावसत्थेण ।153।।

जो भव्य जीव उत्कृष्ट भक्ति तथा अनुराग से भी जिनेंन्द्र देव के चरणकमलों को नमस्कार करते हैं वे उत्कृष्ट भावरूपी शस्त्र के द्वारा जन्मरूपी वेलकी जड़को खोद देते हैं।

जह सलिलेण ण लिप्पइ, कमलिणिपत्तं सहावपयडीए।
तह भावेण ण लिप्पइ, कसायविसएहिं सप्पुरिसो।।154।।

जिस प्रकार कमलिनीका पत्र स्वभाव से ही जलसे लिप्त नहीं होता है उसी प्रकार सत्पुरुष सम्यग्दृष्टि जीव भाव के द्वारा कषाय और विषयों से लिप्त नहीं होता है।

तेवि य भणामिहं जे, सयलकलासीलसंजयगुणेहिं।
बहुदोसाणावासो, सुमलिणचित्तो ण सावयसमो सो।।155।।

हम उन्हीं को मुनि कहते हैं जो समस्त कला, शील और संयम आदि गुणों से युक्त हैं। जो अनेक दोषों का स्थान तथा अत्यंत मलिनचित्त है वह मुनि तो दूर रहा, श्रावक के भी समान नहीं है।

ते धीरवीरपुरिसा, खमदमखग्गेण विप्फुरंतेण।

दुज्जयपबलबलुद्धरकसायभडणिज्जिया जेहिं।। 156।।

वे पुरुष धीरे-धीरे हैं जिन्होंने चमकती हुई क्षमा और इंद्रियदमनरूपी तलवार के द्वारा कठिनता से जीतने योग्य, अतिशय बलवान् तथा बल से उत्कट कषायरूपी योद्धाओंके जीत लिया है।

धण्णा ते भयवंता, दंसणणाणग्गपवरहत्थेहिं।

विसयमयरहरपडिया भविया उत्तारिया जेहिं।।157।।

वे भगवान् धन्य हैं जिन्होंने दर्शन ज्ञानरूपी मुख्य तथा श्रेष्ठ हाथों से विषयरूपी समुद्र में पड़े हुए भव्य जीवों को पार कर दिया है।

चक्कहररामकेसवसुरवरजिणगणहराइ सोक्खइं।

चारणुमुणिरिद्धीओ, विसुद्धभावा णरा पत्ता।। 162।।

विशुद्ध भावों धारक पुरुष चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण, देवेंद्र, जिनेंन्द्र और गणधरादिके सुखों को तथा चारणमुनियों की ऋद्धियों को प्राप्त होते हैं।

सिवमजरामरलिंगमणोवममुत्तमं परमविमलमतुलं।

पत्ता वरसिद्धिसुहं, जिणभावणभाविया जीवा।।162।।

जिनेन्द्रदेव की भावना से विशोभित जीव उस उत्तम मोक्षसुख को पाते हैं जो कि आनंदरूप है, जरामरणके चिह्नों से रहित है, अनुपम है, उत्तम है, अत्यंत निर्मल है और तुलनारहित है।

ते मे तिहुवणमहिया, सिद्धा सुद्धा णिरंजणा णिच्चा।

दिंतु वरभावसुद्धिं, दंसणणाणे चरित्ते य।। 163।।

वे सिद्ध परमेष्ठी जो कि त्रिभुवन के द्वारा पूज्य, शुद्ध, निरंजन तथा नित्य हैं, मेरे दर्शन, ज्ञान और चारित्र में शुद्धता प्रदान करें।

सपरज्झवसाएणं देहेसु य अविदिदत्थमप्पाणं।

सुयदाराईविसए, मणुयाणं वड्ढए मोहो।।10।।

'स्वपराध्यवसाय के कारण अर्थात् परको आत्मा समझने के कारण यह जीव अज्ञानवश शरीरादि को आत्मा जानता है। इस विपरीत अभिनिवेशके कारण ही मनुष्यों का पुत्र तथा स्त्री आदि विषयों में मोह बढ़ता है।

मिच्छाणाणेसु रओ, मिच्छाभावेण भाविओ संतो।

मोहोदएण पुणरवि, अंगं सं मण्णए मणुओ।।11।।

यह मनुष्य मोह के उदय से मिथ्याज्ञान में रत है तथा मिथ्याभाव से वासित होता हुआ फिर भी शरीर को आत्मा माना रहा है।

जो देहे णिरवेक्खो, णिद्दंदो णिम्ममो णिरारंभो।

आदसहावे सुरओ, जोई लहइ णिव्वाणं।। 12।।

जो शरीर में निरपेक्ष है, द्वंद्वरहित है, ममतारहित है, आरंभरहित है और आत्मस्वभाव में सुरत है-संलग्न है वह योगी निर्वाण को प्राप्त होता है।

परदव्वरओ बज्झइ, विरओ मुच्चेइ विविहकम्मेहिं।

एसो जिणउवएसो, समासओ बंधमोक्खस्स।।13।।

परद्रव्यों में रत पुरुष नाना कर्मों से बंधको प्राप्त होता है और परद्रव्य से विरत पुरुष नाना कर्मों से मुक्त होता है। बंध और मोक्ष के विषय में जिनेंद्र भगवान् का यह संक्षेप से उपदेश हैं।

सद्दव्वरओ सवणो, सम्माइट्ठी हवेइ णियमेण।

सम्मत्तपरिणदो उण, खवेइ दुट्ठट्ठकम्माणि।।14।।

स्वद्रव्य में रत साधु नियम से सम्यग्दृष्टि होता है और सम्यकत्वरूप परिणत हुआ साधु दुष्ट आठ कर्मों को नष्ट करता है।

जो पुण परदव्वरओ, मिच्छादिट्ठी हवेइ णो साहू।

मिच्छत्तपरिणदो उण, बज्झदि दुट्ठट्ठकम्मेहिं।।15।।

जो साधु परद्रव्य में रत है वह मिथ्यादृष्टि होता है और मिथ्यात्वरूप परिणत हुआ साधु दुष्ट आठ कर्मों से बंधता है।

परदव्वादो दुगई, सद्दव्वादो,हु सुग्गई हवइ।

इय णाऊण सदव्वे, कुणह रई विरइ इयरम्मि।।16।।

परद्रव्य से दुर्गति और स्वद्रव्य से निश्चित ही सुगति होती है ऐसा जानकर स्वद्रव्य में रति करो और परद्रव्य में विरति करो।

आदसहावादण्णं, सच्चित्ताचित्तमिस्सियं हवदि।

तं परदव्वं भणियं, अवितत्थं सव्वदरसीहिं।।17।।

आत्मभाव से अतिरिक्त जो सचित-अचित अथवा मिश्र द्रव्य है वह सब परद्रव्य है, ऐसा यथार्थरूप से पदार्थ को जानने वाले सर्वज्ञदेव ने कहा है।

दुट्ठट्ठकम्मरहियं, अणोवमं णाणविग्गहं णिच्चं।
सुद्धं जिणेहि कहियं, अप्पाणं हवदि सद्दवं।।18।।

आठ दुष्ट कर्मों से रहित, अनुपम, ज्ञानशरीरी, नित्य और शुद्ध जो आत्मद्रव्य है उसे जिनेन्द्र भगवान् ने स्वद्रव्य कहा है।

जे झायदि सद्दव्वं, परदव्वपरम्मुहा दु सुचरित्ता।
ते जिणवराण मग्गं, अणुलग्गा लहदि णिव्वाणं।।19।।

जो स्वद्रव्य का ध्यान करते है, परद्रव्य से पराङ् मुख रहते हैं और सम्यक्चारित्र का निरतिचार पालन करते हुए जिनेंद्रदेव के मार्ग में लगे रहते हैं वे निर्वाण को प्राप्त होते हैं।

रयणत्तयमाराहं, जीवो आराहओ मुणेयव्वो।
आराहणाविहाणं, तस्स फलं केवलं णाणं।।34।।

रत्नत्रय की आराधना करने वाले जीव को आराधक मानना चाहिए, आराधना करना सो आराधना है और उसका फल केवलज्ञान है।

सिद्धो सुद्धो आदा, सव्वण्हू सव्वलोयदरसी य।
सो जिणवरेहिं भणियो, जाण तुमं केवलं णाणं।।35।।

जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहा हुआ वह आत्मा सिद्ध है, सर्वज्ञ है, सर्वलोकदर्शी है तथा केवलज्ञानरूप है, ऐसा तुम जानो।

रयणत्तयं पि जोई, आराहइ जो हु जिणवरमएण।
सो झायदि अप्पाणं परिहरदि परं ण संदेहो।।36।।

जो योगी ध्यानस्थ मुनि जिनेन्द्र देव के मतानुसार रत्नत्रय की आराधना करता है वह आत्मा का ध्यान करता है और पर पदार्थ का त्याग करता है इसमें संदेह नहीं है।

जं जाणइ तं णाणं, जं पिच्छइ तं च दंसणं णेयं।
तं चारित्तं भणियं, परिहारो पुण्णपावाणं।।37।।

जो जानता है वह ज्ञान है, जो देखता सामान्य अवलोकन करता है वह दर्शन

है, अथवा जो प्रतीति करता है वह दर्शन है सम्यग्दर्शन है और जो पुण्य-पाप का परित्याग है वह चारित्र है।

तच्चरुई सम्मत्तं, तच्चग्गहणं च हवइ सण्णाणं।
चारित्तं परिहारो, पजंपियं जिणवरिंदेहि।।38।।

तत्त्वरुचि होना सम्यग्दर्शन है, तत्त्वज्ञान होना सम्यग्ज्ञान है और पापक्रियाका परिहार-त्याग होना सम्यक्चारित्र है, ऐसा जिनेंद्रभगवान्ने कहा है

दसंणसुद्धो सुद्धो, दंसणसुद्धो लहेइ णिव्वाणं।
दंसणविहिणपुरिसो, न लहइ तं इच्छियं लाहं।।39।।

सम्यग्दर्शन से शुद्ध मनुष्य शुद्ध कहलाता है। सम्यग्दर्शन से शुद्ध मनुष्य निर्वाण को प्राप्त होता है। जो मनुष्य सम्यग्दर्शन से रहित है वह इष्ट लाभ को नहीं पाता है।

इय उवएसं सारं, जरमरणहरं खु मण्णए जं तु।
तं सम्मत्तं भणियं, समणाणं सावयाणं पि।।40।।

यह श्रेष्ठतर उपदेश स्पष्ट ही जन्म-स्मरण को हरने वाला है, इसे जो मानता है इसकी श्रद्धा करता है वह सम्यक्त्व है। यह सम्यक्त्व मुनियों के, श्रावकों के तथा चतुर्गति के जीवों के होता है।

जीवाजीवविहत्ती, जोइ जाणेइ जिणवरमएणं।
तं सण्णाणं भणियं, अवियत्थं सव्वदरिसीहिं।।41।।

जो मुनि जिनेंद्रदेव के मत से जीव और अजीव के विभाग को जानता है उसे सर्वदर्शी भगवान् ने सम्यग्ज्ञान कहा है।

जं जाणिऊण जोई, परिहारं कुणइ पुण्णपावाणं।
तं चारित्तं भणियं, अवियप्पं कम्मरहिएण।।42।।

यह सब जानकर योगी जो पुण्य और पाप दोनों का परिहार करता है उसे कर्मरहित सर्वज्ञदेवने निर्विकल्पक चारित्र कहा है।

मयमायकोहरहिओ, लोहेण विवज्जिओ य जो जीवो।
निम्मलसहावजुत्तो, सो पावइ उत्तमं सोक्खं।।54।।

जो जीव मद माया और क्रोध से रहित है, लोभ से वर्जित है तथा निर्मल स्वभाव से युक्त है वह उत्तम सुख को प्राप्त होता है।

परमट्ठेण दु आदा, देवासुरमणुवरायविभवेहिं।

वदिरित्तो सो अप्पा, सस्सदमिदि चिंतए णिच्चं।।7।।

परमार्थ से आत्मा देव, असुर और नरेन्द्रों के वैभव से भिन्न है और वह आत्मा शाश्वत है ऐसा निरंतर चिंतन करना चाहिए।

मणिमंतोसहरक्खा, हयगयरहओ य सयलविज्जाओ।

जीवाणं ण हि सरणं, तिसु लोए मरणसमयम्हि।।8।।

मरण के समय तीनों लोकों में मणि, मंत्र, औषधि, रक्षक सामग्री, हाथी, घोड़े, रथ और समस्त विद्याएँ जीवों के लिए शरण नहीं हैं अर्थात् मरणसे बचाने में समर्थ नहीं है।।8।।

जाइजरामरणरोगभयदो रक्खेदि अप्पणो अप्पा।

तम्हा आदा सरणं, बंधोदयसत्तकम्मवदिरित्तो।।11।।

जिस कारण आत्मा ही जन्म, जरा, मरण, रोग और भय से आत्मा की रक्षा करता है उस कारण बंध उदय और सत्तारूप अवस्था को प्राप्त कर्मों से पृथक रहने वाला आत्मा ही शरण है आत्मा की निष्कर्म अवस्था ही उसे जन्म जरा आदि से बचाने वाली है।

अरुहा सिद्धायरिया, अवझाया साहु पंचपरमेट्ठी।

ते वि हु चिट्ठदि आदे, तम्हा आदा हु मे सरणं।।12।।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु से पाँच परमेष्ठी हैं। चूँकि ये परमेष्ठी भी आत्मा में निवास करते हैं अर्थात् आत्मा स्वयं पंच परमेष्ठीरूप परिणमन करता है इसलिए आत्मा ही मेरा शरण है।

सम्मत्तं सण्णाणं, सच्चारित्तं च सत्तवो चेव।

चउरो चिट्ठदि आदे, तम्हा आदा हु मे सरणं।।13।।

चूँकि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक् तप ये चारों भी आत्मा स्थित हैं इसलिए आत्मा ही मेरा शरण है।

एक्को करेदि कम्मं, एक्को हिंददि य दीहसंसारे।

एक्को जायदि मरदि य, तस्स फलं भुंजदे एक्को।।14।।

जीव अकेला ही कर्म करता है, अकेला ही दीर्घ संसार में भ्रमण करता है, अकेला ही जन्म लेता है, अकेला ही मरता है और अकेला ही कर्म का फल भोगता है।

एक्को करेदि पावं, विसयणिमित्तेण तिव्वलोहेण।

णिरयतिरिएसु जीवो, तस्स फलं भुंजदे एक्को।।15।।

विषयों के निमित्त तीव्र लोभ से जीव अकेला ही पाप करता है और नरक तथा तिर्यंच गति में अकेला ही उसका फल भोगता है।

एक्को करेदि पुण्णं, धम्मणिमित्तेण पत्तदाणेण।

मणुवदेवेसु जीवो, तस्स फलं भुंजदे एक्को।।16।।

धर्म के निमित्त पात्रदान के द्वारा जीव अकेला ही पुण्य करता है और मनुष्य तथा देवों में अकेला ही उसका फल भोगता है।

ये हैं जनाब बैक्टीरिया

बैक्टीरिया एक कोशिकीय जीव है। उसका आकार एक मिली मीटर से लेकर कुछ मिली मीटर तक होता है। यह गोल या चक्राकार अथवा छड़ के आकार के हो सकता है।

बैक्टीरिया पृथ्वी में तकरीबन हर जगह पाए जाते हैं। मिट्टी में, अम्लीय जलधाराओं में, नाभिकीय पदार्थों में, पानी में, यहां तक कि कार्बनिक पदार्थों में और पौधों व जानवरों के शरीर में पाए जाते हैं। बैक्टीरिया का आकार बहुत छोटा होता है और इनके विकास की संख्या बहुत तीव्र होती है। एक ग्राम मिट्टी में 4 करोड़ तक बैक्टीरिया हो सकते हैं। जबकि एक मिलीलीटर पानी में 10 लाख से भी ज्यादा बैक्टीरिया होते हैं।

बैक्टीरिया धरती में बायोमास का एक बहुत बड़ा भाग हैं। ये कई तत्त्वों के चक्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं जैसे कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन के स्थिरीकरण में। हालांकि अभी तक बहुत सारे वंश के जीवाणुओं का श्रेणी विभाजन

संभव नहीं हुआ है। फिर भी दुनिया के करीबन आधी प्रजातियां ऐसी है जिन्हें किसी न किसी प्रयोगशाला में पैदा किया जा चुका है। मानव शरीर में जितनी भी मानव कोशिकाएं हैं, उसकी लगभग 10 गुना तो बैक्टीरिया ही है। इनमें से अधिकांश बैक्टीरिया त्वचा तथा आहार नाल में पाए जाते हैं।

हानिकारक बैक्टीरिया इम्यून तंत्र के रक्षक प्रभाव के कारण शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाते वरना तो एक दिन में ही आक्रामक बैक्टीरिया शरीर को हमारे चट कर जाएं। सारे बैक्टीरिया नुकसानदायक नहीं होते कई बैगेरिया फायदेमंद भी होते हैं। इंसान के लिए जहां बैक्टीरिया बहुत जगह फायदेमंद हैं, वहीं बहुत जगह वह उसके लिए बहुत नुकसानदायक भी हैं। दुनिया में हर साल अकेले टीबी के रोग से ही 20 लाख से ज्यादा लोग मर जाते हैं। टीबी का यह रोग खतरनाक बैक्टीरिया का ही नतीजा होता है। बैक्टीरिया सिर्फ प्रति जैविक विकसित करके इंसान के स्वास्थ्य की रक्षा के काम नहीं आते बल्कि औद्योगिक उत्पादन में भी इनका बड़ा हाथ होता है। आज की तारीख में न जाने कितने उत्पाद बैक्टीरिया की देन हैं। क्योंकि बैक्टीरिया के किण्डवन क्रिया द्वारा न सिर्फ दही से लेकर पनीर तक बल्कि तमाम औद्योगिक क्रियाएं भी इनके जरिए संभव होती हैं। बैक्टीरिया को सबसे पहले एक डच वैज्ञानिक एंटनी वॉन ल्यूवोनहक ने 1676 में सूक्ष्मदर्शी के जरिए देखा था, यह सूक्ष्मदर्शी उन्होंने खुद ही बनाया था। इसके बाद को बताया कि इन बैक्टीरिया से ही रोग फैलते हैं। लुई पास्चर ने ही 1889 में अपनी प्रयोग द्वारा ये दिखाया था कि किण्डवन की रासायनिक क्रिया सूक्ष्मजीवों द्वारा होती है। ये सूक्ष्म जीव बैक्टीरिया ही हैं। लुई पास्चर को बैक्टीरिया संबंधी अध्ययन का पितामह समझा जाता है।

आप कैसे हैं ?

जिस दिशा में आपके मुख के कोने मुड़ते हैं, उसी दिशा में आपका दिन बीतता है.

अज्ञात

पूछे प्रश्न, ''आप कैसे हैं ?'' का हमारा उत्तर, देखने में तो मामूली लगता है, पर हमें प्रतिदिन इसका उत्तर कम-से-कम 10 बार और सम्भव हो तो 50 बार देना चाहिए अतः यह छोटी-सी बात तो नहीं है, यह हमारे प्रतिदिन के वार्तालाप का महत्वपूर्ण अंश है.

जब कोई पूछता है, ''कैसे हैं आप ? आप क्या कहते हैं ? आपका जवाब कुछ शब्दों से ज्यादाह का शायद नहीं होता. फिर भी, वह छोटा-सा उत्तर आपके बारे में बहुत कुछ कह देता है, और आपकी जीवन-दृष्टि के बारे में भी. वास्तव में आपका जवाब आपकी जीवन-दृष्टि को शाब्दिक आकृति प्रदान कर सकता है.

मैंने देखा, ''कैसे हैं आप'' की प्रतिक्रिया को इन तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता हैः नकारात्मक, अति सामान्य और आशाप्रद, आइए, इन श्रेणियों का हम अध्ययन करें और उनके अन्तर्गत दर्शाए एक जैसे भावों को ढूँढ निकाले.

नैराश्यपूर्ण प्रतिक्रिया

''आप कैसे हैं ? '' के उत्तर में मिले नकारात्मक संवादों को हम इस प्रकार से विभाजित कर सकते हैं.

''ढीला-ढाला-लाउजी''

''भयंकर.''

''मैं थक गया हूँ''

''आज मेरा दिन नहीं है.''

''ईश्वर का आभार,आज शुक्रवार है.''

''एक दिन अधिक बूढा, एक डॉलर अधिक गरीब.''

''मत पूछो मुझसे.''

जब कोई व्यक्ति उत्तर में कहता है, ''मत पूछो मुझसे'' तो हम जान जाते हैं कि अब हम मुसीबत में फँसनेवाले हैं. अब वह व्यक्ति हर दिशा से, हर प्रकार की शिकायतों की उछालनेवाला है और उससे पूछने के लिए, ''आप कैसे हैं ?''वह सबसे पहले मुझे दुखी बनाने वाला है.

और मुझे उन लोगों के प्रति दया आती है, जो कहते हैं, ''भगवान् का आभार। आज शुक्रवार है।'' के दृष्टिकोण से दिन को देखते हैं जरा सोचे, वे क्या कह रहे हैं ''सोमवार, मंगलवार, बुधवार और गुरुवार सप्ताह के बुरे दिन है'' इन लोगों के लिए, काम के सप्ताह का 4/5 वाँ हिस्सा ढुलमुल-लाउजी है, पाँचवा, शुक्रवार कुछ सहनीय है. क्योंकि वे जानते हैं कि अगले दो दिन फिर आराम के आ

रहे हैं. जीवन जीने का क्या यही तरीका है? क्या आपको समझ में आ रहा है कि इस प्रकार के नैराश्यपूर्ण वाक्य हमारी जीवन-दृष्टि को कैसे विषाक्त बना देते हैं और दूसरों की भी हतोत्साहित कर देते हैं ?

अति सामान्य प्रतिक्रिया

इस क्षेत्र के लोग नैराश्यपूर्ण क्षेत्र के व्यक्तियों से एक सीढ़ी ऊपर होते हैं, फिर भी उनमें सुधार की काफी गुंजाइश रहती है. कुछ इस प्रकार की बातें वे कहते हैं :

''मैं ठीक हूँ.''

''बहुत बुरी हालत नहीं है.''

''हालात और बुरे हो सकते थे.''

''बस, वही पुरानी चाल, वहीं पुराने हाल.''

''वहाँ लटका हुआ हूँ''

''अच्छा है.''

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ अधिक समय बिताना चाहेंगे जो सोचता है कि ''जीवन बहुत बुरा नहीं है ?'' क्या यह वह व्यक्ति है, जिसके साथ आप व्यापार करना चाहेंगे ? जब हम इस प्रकार के शब्द व्यवहार में लाते हैं. हम अपनी शक्ति भी बुझाते चलते हैं. क्या हम किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना कर सकते हैं, जो तनकर कहता है, इन लोगों की बातों से लगता है मानो ये नींद में बोल रहे हो.

उनके पास भी जाना उचित नहीं है, वे व्यक्ति जो अति साधारण शब्द बोलते हैं, अति सामान्य मनोदशा के होते हैं और परिणाम भी अति सामान्य पाते हैं। और मैं ठीक से जानता हूँ कि आप ऐसे परिणाम पसन्द नहीं करेंगे!

सार्थक प्रतिक्रियाएँ

और फिर, स्वीकारात्मक दृष्टिकोण होता है. ये वे व्यक्ति होते हैं जो कहते हैं:

'आश्चर्यजनक', 'अद्‌भुत', 'महान्', 'सर्वोत्कृष्ट', 'असाधारण', 'मैं सर्वोच्च शिखर पर हूँ', 'इससे अच्छा और कुछ हो ही नहीं सकता'।

वे व्यक्ति जो इस प्रकार के रचनात्मक शब्दों का प्रयोग करते हैं, उनकी चाल में उछाल होती है और उनके सानिध्य से भी हम अधिक अच्छा अनुभव करते हैं.

सच बताना, आपको ऊपर दी हुई स्वीकारात्मक सूची को पढ़कर कैसा लगा ? आपके बारे में तो मैं नहीं जानती, पर उसे पढ़कर, मुझमें तो ऊर्जा भर गई थी और मैं अधिक ओजपूर्ण हो गया था. ये वे लोग हैं जिनसे मैं आज मिलना चाहता हूँ. यही वे व्यक्ति हैं जो आज, शायद मेरा व्यवसाय पाएँगे.

एक मुस्कान, आपके चेहरे को अधिक सुन्दर बनाने का बे-मोल साधन है। -अज्ञात्

क्यों न हम लौटे और नैराश्यपूर्ण प्रतिक्रियाओं और अति-सामान्य प्रति-सम्बोधनों की सूची को देखें. उन्हें जोर-जोर से पढ़े. वे आपको कैसा प्रतीत कराती हैं ? निश्चय ही, नितम्बों पर लात मारा हुआ।

ध्यान दें, यदि विकल्प दिया जाए तो हम आशावान और जीवनी-शक्ति से भरे लोगों के निकट रहना पसन्द करेंगे, बजाय उनके जो निराश और प्राणहीन हैं. एक पुरानी कहावत है हर कोई कमरें को प्रकाश से भर देता हैं कुछ तब, जब वे प्रवेश करते हैं और कुछ तब जब वे कमरें से बाहर जाते हैं। क्या आप ऐसा बनना चाहेंगे कि आपके आगमन से स्थान जगमगा उठे!

जहाँ तक मेरा सवाल है, जब कोई मुझसे पूछता हैं, ''कैसे हैं आप?'' मैं अक्सर उत्तर देता हूँ, ''आश्चर्यजनक रूप से अच्छा.'' यह सकारात्मक मनोभावना को सामने वाले तक पहुँचता है और जितना अधिक मैं उसे बोलता हूँ, उतना अधिक अच्छा मैं अनुभव करता हूँ.

रचनात्मक समुदाय के सदस्य बनें

हमें सभी श्रेणी की प्रमुख, सुविशेष, प्रतिक्रियाओं को देखने का अवसर मिला-नकारात्मक, अति सामान्य और आशावर्धक. इनमें के कौन-से वाक्यांशों का आप अक्सर उपयोग करते हैं ? आपके मित्र एवं परिवार के सदस्य किन का प्रयोग करते हैं ?

यदि आप स्वयं को नैराश्यपूर्ण अथवा अति-सामान्य श्रेणी में पाते हैं, तो मेरा सुझाव है,आप अपनी प्रतिक्रियाओं का पुनः मूल्यांकन करें और सकारात्मक लोगों में सम्मिलित हो जाएँ, वह इसलिए, जब आपसे पूछा गया, ''आप कैसे हैं ?'' आप

यदि कहते हैं, ''भयंकर'' या ''अधिक बुरा नहीं'' तब आपका मानस विपरीत प्रकार से प्रभावित होता है, आप अपने कन्धों और सर को मानों गिरा लेते हैं और नैराश्यपूर्ण भंगिमा बना लेते हैं.

और आपकी भावनाओं का क्या ? यह कहने के बाद, कि सब-कुछ ढीला-ढीला, लाउजी चल रहा है, क्या आप उत्साहित अनुभव करते हैं ? बिल्कुल नहीं, आप स्वयं को गड्ढे में गहरा गिरा हुआ पाते हैं, क्योंकि नैराश्यपूर्ण शब्द और विचार निराशा की भावना को पैदा करते हैं, फल-स्वरूप हमें नकारात्मक परिणम मिलने लगते हैं.

और इसे खण्डित करना आपके हाथों में है. भले ही, वास्तविक जीवन की परिस्थितियों ने आपको यह कहने को बाध्य कर दिया हो कि सब कुछ ढुल-मुल-लाउजी चल रहा है. सम्भव है, कोई व्यापारिक सौदा हाथ से निकल गया हो अथवा आपके बच्चे को कक्षा में कम-अच्छे अंक मिले हों, किन्तु आपकी निराशामय जीवन-दृष्टि परिस्थिति को सुधारने में कोई सहायता नहीं करेगी. बहुत सम्भव है, आपके तटस्थ अथवा नकारात्मक बर्ताव से मामला अधिक बिगड़ जाए और दूसरों को भी मूड उखड जाए, सिर्फ इसलिए क्योंकि वे आपके आस-पास थे और उन्होंने आपकी नैराश्यपूर्ण बातों को सुना.

एक नई आदत डालें

यदि ये सारी निराशामय परिस्थितियों आपके शब्दों में से प्रवाहित हो रही हैं, तो आप कहना जारी क्यों रखते हैं ? सम्भव है इसलिए क्योंकि आपको ज्ञात ही नहीं है कि आपके पास इस बारे में विकल्प भी है, उसके स्थान पर आप अपनी क्यों पुरानी आदत को दोहराए जा रहे हैं, जो अब आपके हित में नहीं है.

और अन्त में आपके अपने शब्द स्वयं को सन्तोष देने वाली भविष्य-वाणी बनकर प्रकट होते हैं। यदि आप कहते हैं कि सब-कुछ भयंकर है, तो आपका दिमाग उस प्रकार के लोगों और परिस्थितियों की ओर आकर्षित होगा और वह आपके कहे की सच बना देगा. दूसरी ओर, यदि आप बार-बार दोहराते हैं कि आपका जीवन अद्भुत है। तो आपका मस्तिष्क आपको सकारात्मक दिशा की ओर ले जाने लगेगा.

उदाहरण के लिए सोचें, आपको तब कैसा लगता है जब आप प्रतिक्रिया में ''अद्भुत।'' या ''भयंकर'' कहते हैं ? इन शब्दों को कहते हुए आपका शरीर-विज्ञान आपके आशामय शब्दों के साथ ताल-मेल बैठाने लगते हैं, आपको शरीर तनकर सीधा हो जाता है. अन्य लोग आपकी चेतना और जीवनी-शक्ति की ओर आकर्षित होने लगते हैं, आपका व्यापार और वैयक्तिक सम्बन्ध सुधार जाते हैं. क्या जीवन की आपकी सभी समस्याएँ जादू की छड़ी को हिलाते हुए छू हो जाएँगी? नहीं, पर आपने जीवन के एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त को क्रियाशील कर दिया हैः जीवन में जिसकी अपेक्षा करते हैं, हम उसे पा जाते हैं.

अपने स्वयं के अनुभव से मैं बता सकता हूँ कि वह जीवन की उन नन्हीं-छोटी वस्तुओं में से एक है जो बहुत बड़ा परिवर्तन लाते हैं. करीब 25 वर्ष पहले जब मुझसे किसी ने पूछा था, ''आप कैसे हैं ? मैं कुछ ऐसा उत्तर देता ''ठीक हूँ ''पर उसमें गर्माहट नहीं होती थी. क्या आप जानते हैं, मैं क्या कर रहा था ? मैं लोगों के साथ ''ठीक-ठीक'' सम्बन्ध बनाने के बारे में स्वयं को सिखा रहा था, मैं स्वयं को ''ओके, ठीक-ठाक सफलता के लिए आयोजित कर रहा था. मैं स्वयं को 'ओके' जीवन-दृष्टि और 'ओके' जीवन के लिए तैयार कर रहा था.

पर तभी, ईश्वर का आभार, मुझे ज्ञात हुआ कि मुझे 'ओके' जीवन के लिए समझौता नहीं करना है. और मैंने अपनी-जीवन-रागिनी को कुछ स्वर ऊँचा उठा दिया और कहने लगा ''भयंकर अच्छा - टरीफिक ! मैं उस बलपूर्वक कहता था. ठीक है, आरम्भ में मैं कुछ असुविधाजनक अनुभव करता, कुछ लोग मुझे अजनबियों की तरह से देखते, मानों मैं अजीब हूँ, पर, करीब एक सप्ताह बाद, वह भाव मुझमें स्वयंमेव आने लगा. और मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं कितना अच्छा अनुभव कर रहा था और लोगों को मुझसे बात करना कितना दिलचस्प लगता था. विश्वास करें, यह कोई दुर्गम रॉकेट विज्ञान नहीं है महान् जीवन-दृष्टि के लिए आपको बुद्धिमत्ता, धन अथवा सुन्दर रूप की जरूरत नहीं होती. आपको सिर्फ सबल ऊर्जा, सकारात्मक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है और आपको जीवन-दृष्टि ही सर्वस्व है.

(आत्म सम्बोधन, आत्म सुधार व आत्म दृढ़ता हेतु)

ऋद्धिधारी श्रमण से प्राप्त शिक्षाये ख्याति पूजा लाभादि हेतु आशा-आदेश नहीं दूँ

(लोभादि के कारण जो ऋद्धि का प्रयोग करते वे साधुपद से भ्रष्ट होते)

आचार्य कनकनन्दी

चाल :-(तुम दिल की धड़कन.....)

धन्य। धन्य हे। ऋद्विधारी श्रमण, आप का आदर्श मुझे लगे महान्।
आप में होती अनेक शक्तियाँ, तथापि प्रयोग न करते शक्तियाँ।। (1)

शक्ति प्रयोग से आप हो जाओगे भ्रष्ट, आप की साधना तो मोक्ष निमित्त।
ख्याति पूजालाभ व भोगोपभोग, अभिशाप, वर्चस्व से विरक्त।। (2)।।

सांसारिक कामना से आप विरक्त, चक्रवर्ती-इन्द्र पद न चाहते आप।
शत्रु-मित्र में भी हो समचित्त, आत्मविशुद्धि-आत्मोपलब्धि ही लक्ष्य।। (3)

आप की साधना से होती विद्यायें उपस्थित, आज्ञा प्रदान हेतु आपसे करती निवेदन
तथापि आप न देते आज्ञा-आदेश, केवल आत्मविशुद्धि हेतु दत्तचित्त।। (4)

जो लोभवश करते विद्याओं को आदेश, वे श्रमण हो जाते चारित्र भ्रष्ट।
वे होते भिन्नदशपूर्वी आगम वर्णित, आप होते हो अभिन्नदशपूर्वी ऋद्धियुक्त।।5।।
तथाहि ''विद्याधरऋद्धि'' सम्पन्न सन्त, तथापि विद्याओं का कार्य करते त्याग।
विद्याओं से कार्य कराने की न करते इच्छा, अज्ञान निवृत्ति हेतु उन्हें करते धारण।। (6)

''आशीर्विषऋद्धि'' धारी हो महाश्रमण, निग्रह-अनुग्रह करने में प्रवीण।
तथापि न देते किसी को भी अभिशाप, भले मारने-जीलाने की शक्ति सहित।। (7)

ऐसी ही अनेक शक्ति सहित आप, शक्तिओं के ज्ञान-भान से रहित आप।
अनन्त आत्मिक शक्ति पाना आप का लक्ष्य, जिससे मिले आप को परम मोक्ष।। (8)

मोक्ष में (से) ही मिलता अनन्त सुख, अनन्त अक्षयज्ञानदर्शन वीर्य प्रमुख।
मेरा भी अन्तिम लक्ष्य परम मोक्ष, अतएव आप सम बन रहा 'कनक'।। (9)

मैं भी ख्याति पूजा लाभ न चाहूँ, धन-जन-मान-वर्चस्वन न चाहूँ।
परनिन्दा-प्रपंच अभिशाप न करूँ, समता-सहिष्णुता-शुचिता वरूँ।। (10)।।

सरल-सहज निच्छल-निश्चल बनूँ, सन्तोष-संयम-धैर्य मैं धरुँ।
ध्यान-अध्ययन व तप त्याग करूँ, शुद्ध-बुद्ध आनन्द मैं वरूँ।। (11)।।

धर्म प्रभावना हेतु भी ये सभी न करूँ, दबाव-प्रलोभन-भय से न करूँ।
धर्म प्रभावना हेतु भी ये सभी न करूँ, दबाव-प्रलोभन-भय से न करूँ।
याचना-चन्दा-बोली-संग्रह न करूँ, पवित्र भावना से ही धर्मप्रभावना करूँ।
इस से हो रही प्रभावना विशेष, देश-विदेशों में कर रहे अनेक शिष्य
सहयोगी प्राप्त कर अनेक लाभ, इस में भी मैं रहा हूँ निर्लिप्त भाव।। (13)।

सागवाड़ा 6.6.2018 रात्रि 10.42 व प्रातः काल

10. **णमो सयं बुद्धाणं** - उन स्वयंबुद्ध जिनों को नमस्कार हो। जो वैराग्य का किंचित् कारण देखकर परोपदेश की कोई अपेक्षा न रखकर स्वयं ही जो वैराग्य को प्राप्त होते हैं वे स्वयंबुद्ध कहलाते हैं। (गौतम गणधर कृत वृ. प्रतिक्रमण)

11. **णमो पत्तेय बुद्धाणं** - उन प्रत्येक बुद्ध जिनों को नमस्कार हो जो परोपदेश के बिना किसी एक निमित्त से वैराग्य को प्राप्त हो जाते हैं। जैसे नीलाञ्जना को देखकर आदिनाथ भगवान् को।

12. **णमो बोहिय बुद्धाणं** - उन बोधितबुद्ध जिनों को नमस्कार हो जो भोगों में आसक्त महानुभाव अपने शरीर आदि में अशाश्वत रूप को देखकर परोपदेश से वैराग्य को प्राप्त होते हैं वे बोधितबुद्ध जिन हैं।

13. **णमो उजुमदीणं**- उन ऋजुमति मनःपर्यायज्ञानियों को नमस्कार हो जो सरलता से मनोगत, सरलता वे वचनगत व सरलता से कायगत अर्थ को जानने वाले हैं।

14. **णमो विउलमदीणं**-उन विपुलमति मनःपर्ययज्ञानियों को नमस्कार हो। जो ऋजु

या अनृजु मन-वचन-काय में स्थित दोनों ही प्रकारों से उनको अप्राप्त और अर्धप्राप्त वस्तु को जानने वाले विपुलमति है।

15. **णमो दसपुव्वीणं-** अभिन्न दसपूर्वीक जिनों को नमस्कार हो। ऐसा क्यों ? भिन्न और अभिन्न के भेद से दसपूर्वीक के दो भेद हैं। उनमें ग्यारह अंगों को पढ़कर पश्चात परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत और चूलिका इन पाँच अधिकारों में निबद्ध दृष्टिवाद को पढ़ते समय उत्पादपूर्व से लेकर पढ़ने वालों के दसम पूर्व विद्यानुप्रवाद के समाप्त होने पर अंगुष्ठ-प्रसेनादि सात सौ क्षुद्रविद्याओं से अनुगत रोहिणी आदि पाँच सौ महाविद्याएँ ''भगवन् क्या आज्ञा है'' ऐसा कहकर उपस्थित होती हैं। इस प्रकार उपस्थित सब विद्याओं के जो लोभ को प्राप्त होता वह भिन्न दसपूर्वी है, इनके जिनत्व नहीं रह पाता/क्योंकि इनके महाव्रत नष्ट हो जाते हैं। किन्तु जो कर्मक्षय के अभिलाषी होकर उनमें लोभ नहीं करते वे अभिन्नदसपूर्वी कहलाते हैं।

16. **णमो चउदसपूव्वीणं-** उन चौदहपूर्वधारी जिनों को नमस्कार है। जो सफल श्रुतधारक होने से चौदहपूर्वी कहलाते हैं।

यद्यपि अंग व चौदह पूर्वों में जिनवचनों की अपेक्षा समानता है तथापि चौदह पूर्व की समाप्ति करके रात्रि में कायोत्सर्ग स्थित साधु की, प्रभात समय में भवनवासी, वानव्यन्तर, ज्योतिषी और कल्पवासी देवों द्वारा महापूजा (शंख काहल आदि के शब्दों से) की जाती है। (विद्यानुवाद और लोकबिन्दुसार का महत्व है क्योंकि इनमें देवपूजा पायी जाती है)

चौदहपूर्वीधारक की विशेषता है कि ये मिथ्यात्व को प्राप्त नहीं होते और उस भव में असंयम को भी प्राप्त नहीं होते हैं।

17. **णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं-** अट्ठांगमहानिमित्तों में कुशलता को प्राप्त जिनों को नमस्कार हो।

जो अंग, स्वर, व्यंञ्जन, लक्षण,छिन्न, भौम, स्वप्न और अन्तरिक्ष इन आठ निमित्तों के द्वारा जन समुदाय के शुभाशुभ जानने वाले हैं।

18. णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं – उन विक्रियाऋद्धिधारकजिनों को नमस्कार हो जो अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व और कामरूपित्व इस प्रकार विक्रिया ऋद्धि को प्राप्त जिन हैं।

19. णमो विज्जाहराणं – उन विद्याधर जिनों को नमस्कार हो। जाति, कुल और तप विद्या के भेद से विद्याएँ तीन प्रकार की हैं। स्वकीय मातृपक्ष से प्राप्त विद्याएँ जाति विद्याएँ हैं और पितृपक्ष से प्राप्त हुए कुल विद्याएँ तथा षष्ठम और अष्टम उपवास आदि करके सिद्ध की गई तपविद्याएँ हैं। यहाँ सिद्ध हुई समस्त विद्याओं के कार्य के परित्याग से उपलक्षित जिनों को विद्याधर स्वीकार किया गया है। जो सिद्ध हुई विद्याओं से काम लेने की इच्छा नहीं करते, केवल अज्ञान निवृत्ति के लिये उन्हें धारण करते हैं, वे विद्याधर जिन है।

20. णमो चारणाणं – उन चारण ऋद्धिधारक जिनों को नमस्कार हो। जो जल-जंघा-तन्तु-फल, पुष्प,बीज, आकाश और श्रेणी के भेद से चारण ऋद्धि आठ प्रकार की हैं। जल, जंघा आदि आठ का आलम्बन लेकर गमन में कुशल ये ऋषिगण जीवों को पीड़ा न पहुँचाकर सुखपूर्वक गमन करते हैं।

21. णमो पण्णसमणाणं – उन प्रज्ञाश्रमण जिनों को नमस्कार हो। औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कर्मजा, परिणामिकी इस प्रकार प्रज्ञा चार प्रकार की है। विनय से अधीत श्रुतज्ञान आदि प्रमादवश विस्तृत हो जाय तो उसे औत्पत्तिकी प्रज्ञा परभव में उपस्थित करती है और केवलज्ञान को बुलाती है। विनय से श्रुत के बारह अंगों का अवधारण करके देवों में उत्पन्न होकर पश्चात् अवनिष्ट संस्कार के साथ मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले इस भव में पढ़ने, सुनने व पूछने आदि के व्यापार से रहित जीव की प्रज्ञा औत्पत्तिकी कहलाती है।

विनयपूर्वक बारह अंगों को पढ़ने वाले के उत्पन्न हुई प्रज्ञा वैनयिकी है।

गुरु के उपदेश बिना तपश्चरण से उत्पन्न बुद्धि कर्मजा है अथवा औषध सेवा के बल से उत्पन्न बुद्धि भी कर्मजा है और अपनी-अपनी जातिविशेष से उत्पन्न बुद्धि परिणामिका कही जाती है।

23. णमो आसीविसाणं – उन आशीर्विष जिनों को नमस्कार हो। अविद्यामान अर्थ की इच्छा का नाम आशिष है, आशिष है विष जिनका वे आर्शीर्विष कहे जाते हैं। मर जाओ इस प्रकार जिसके प्रति निकला वचन उसको मारने में निमित्त होता है, भिक्षा के लिये भ्रमण करो, शिर का छेद हो इस प्रकार जिनके वचन व्यक्ति विशेष के लिये उस-उस कार्य में निमित्त होती है वे आशीर्विष नामक साधु है। अथवा आशिष

है अविष अर्थात् जिनका वे आशीर्विष है। विष से पूरित स्थावर अथवा जंगम जीवों के प्रति ''निर्विष हो'' दस प्रकार निकला वचन जिनके लिये जिलाता है व्याधि, दारिद्रय आदि अमृत के विनाश हेतु निकला जिनका वचन उस कार्य को करता है वे आर्शीर्विष है। यहाँ सूत्र का अभिप्राय है कि तप के प्रभाव से जो इस प्रकार की शक्तियुक्त होते हुए भी जो निग्रह व अनुग्रह नहीं करते हैं वे आशीर्विष जिन हैं।

24. णमो द्विट्ठिविसाणं – दृष्टिविष जिनों को नमस्कार हो। दृष्टि शब्द से यहाँ चक्षु और मन का ग्रहण किया है। रुष्ट होकर यदि ''मारता हूँ'' इस प्रकार देखते हैं, सोचते हैं व क्रिया करते हैं, जो मारते हैं, तथा क्रोधपूर्वक अवलोकन से वह अन्य भी अशुभ कार्य को करने वाले दृष्टि विष हैं।

इसी प्रकार दृष्टि अमृतों का भी लक्षण जानना चाहिये। इन शुभ-अशुभ लब्धि से युक्त तथा हर्ष व क्रोध रहित छह प्रकार के दृष्टिविष जिनों को नमस्कार हो।

28. णमो महातवाणं– महातप ऋद्धिधारक जिनों को नमस्कार हो। महत्व के हेतुभूत तप को महान् कहते हैं, वह जिनके होता है वे महाताप ऋषि हैं। वे महातपधारक अणिमादि आठ, जलचारण आदि आठ गुणों से सहित, प्रकाशमान शरीरयुक्त, दो प्रकार अक्षीण ऋद्धिधारक, सर्वोषधिरूप समस्त इन्द्रों से अनन्तगुणा बलधारी, आशार्विष-दृष्टिविषऋद्धि धारक, तप ऋद्धि से युक्त व समस्त विद्याधरी होते हैं। मति-श्रुत, अवधि मनःपर्ययज्ञान से त्रिलोक के व्यापार को जानने वाले होते हैं। ऐसे महातप ऋद्धिधारक जिनों को नमस्कार हो।

(विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में...)

भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक...पर्यावरण सुरक्षा वाली

आचार्य कनकनन्दी

चाल :- (चन्दा मामा दूर के ...(2) शत्-शत् वन्दन.....)

भारतीय संस्कृति आत्मिक वाली...आत्मा को परमात्मा बनाने वाली।
अहिंसा-सत्य-अपरिग्रह वाली...पर्यावरण सुरक्षा करने वाली।। (स्थायी)।।
तीर्थंकर-राम-कृष्ण वाली...ऋषि-मुनि-बुद्ध-ज्ञानी वाली।
अहिंसक-दानी-सेवा वाली... वैज्ञानिक-आयुर्वेद-कवि वाली।।

''अंहिसा परमो धर्म'' बताने वाली...'' जीओ और जीने दो'' कहने वाली।
''परस्परोपग्रहो जीवानां'' वाली...दया-दान-सेवा सहित वाली।।
सत्य-समता-शान्ति वाली...चार पुरुषार्थ सहित वाली।
अन्याय-अत्याचार रहित वाली..शोषण-मिलावट रहित वाली।।
अचौर्य-ब्रह्मचर्य सहित वाली...त्याग-संतोष सहित वाली।
सादा जीवन उच्च विचार वाली...संग्रह-लोभ-रहित वाली।।
जीव को जिनेन्द्र बनाने वाली... आत्मा को परमात्मा बनाने वाली।
सत्य अन्वेषण करने वाली...शोध-बोध व प्रयोग वाली।।
''वैश्विक ''कुटुम्ब'' सहित वाली...''वैश्विक कल्याण'' भावना वाली।
इह परलोक सुख देने वाली...अभ्युदय-निःश्रेयस सुख वाली।।
जैन-वेदिक व बुद्ध वाली...वैश्विक संस्कृति की हो जननी।
चार आश्रम व्यवस्था वाली...सर्वत्याग से मुक्ति देने वाली।।
तो भी भारतीय तुझे भूल रहे हैं...स्व-संस्कृति को त्याग रहे हैं।
हिंसा-परिग्रह से लिप्त हो रहे...भोग-विलासता में मस्त हो रहे।।
स्वावलम्बन सदाचार त्याग रहे हैं...सादा जीवन उच्च विचार छोड़ रहे हैं
कृत्रिम-यांत्रिक जीवन जी रहे हैं...दिखावा आडम्बर कर रहे हैं।।
फैशन-व्यसन में मस्त हो रहे हैं...तृष्णा व आसक्ति बढ़ा रहे हैं।
प्रकृति-पर्यावरण शोषण कर रहे...विभिन्न प्रदूषण फैला रहे हैं।।
अस्त-व्यस्त-संत्रस्त हो रहे...आधि-व्याधि पीड़ित हो रहे।
स्व-कुकृत्यों का फल भोग रहे...तो भी कुकृत्य न छोड़ रहे हैं।।
भौतिकवादी पाश्चात्य जाग रहे हैं...प्रकृति संरक्षण भी कर रहे हैं।
विश्वगुरु भारत को पढ़ा रहे हैं...तो भी भारतीय न जाग रहे हैं।।
दिखावा-स्वार्थ की पढ़ाई कर रहे...रूढ़िवादी धार्मिक बन रहे हैं।
नकलची आधुनिक बन रहे.. साक्षर राक्षस भी बन रहे।।
अभी तो विकृतियाँ भारतीय त्यागो...स्व-पर-विश्वहित हेतु करो पुरुषार्थ
इह परलोक हित करो पुरुषार्थ...तुम्हें आह्वान करें 'सूरी कनक'।।
सागवाड़ा 5.6.2018 रात्रि 11.10

हम बिगाड़ रहे हैं प्रकृति का चक्र

तेजी से मैदानों में तब्दील होते वन। कभी कागज के लिए तो कभी शहरीकरण के नाम पर। हम सब जानते हुए भी अपने अस्तित्व पर ही कुल्हाड़ी चला रहे हैं।

पृथ्वी का लगभग 50 प्रतिशत भाग वनाच्छादित हैं। लेकिन जिस गति से हम उनका दोहन करने पर आमादा हैं उससे हम आने वाले 100 वर्षों में पूरी तरह से वर्षावनों को ख़त्म कर चुके होंगे। खेती के लिए वन भूमि का खाली किया जाना, निर्माण,क़ागज और लकड़ी के उत्पादों के लिए हर साल अनगिनत पेड़ों की कटाई हो रही हैं। आग और अतिचारण भी एक बड़ा कारण हैं ही। हम हर वर्ष 1 करोड़ 87 लाख एकड़ जंगल को नष्ट कर देते हैं मतलब हर एक मिनट में 27 फुटबॉल मैदान के बराबर जंगल।

अमेज़न से उत्तराखंड तक

अमेज़न वर्षावन में जिस तेजी से पेड़ों की कटाई की जा रही है उससे 15 स्तनधारी जीवों, 30 पक्षी और 10 उभयचर जीवों की प्रजातियां 2050 तक आधी गायब हो जाएंगी। वैश्विक तापमान के बढ़ने से कई आक्रामक प्रजातियों ने भी जन्म लिया जैसे अलास्का में स्प्रुस बार्क नामक कीड़ों ने 40 लाख स्प्रुस पेड़ों को चबा लिया। उत्तर भारत के जंगलों में लगी आग से उठे धुएं के कण हिमखंडों पर जाकर जम जाते हैं जिससे वे ज़्यादा तेजी से पिघल सकते हैं। इस 'काले कार्बन' से पहाड़ी नदियां भी प्रदूषित हो रही हैं। यहां तक कि आग के कारण कई जमीनी वन्य जीव खरगोश, सांप, मैंढक जैसी प्रजातियों के अंडे तक राख हो गए।

अब नहीं जागे तो कब ?

औसतन डेढ़ वन हर सेकंड आग या कटाई के कारण ख़त्म हो रहे हैं। इससे आने वाले 25 सालों में 25 हजार वन्य प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। वर्षावन कार्बनडाइऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण में संतुलन बनाए रखते हैं और आधी से ज़्यादा वन्य प्रजातियों का घर भी हैं। उनका घर छिने जाने से वे भोजन की तलाश में बसाइट वाले क्षेत्रों में आने को मजबूर हो जाते हैं। पिछले साल अप्रैल से अगस्त के बीच महज पांच महीनों में 4292 लोगों की मौत वन्यजीव हमलों में हुई

मतलब औसतन 28 लोग हर दिन। जितनी दखलअंदाजी हम कर रहे हैं उतने ही भयावह परिणामों के लिए हमें तैयार रहना होगा।

स्रोत...

Greepeace, Ministry of Health Family Welfare, WWF,Nationalgeographic.com

गौरतलब है कि...

हर रोज इस्तेमाल में आने वाले सामान के छोटे-छोटे पैकेज न ख़रीदें बल्कि बड़े पैकेट खरीदें। सब्जी आदि ख़रीदने के लिये भी कपड़े का बड़ा बैग घर से ले जाएं। इससे प्लास्टिक बैग्स कम मात्रा में उपयोग में आएंगे।

27 हजार पेड़ रोज काट दिए जाते हैं टॉयलेट पेपर बनाने के लिए।

हमारी सांसो में घुलता ज़हर

यथास्थिति बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब हम आसमान का रंग काला कर देंगे और शुद्ध हवा के लिये ऑक्सीजन सिलेंडर की कतारों में लगने पर मज़बूर होंगे।

वायू प्रदूषण कई शहरों में इस क़दर बढ़ चुका है कि आसमान में साफ़ दिखाई देता है। दरअसल हम इस प्रदूषण के इतने आदी हो चुके हैं कि जैसे हमने इसके साथ समझौता कर लिया है। प्रदूषण से प्रतिवर्ष 70 लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है। आंकड़े तो बदले जा सकते हैं लेकिन एक सत्य, जिसे बदलना असंभव है कि इन असमायिक मौतों के जिम्मेदार हम ही हैं।

भारत की स्थिति

पिछले वर्ष ही दिल्ली में सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल की स्थिति निर्मित हुई थी जब प्रदूषण का स्तर सुरक्षित मानक से 70 गुना अधिक हो गया था। फसलों के अवशेष जलाने के साथ ही दिल्ली में प्रदूषण का बड़ा कारण वाहनों से निकलने वाला धुंआ भी है। भारत में 30% प्रीमैच्योर मृत्यु वायु प्रदूषण की वजह से होती है। वहीं दिल्ली में हर तीसरा बच्चा फेफड़े के संक्रमक की जद में है।

आपके बच्चे हो रहे हैं इसका शिकार

हालिया रिपोर्ट के अनुसार, 4 करोड़ 70 लाख बच्चे प्रदूषित हवा में सांस ले रहे हैं। बच्चों की रोग प्रतिरोधक प्रणाली और फेफड़े पूरी तरह विकसित नहीं होते हैं। प्रदूषण युक्त हवा में सांस लेने का असर उनके बड़े होने पर दिखाई देता है। दिल्ली के साथ उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार और महाराष्ट्र के बच्चे अधिक प्रभावित हैं। इन राज्यों में 5 साल से कम उम्र के 1 करोड़ 29 लाख बच्चे ऐसी हवा में सांस लेने को मजबूर हैं जिसका प्रदूषण स्तर सामान्य से दोगुना है।

अब डरना क्यों जरूरी है ?

यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि 300 करोड़ जिनमें से अधिकतर महिलाएं और बच्चे हैं, रोज़ाना घरों में जलने वाले स्टोव और तेल के जहरीले धुएं में सांस ले रहे हैं। एचआईवी, मलेरिया और टीबी की संयुक्त मौतों से ज़्यादा लोगों की मृत्यु प्रदूषण के कारण होती है। 2015 में 25 लाख से ज़्यादा मौतें भारत में प्रदूषण से जुड़ी बीमारियों के कारण हुई थी जिसमें से व्यापक वायु प्रदूषण के कारण 10 लाख से ज़्यादा और घरों में ठोस ईंधन के जलाए जाने से उठने वाले धुएं के कारण करीब 9.7 लाख लोगों की मृत्यु हुई थी।

स्रोत...

Centre for scince and environment 2017, World Health Organization ,The Laneet Commission on Pollution and Health Report 2015 Greenpeace India Report.

गौरतलब है कि...

अकेले कहीं जाने के लिए कार की बजाए दुपहिया वाहन का इस्तेमाल करें। दो से अधिक लोगों के लिए कार का इस्तेमाल करें। जहां तक हो सके सार्वजनिक वाहनों की सेवाएं लें।

200 वर्षों में हम वातावरण में 230 करोड़ टन कार्बनडाइऑक्साइड छोड़ चुके हैं। इसमें से आधी पिछले 50 सालों में बढ़ी है।

ज़ोरों पर है महाप्रलय की तैयारी

तेजी से बढ़ता तापमान, मौसम का बिगड़ता चक्र, समुद्र का बढ़ता जलस्तरः

यह चेतावनी है प्रकृति की, यदि आज नहीं आगे तो कल की भोर नहीं देख पाएंगे।

किसी क्षेत्र में ओलावृष्टि का प्रकोष है तो कोई सूखे की मार झेल रहा है। बीते वर्ष राजस्थान और बिहार में बाढ़ की स्थिति निर्मित हुई थी, तो हिमाचल के कई स्थान जलसंकट से जूझ रहे हैं। वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों का स्तर दिनों-दिन बढ़ रहा है। दोषी कोई है तो वह हम। अगर हम अब भी नहीं चेते तो सजा मुकर्रर है, क्योंकि प्रकृति की अदालत में दलीलें नहीं सुनी जाती।

ग्रीन हाउस प्रभाव

धरती का ताप बढ़ने का प्रमुख कारण है-ग्रीन हाउस प्रभाव। दरअसल, सूर्य की किरणें धरती की सतह द्वारा सोख ली जाती हैं और अतिरिक्त उष्मा अंतरिक्ष की ओर परावर्तित हो जाती है। इस तरह पृथ्वी का तापमान संतुलित रहता है। लेकिन जब ग्रीन हाउस गैसें (मुख्यतः जलवाष्प, कार्बनडाइऑक्साइड और मीथेन) इस अतिरिक्त ऊर्जा को वापस नहीं जाने देती और उन्हें पुनः धरती की ओर वापस भेज देती हैं, इसे ग्रीनहाउस प्रभाव कहा जाता है। पर्यावरणविदों का मानना है कि पिछले दस हजार वर्षो में पृथ्वी के जलवायु में जितना बदलाव और तापमान में बढ़त नहीं हुई है उतनी विगत कुछ वर्षों में देखी गई है।

टूट रहा सुरक्षा कवच

समुद्र में भी मौजूद कोरल रीफ यानी मूंगा चट्टानें प्राकृतिक रूप से अवरोधक होती हैं जो ज़मीन को समुद्र के पानी से बचाती हैं। इनके बिना भारतीय प्रायद्वीप डूब सकता है। धरती का तापमान बढ़ने, समुद्र का खारापन बढ़ने और प्रदूषण के कारण मूंगा चट्टानें सफेद पड़कर नष्ट हो रही हैं। एक अनुमान के अनुसार 2050 तक संसार भर की सभी कोरल रीफ ख़त्म हो जाएंगी।

सब कुछ लील जाएगा समुद्र

पृथ्वी के ध्रुवों पर बर्फ़ तेजी से पिघल रही है। तापमान बढ़ोतरी का असर सबसे ज़्यादा ध्रुवीय जीवों पर हो रहा है। पिछले 30 वर्षों में पेंग्विन प्रजनन जोड़ों की संख्या 32 हजार से घटकर केवल 11 हजार रह गई है। कुछ तितलियों और लोमड़ियों की प्रजातियां ठंडक के लिए उत्तरी ध्रुव की ओर पलायन कर गई हैं। इस

सदी के अंत तक समुद्र का जलस्तर 7 से 23 इंच तक बढ़ जाएगा जिसकी ज़द में सभी तटीय शहर होंगे। तेजी से बर्फ़ के पिघलने के कारण ध्रुवीय भालू भी दुबले होने लगे हैं जल्द ही बर्फ़ के साथ वे भी विलुप्त हो जाएंगे।

स्रोत...

United Nations Organization (UNO) Nationalgeographic.com

गौरतलब है कि...

दफ़्तर में बार-बार चाय पीने के लिए चीनी का कप रखें। इस बार डिस्पोजेबल कप का इस्तेमाल करने के बजाए साथ लाए कप को धोकर इस्तेमाल में लें, ये अधिक साफ-सुथरे होगा।

99 प्रतिशत से ज़्यादा भाग अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड में बर्फ़ अंटार्कटिक में जमी बर्फ़ अटलांटिक महासागर के जल से भी अधिक है।

प्रकृति साल में जितना बनाती है, हम 7 माह में खत्म कर रहे हैं

प्रकृति ने इंसानों को बहुत कुछ दिया है, लेकिन मनुष्य ने प्रकृति का दोहन नहीं, शोषण शुरू कर दिया है। अब वह सालभर के प्राकृतिक संसाधन सात महीने में ही खर्च कर देता है आज विश्व पर्यावरण दिवास पर जानते हैं, यह कैसे, क्यों हो रहा है ? और उपाय क्या हैं ? इस बार विश्व पर्यावरण दिवस का मेजबान भारत है और थीम है- 'प्लास्टिक प्रदूषण को हराएं।

हम कितना ज्यादा प्रकति का दोहन कर रहे हैं ?

जल

30 साल में दो गुना से ज्यादा हो जाएगी दुनिया भर में पीने के पानी की मांग

संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक 2050 तक पानी की मांग मुकाबले 55% ज्यादा हो जाएगी। जमीन में पानी का स्तर हर साल 3.2% तक घट रहा है। जलस्रोत सुख रहे हैं। नदियों में भी अब पानी घटने लगा है। हालात यह है कि 2025 तक भारत पानी

की भीषण कमी से जूझने वाले देश में शामिल हो जाएगा। पानी अब पहले के मुकाबले चौथाई ही रह गया है।

10 लाख लीटर सालाना प्रतिव्यक्ति है भारत में पानी की उपलब्धता। 1951 में यह 30 से 40 लाख लीटर थी। यानी पिछले 67 साल में चार गुना कम हो गई है।

9.7 करोड़ लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिल पा रहा है भारत में। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक जमीन में जल स्तर तेजी से घट रहा है।

जमीन

दुनिया में सबसे ज्यादा खनन रेत का, तेल और प्राकृतिक गैस को भी पीछे छोड़ा

भारत में कीटनाशकों और खाद के ज्यादा प्रयोग से हर साल 5334 लाख टन मिट्टी खत्म हो रही है। रेत और बजरी ऐसा प्राकृतिक संसाधन हो गया है, जिसका इंसान सबसे ज्यादा इस्तेमाल कर रहा है। रेत के खनन ने तेल और प्राकृतिक गैस को भी पीछे छोड़ दिया है। वियतनाम में रेत की मांग वहां के कुल रिजर्व से ज्यादा हो गई है।

01 सेंटीमीटर मिट्टी की परत बनने में एक हजार साल लगते हैं। 150 साल में ऊपरी परत खत्म हो गई है। जिस गति से बन रही है उससे सौ गुना तेजी से हम खत्म कर रहे हैं।

16.4 उपजाऊ मिट्टी सालाना खत्म हो रही है प्रति हैक्टेयर भारत में। इसमें सुधार से 55% कृषि आबादी को रोजगार और खाद्य सुरक्षा मिल सकती हैं।

जंगल

हर एक मिनट में दुनिया में काटे जा रहे हैं, 48 फुटबाल मैदानों के बराबर जंगल

भारत में हर साल 1.3 करोड़ एकड़ वन क्षेत्र काटे या जलाए जा रहे हैं। इको सिस्टम को बनाएं रखने में पेड़ों की अहम भूमिका है। इनसे भोजन मिलता है। पानी फिल्टर होता है और ये कार्बन को सोख लेते हैं। वृक्ष सूखे और मौसम की भीषणता को रोकते हैं। फिर भी एक अनुमान के अनुसार हर मिनट दुनिया में 48 फुटबॉल

मैदान के बराबरर पेड़ काट दिए जाते हैं। 15% ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन पेड़ों की कटाई की वजह से बढ़ रहा है। दुनिया में जितने भी पक्षी मौजूद हैं, उनमें से 70% फार्म में होने वाले चिकन और अन्य पक्षी हैं। नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस की रिपोर्ट में कहा गया है कि 83% मेमल्स के लुप्त होने का कारण इंसान ही है।

0.1% ही है हम 760 करोड़ इंसान धरती के कुल बायोमास का। फिर भी धरती को सबसे नुकसान हम पहुंचा रहे हैं। धरती पर बैक्टेरिया 13% प्लांट 83% अन्य का वजन 5% है।

हवा

हर साल दुनिया में करीब 35 लाख लोग वायु प्रदूषण के कारण गंवा रहे हैं जान

कोयले से चलने वाले पावर प्लांट वायु प्रदूषण का अहम कारण हैं। कुल वायु प्रदूषण में इनकी 80% हिस्सेदारी है। भारत में वायु प्रदूषण की वजह से 2 लाख करोड़ रुपए का अतिरिक्त बोझ पड़ता है। एन्वायरमेंटल परफॉरमेंस इंडेक्स में इस साल भारत खराब एयर क्वॅालिटी के मामले में दुनिया के 180 देशों में 177 वें स्थान पर रखा है।

75% तक है शहरों में वायु प्रदूषण में वाहनों की हिस्सेदारी दिल्ली और बीजिंग खराब एयर क्वॅालिटी की वजह से सुर्खियों में रहे हैं।

10 अरब मीट्रिकी टन कार्बन वायुमंडल में हर साल इंसानों द्वारा छोड़ा जा रहा है। इस कारण आबोहवा और समुद्री जल कार्बन से भर चुका है।

इस दोहन का क्या असर हो रहा है ?

1.7 धरती चाहिए आज की जरूरत को पूरा करने के लिए। इसी गति से खपत करते रहे, तो 30 से 40 सालों में 4 धरती की जरूरत होगी। लेकिन अगर विकसित देशों की तरह बाकी देश भी आज खपत करें, तो हमें अभी ही4 धरती चाहिए।

0.8 डिग्री बढ़ गया है धरती का तापमान 1950 से अब तक।

5 करोड़ से ज्यादा पर्यावरणीय शरणार्थी होंगे 2020 तक। जब लोग जीने की

हालत में नहीं रह पाते, तभी वे अपने घरों को छोड़ दूसरी जगह जाते हैं।

1 लाख से ज्यादा व्हेल, सील, कछुए और जलीय जंतू प्लास्टिक खाने से हर साल मर जाते हैं।

3.2 अरब लोग पानी की तंगी से और 60 करोड़ लोग भोजन की तंगी से गुजरेंगे 2080 में।

15 अरब पेड़ काट दिए जाते हैं दुनिया में हर साल।

मलेरिया, फ्लू जैसी बीमारियां ग्लोबल वार्मिंग के कारण पूरे साल फैलेगी। पहाड़ों पर ठंड के बावजूद मलेरिया फैलेगा। कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक स्टीफन मोर्स के अनुसार।

पृथ्वी पर प्रकृति हमारे लिए सालभर में जितनी बनाती है, हम उससे ज्यादा का इस्तेमाल कर रहे हैं। 2017 में हमने प्रकृति द्वारा सालभर के लिए दिए गए संसाधनों को 2 अगस्त तक खत्म कर दिया था। यूके का न्यू इकोनॉमिक फाउंडेशन हर साल अर्थ ओवरशूट डे मनाता है। यह वह दिन होता है, जो बताता है कि इस साल प्रकृति ने हमें जितना दिया था, उतना हमने खत्म कर दिया है। इंसान हर साल प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल बढ़ाता जा रहा है, इसलिए हर साल यह दिन आगे बढ़ता जा रहा है। 2006 में जब अर्थ ओवरशूट डे की शुरुआत हुई थी तब यह अक्टूबर में आया था।

4 उपाय क्या हैं जो हम कर सकते हैं ?

दुनिया में प्रति व्यक्ति सालाना पेपर खपत 52 किलो हैं। भारत में सुप्रीम कोर्ट ने कागजों प्रतियों की संख्या में कमी कर दी है। इससे करीब 2,100 पेड़ और करोड़ों लीटर पानी बचेगा।

डिजिटल माध्यमों को बाढ़कर कागज के उपयोग को घटाना हमारे हाथ में है।

दूनिया की ऊर्जा जरूरतों का 80% हिस्सा पेट्रोल, डीजल से पूरा होता है। जर्मनी के सबसे बड़े शहर बर्लिन में 78% लोग आने-जाने के लिए साइकिल इस्तेमाल करते हैं।

रोजाना कुछ कुछ काम साइकिल से कर ही सकते हैं। कार-स्कूटर पूल बनाना हमारे हाथ में है।

36% पेड़ रोज बचेंगे अगर देश में रेलवे टिकट का प्रिंट न लें। रोज तीन लाख टिकट बुक होते हैं। एक पेड से ए-4 साइज की 8335 शीट बनती हैं।

दुनिया में हर सेकंड आठ टन प्लास्टिक बनता है। हर साल कम से कम 60 लाख टन प्लास्टिक कुड़ा समुद्र में पहुंच रहा है। एक प्लास्टिक की थैली औसतन सिर्फ 25 मिनट ही इस्तेमाल होती है। भारत में रोज 20 गाय पॉलिथीन खाने से मरती हैं। पॉलिथीन पर रोक तो लगाई है, लेकिन इसका पालन नहीं हो रहा है।

कपड़े के बने बैग का इस्तेमाल व पॉलिथीन की रोकना हमारे हाथ में हैं।

सरकार क्या कर सकती है ?

30% घट सकता है वायु प्रदूषण अगर सरकार ठोस कचरे को खत्म करने का पुख्ता इंतजाम करें तो।

30% वाहन कम हो सकते हैं सड़कों पर अगर सरकार दफ्तरों में छूटी का दिन अलग-अलग कर दें तो।

मांस की खपत घटाना, उपजाऊ और बंजर जमीन का वर्गीकरण। फर्टिलाइजर का सीमित उपयोग।

इथोपिया ने इन उपायों से करीब 1.7 करोड़ एकड़ जमीन को उपजाऊ बनाया है।

ऊर्जा के विकल्पों और पर्यावरण की सुरक्षा पर ध्यान देने की जरूरत। कचरे का पूरा ट्रीटमेंट जरूरी।

नार्वे का ओस्लो दुनिया का सबसे साफ शहर है। यहां कचरे से बने ईंधन से बसें चलाई जा रही है।

धरती पर 3 लाख करोड़ से ज्यादा पेड़-पौधें हैं यानी प्रति व्यक्ति 422 पेड़।

हर साल 150 करोड़ पेड काटे जा रहे हैं। लेकिन अकेले अमेरिका में ही हर साल 160 करोड़ पेड़ लगाए जाने का भी दावा है।

शुद्ध पर्यावरण की चाह लेकिन करते क्या हैं हम

वैज्ञानिक आकलन करते हैं। कोपेनहेगेन में सम्मेलन होते हैं और पर्यावरण प्रेमी विश्व पर्यावरण दिवस पर रैली निकाल कर संतुष्ट हो लेते हैं। बाजारवाद के चलते न किसी उद्योगपति की इसमें रुचि हैं और न ही राजनीतिज्ञ की। धरती के गर्भ से लगातार प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है, जिसके कारण धरती इसके दुष्परिणाम भुगत रही हैं।

तापमान में वृद्धि

ग्लेशियर पिघल रहे हैं। इसके पिघलने से धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है। ग्रीन हाऊस गैसों के प्रमुख उत्सर्जक देशों में अमेरिका सबसे आगे हैं। नवीनत आंकड़े कहते हैं कि वैश्विक कार्बन डाइ ऑक्साइड उत्सर्जन में अमेरिका तथा चीन का हिस्सा लगभग 20 प्रतिशत है। वैज्ञानिकों ने अतीत और वर्तमान के आंकड़े इकट्ठे कर कम्पयूटर में दर्ज कर जब तीस के बाद की पृथ्वी के हालात जानना चाहे तो पता चला कि धरती का तापमान पूरे एक डिग्री बढ़ चुका है। हिमाचल के ग्लेशियरों के पिघलने की गति बढ़ती जा रही है, समुद्र का जल स्तर 1.5 मिलीमीटर प्रतिवर्ष बढ़ रहा है और अमेजन के वर्षा वन तेजी से खत्म होने के लिए तैयार है बस यह तीन स्थिति ही धरती को खत्म करने के लिए काफी है। यह स्थिति क्यों बनी जरा इस पर सोचे।

रहने लायक नहीं रह जाएगी

डेढ़ वर्ष पूर्व जीइओ 4 ने चेताया कि यदि आर्थिक विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का इसी तरह दोहन होता रहा तो आने वाले 150 वर्ष में जलवायु परिवर्तन के चलते धरती का पर्यावरण किसी भी प्राणी और मानव के रहने लायक नहीं रह जाएगा।

हजारों फिट नीचे खदान से कोयला और हीरा निकाला जाता है। बोरिंग के प्रचलन के चलते जगह-जगह से धरती में छिद्र कर दिए गए है। पहले वृक्ष कटते थे अब जंगल कटते हैं। पहाड़ कटते हैं। नदियों को प्रदूषित कर दिया गया है और समुद्र के भीतर भी खुदाई का काम जारी हैं। अंतरिक्ष में भी कचरा फैला दिया गया है।

प्रकति की चेतावनी

सभी कारणों के चलते तूफानों और भूकंपों की संख्या बढ़ गई है। मौसम पूरी तरह से बदल गया है कहीं अधिक वर्षा तो कहीं सूखे की मार है। प्रकृति अपना रौद्र रूप दिखाकर बार-बार मानव को चेतावनी दे रही है, लेकिन मानव ने धरती पर हर तरह के अत्याचार जारी रखे हैं। खेतों की जगह तेजी से कालोनियां ले रही है। शहरी और ग्रामीण विकास के चलते अंधाधुंध वृक्ष काटे जा रहे हैं। चिपको आंदोलन अब कहीं नजर नहीं आता। हरित क्रांति के नाम पर शुरुआत में रासायनिक खाद और तमाम तरह के जहरीले उत्पादन बेचे गए और जब इसके नुकसान सामने आने लगे तो बाजारवादी ले आए हैं जैविक खाद का नया फंडा।

इस बार की थीम है बीट प्लास्टिक

दिन की शुरुआत से लेकर रात में बिस्तर में जाने तक अगर ध्यान से गौर किया जाए तो आप पाएंगे कि प्लास्टिक ने किसी न किसी रूप में आपके हर पल पर कब्जा कर रखा है। टूथब्रश से सुबह ब्रश करना हो या ऑफिस में दिन भर कम्प्यूटर पर काम, बाजार से कोई सामान लाना हो या टिफिन और वॉटर बॉटल में खाना और पानी लेकर चलना। प्लास्टिक हर जगह हैं, हर समय है।

प्लास्टिक से उपजे खतरे

पूरे विश्व में प्लास्टिक का उपयोग इस कदर बढ़ चुका है और हर साल पूरे विश्व में इतना प्लास्टिक फेंका जाता है कि इससे पूरी पृथ्वी के चार घेरे बन जाए। प्लास्टिक केमिकल बीपी, शरीर में विभिन्न स्रोतों से प्रवेश करता है। एक अध्ययन में पाया गया है कि 6 साल से बड़े 93 प्रतिशत अमेरिकन जनसंख्या प्लास्टिक केमिकल कुछ किस्म का प्लास्टिक साफ और कठोर होती है, जिसे बीपीए बेस्ड प्लास्टिक कहते हैं, इसका इस्तेमाल पानी की बॉटल खेल के सामान, सीडी और डीवीडी जैसी कई वस्तुओं में किया जाता है।

नहीं होता है खत्म

अरबों पांउड प्लास्टिक पृथ्वी के पानी स्त्रोतों खासकर समुद्रों में पड़ा हुआ है।

50 प्रतिशत प्लास्टिक की वस्तुए हम सिर्फ एक बार काम में लेकर फेंक देते हैं। प्लास्टिक के उत्पादन में पूरे विश्व के कुल तेल का 8 प्रतिशत तेल खर्च हो जाता है। प्लास्टिक को पूरी तरह से खत्म होने में 500 से 1,000 साल तक लगते हैं। हम जो कचरा फेंकते हैं उसमें प्लास्टिक का एक बड़ा हिस्सा होता है। क्या आप ने कभी सोचा यह कचरा जाता कहां हैं।

सबसे बड़ी चुनौती

प्लास्टिक का इस्तेमाल इतना बढ़ चुका है कि वर्तमान में प्लास्टिक के रूप में निकलने वाला कचरा विश्व पर्यावरण विद्वानों के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। विकसित देश अक्सर भारत जैसे विकासशील या अन्य विभिन्न अविकसित देशों में इस तरह का कचरा भेज देते हैं। अथवा ऐसे कचरे को जमीनी में भी दबा दिया जाता है। जमीन में दबाया कचरा पानी के स्रोतों को प्रदूषित कर हमारे जीवन के लिए बड़े खतरे के रूप में सामने आता है।

प्लास्टिक नॉन-बॉयोडिग्रेडेबल होता है। ये ऐसे पदार्थ होते हैं, जो बैक्टीरिया के द्वारा ऐसी अवस्था में नहीं पहुंच पाते जिससे पर्यावरण को कोई नुकसान न हो।

कचरे की रिसायकलिंग बेहत जरूरी है क्योंकि प्लास्टिक की एक छोटी सी पोलिथिन को भी पूरी तरह से छोटे पार्टिकल्स में तब्दील होने में हजारों सालों का समय लगता है।

प्लास्टिक खत्म नहीं होता। जैसा कि हम जानते हैं इसे खत्म होने में हजारों साल लगते हैं यह पानी के स्रोतों में मिलकर पानी प्रदूषित करता है।

प्लास्टिक बैग्स बहुत से जहरीले केमिकल्स से मिलकर बनते हैं। जिनने स्वास्थ्य और पर्यावरण को बहुत हानि पहुंचती है। प्लास्टिक बैग्स बनाने में जायलेनए इंथिलेन ऑक्साइड और बेंजेने जैसे कैमिकल्स का इस्तेमाल होता है।

इन केमिकलस से बहुत सी बीमारियां और विभिन्न प्रकार के डिसॉडर्स हो जाते हैं प्लास्टिक के केमिकल पर्यावरण के लिए भी बेहद हानिकारक होते हैं, जिससे इंसान, जानवरों, पौधों और सभी जीवित चीजों को नुकसान पहुंचाते हैं।

प्लास्टिक को जलाने और फेंकने पर जहरीले केमिकल्स का उत्सर्जन होता है।

प्रकृति का दोहन इतना ज्यादा कि 4 धरती और चाहिए

हर साल 88 अरब टन प्राकृतिक संसाधनों की खपत, होनी चाहिए 50 अरब टन

हम एक वर्ष में करीब 88 अरब टन सामग्री की दोहन या खपत कर देते हैं। आप पूछ सकते हैं, इसका क्या मतलब है ? दरअसल, हम जरूरत से ज्यादा खपत कर रहे हैं। जबकि हमें ज्यादा से ज्यादा 50 अरब टन की खपत करनी चाहिए। विकसित देश सालाना 28 अरब टन खपत कर रहे हैं। अगर दुनिया के बाकी देश भी इन्हीं की तरह खपत करने लगे, जो हमें आज ही 4 धरती और चाहिए।

प्रकृति का क्या और कितना दोहन कर रहे हैं हम ? जानिए 5 सबसे अहम चीजों के बारे में

पानी

दुनियामें जितना भी पानी हैं, इसमें से 97.5 % समुद्र में है, जो खारा है। 1.5 बर्फ के रूप में है। सिर्फ 1% ही पीने योग्य है।

2025 तक भारत की आधी और दुनिया की 1.8 अरब आबादी के पास पीने का पानी नहीं होगा।

तेल

एक अनुमान के अनुसार भारत में प्रति हजार लोग रोज 420 लीटर पेट्रोल का उपयोग कर रहे हैं। हर व्यक्ति 15 लीटर प्रति माह तेल खपत कर रहा हैं।

धरती के पास अब सिर्फ 53 साल का ऑइल रिजर्व ही बचा हुआ है।

गैस

बीपी स्टेटिस्किल रिव्यू, ऑफ वर्ल्ड एनर्जी रिपोर्ट 2016 के अनुसार फिलहाल दुनिया में तेजी से गैस भंडार का इस्तेमाल हो रहा है।

अगर यही क्रम जारी रहा, तो प्राकृतिक गैस के भंडार 52 वर्षो में खत्म हो जाएगें।

कोयला

फॉसिल फ्यूल में सबसे ज्यादा उपलब्ध भंडार कोयले के हैं। लेकिन चीन, अमेरिका और अन्य देश इसका तेजी से इस्तेमाल कर रहे हैं।

यही गति जारी रही, तो कोयले के भंडार दुनिया में 114 साल में खत्म हो जाएंगे।

जमीन

खाद्य सामग्री इंसान को मिट्टी से मिलती है। मिट्टी की उर्वरता खत्म हो रही हैं। पिछले 40 साल में कृषि योग्य 33% जमीन खत्म हो चुकी है।

पिछले 20 वर्षों में दुनिया में कृषि उत्पादकता करीब 20 प्रतिशत तक घटी है।

असर क्या ? हर साल 1.9 करोड़ लोगों की हो रही है असमय मौत

दिसंबर 2017 में बायोमाया, फॉसिल फ्यूल औँर नॉन मेटलिक मिनरल्स का धरती से खनन 88.6 अरब टन हो गया। 1970 की तुलना में यह तीन गुना ज्यादा है। इसी गति से चले, तो 2050 तक प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल दोगुने से ज्यादा हो जाएगा। रिपोर्ट में कहाँ गया है कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग से पर्यावरण में हो रहे बदलाव से हर साल 1.9 करोड़ लोगों की मौत समय से पहले हो रही है।

विश्व पर्यावरण दिवस का उद्देश्य

हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह दिन पर्यावरण के ज्वलंत मुद्दों बारे में लोगों को जागरूक करने और इस दिशा में उचित कदम उठाने साथ ही प्रकृति को सुरक्षित रखने के लक्ष्य से मनाया जाता है।

मानव जीवन में स्वस्थ्य और हरित पर्यावरण के महत्व के बारे में वैश्विक

जागरुकता को फैलाने के लिए वर्ष 1973 से हर 5 जून को एक वार्षिक कार्यक्रम के रूप में विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की गई, ताकि पर्यावरण की सुरक्षा करने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार या निजी संगठनों की ही नहीं बल्कि पूरे समाज की हो। 1972 में संयुक्त राष्ट्र में 5 से 16 जून को मानव पर्यावरण पर शुरु हुए सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र आम सभा और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के द्वारा कुछ प्रभावकारी अभियानों को चलाने और हर वर्ष मनाने के लिए पहली बार विश्व पर्यावरण दिवस की स्थापना हुई थी। कुछ प्रभावकारी कदमों को लागू करने के लिए राजनीतिक और स्वास्थ्य संगठनों का ध्यान खींचने के साथ ही पूरी दुनिया भर के देशों से करोड़ों लोगों को शामिल करने के लिए संयुक्त राष्ट्र आम सभा के द्वारा ये एक बड़े वार्षिक उत्सव की शुरुआत की गई है। पर्यावरण मुद्दें जैसे भोजन की बरबादी और नुकसान, वनों की कटाई, ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ना विश्व पर्यावरण के मुख्य मुद्दे थे। विश्वभर में अभियान में प्रभाव लाने के लिए वर्ष के खास थीम और नारे के अनुसार हर वर्ष के उत्सव की योजना बनाई जाती है।

पर्यावरण संरक्षण के अंतर्गत

बाढ़ और अपरदन से बचाने के लिए सौर जल तापक, सौर स्रोतों के माध्यम से ऊर्जा उत्पादन, नए जल निकासी तंत्र का विकास करना, जंगल प्रबंधन पर ध्यान देना, ग्रीन हाउस गैसों का प्रभाव घटाना, बिजली उत्पादन को बढ़ाने के लिए हाइड्रो शक्ति का इस्तेमाल, भूमि पर पेड़ लगाने बायों-ईंधन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए इसे मनाया जाता है।

भारतीय परम्पराओं में पर्यावरण संरक्षण का संदेश

भौतिक विकास के पीछे दौड़ रही दुनिया ने आज जरा ठहरकर सांस ली तो उन्हें अहसास हुआ कि चमक-धमक के फेर में क्या कीमत चुकाई जा रही है। आज ऐसा कोई देश नहीं हैं, जो पर्यावरण संकट पर मंथन नहीं कर रहा हो। भारत भी चिंतित है। लेकिन, जहां दूसरे देश भौतिक चकाचौंध के लिए अपना सब कुछ लुटा चुके हैं, वहीं भारत के पास आज भी बहुत कुछ बाकी है। पश्चिम के देशों ने प्रकृति को हद से ज्यादा नुकसान पहुंचाया है।

प्रकृति संरक्षण के सूत्र

पेड़ काटकर जंगल के कंक्रीट खड़े करते समय उन्हें अंदाजा नहीं था कि इसके क्या गंभीर परिणाम होंगे, प्रकृति को नुकसान पहुंचाने से रोकने के लिए पश्चिम मजबूत परम्पराएं भी नहीं थी। प्रकृति संरक्षण का कोई सरकार अखण्ड भारत भूमि को छोड़कर अन्यत्र देखने में नहीं आता है। जबकि सनातन परम्पराओं में प्रकृति संरक्षण के सूत्र मौजूद है।

प्रकृति से मानवीय रिश्ते

हिन्दु धर्म में प्रकृति पूजन को प्रकृति संरक्षण के तौर पर मान्यता है। भारत में पेड-पौधों, नदी-पर्वत, ग्रह-नक्षत्र, अग्नि-वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए हैं। पेड़ की तुलना संतान से की गई है तो नदी को मां स्वरूप माना गया है। प्राचीन काल से ही भारत में प्रकृति के साथ संतुलन करके चलने का महत्वपूर्ण संस्कार है।

परम्पराओं में वैज्ञानिक रहस्य

हिन्दू परंपराओं ने कहीं न कहीं प्रकृति का संरक्षण किया है। हिन्दू धर्म का प्रकृति के साथ कितना गहरा रिश्ता है, इसे इस बात से समझा जा सकता है कि दुनिया के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि की स्तुति में रचा गया है। प्रत्येक हिन्दू परम्परा के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है। हमारे ऋषि जानते थे कि पृथ्वी का आधार जल और जंगल है। इसलिए उन्होंने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल की महत्वपूर्ण माना है। हमारे यहां वृक्ष को देवता मानकर पूजा करने का विधान है। वृक्षों की पूजा करने के विधान के कारण वृक्षों का संरक्षक हो जाता है।

गांधीनगर के दहेगाम का कंथारपुरा गांव यहां करीब 500 साल पुराना बरगद का पेड़ हैं। 40 मीटर ऊंचा यह पेडे आधे एकड़ में फैला हुआ है। पेड़ के नीचे मां काली का मंदिर है। इसलिए इस पेड़ को महाकाली वट भी कहा जाता है। हर पूर्णिमा पर यहां महाआरती होती है। करीब 3 हजार लोग जुटते हैं। 2006 में इसे पर्यटन स्थल घोषित किया गया। इस पेड़ के नीचे तापमान बाहर की तुलना में चार डिग्री सेल्सियस तक कम रहता है।

देश की सेहत सुधारने के लिए 200 से ज्यादा कानून बने, 45 विभाग, 7 लाख एनजीओ, सालाना 3 हजार करोड़ रू. का बजट, स्वच्छ भारत सेंस से 16,500 करोड़ रुपए आए, सभी राज्यों में प्रदूषण बोर्ड, सुप्रीम कोर्ट के 100 से ज्यादा बड़े फैसले, बावजूद इसके पर्यावरण संतुलन बिगड़ता जा रहा हैं...

67 हजार करोड़ का एन्वायर्नमेंट बिजनेस देश में

दुनिया में एन्वायर्नमेंट का बिजनेस 53 लाख करोड़ और भारत में करीब 67 हजार करोड़ रुपए का है।

भारत ने 2016-17 में पर्यावरण के लिए 2675 करोड़। इसमें सिर्फ 03% रिसर्च के लिए।

प्लास्टिक प्रदूषण को हराएं

विश्व में 12 राज्यों में पॉलीथीन पर बैन है। पर इन राज्यों में धडल्ले से प्लास्टिक से जुड़े सामान बिक रहे हैं। प्लास्टिक बिजनेस 20% की दर से बढ़ रहा है।

एक मिनट में दुनियाभर में 10 लाख पानी बॉटल बिक रहीं

70 साल में दुनियाभर में 8300 करोड़ टन वजन के प्लास्टिक प्रोडक्ट बने हैं। इनमें 6300 टन कचरे के तौर पर धरती और समुद्र में मिल गया है।

दुनियाभर में करीब 10 लाख पानी की बॉटल हर मिनट खरीदी जा रही है। हर साल दुनिया भर में 5 लाख करोड़ प्लास्टिक बैग्स इस्तेमाल हो रहे हैं।

खास बात : 1950 में प्लास्टिक प्रोडक्ट का चलन बढ़ा 20 लाख टन से 40 करोड़ टन तक प्रोडक्शन पहुंच गया।

देश में प्लास्टिक इंड्रस्टी 10-20% की दर से बढ़ रही है। एक प्लास्टिक प्रोडक्ट को खत्म होने में 450 से 800 साल तक लग जाते हैं।

रोजाना 26 हजार टन कचरा

भारत में 80% प्लास्टिक वेस्ट हो जाती है। रोजाना 25 हजार 900 टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है।

भारत में प्लास्टिक इंडस्ट्री की ग्रोथ 10-20% रही। खपत 1 करोड़ टन से दो करोड़ टन तक बढ़ रही है।

सालाना 130 टन प्लास्टिक खपत हर साल हो रही है। इसमें से 90 लाख टन प्लास्टिक कचरा पैदा हो रहा है।

प्लास्टिक का खतरा हर तरफ

समुद्रों और नदियों में प्लास्टिक प्रदूषण यदि ऐसे ही बढ़ता रहा तो 2050 तक जलचरों के बजाय प्लास्टिक अधिक मात्रा में पाया जाएगा। पॉलीथीन बैग और पेय पदार्थों की बोतलें सबसे बड़ी समस्या है। दुनिया में प्रति मिनट दस लाख पेय पदार्थ की बोतलें बेची जाती है।

वर्ष 1972 से हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस बार पर्यावरण दिवस पर भारत वैश्विक मेजबान है और संकल्प दुनिया को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त करने का। पिछले वर्ष दिसंबर में राष्ट्रसंघ की तीसरी पर्यावरण एसेम्बली में 193 देशों ने वश्व को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त करने का संकल्प लिया था।

प्लास्टिक आज हमारे जीवन में अत्यंत उपयोगी वस्तु है और हम हर दिन प्प्लास्टिक का उपयोग कई तरह से करते हैं। सुबह उठते ही टूथब्रश और टूथपेस्ट से लेकर भोजन की पैकिंग, यातायात साधन, फोन, कंप्यूटर सभी चीजों में प्लास्टिक है। इसके बिना आज जीवन की परिकल्पना असंभव सी लगती है, लेकिन यह पर्यावरण के लिए घातक है। विशेषज्ञों के अनुसार, प्लास्टिक से बनी अधिकांश वस्तुएं या तो पूर्णतया नष्ट नहीं होती है या इसमें 500 से 1000 वर्ष तक लग सकते हैं।

1950 से लेकर अब तक उत्पादित प्लास्टिक में सिर्फ 20 फीसदी ही या तो रिसाइकल किया गया है या बिजली बनाने में इस्तेमाल किया गया है। शेष हमारी धरती और समुद्रों को प्रदूषित कर रहा है। 60 प्रतिशत प्लास्टिक पदार्थ एसे हैं, जो सिर्फ एक बार इस्तेमाल के लिए बनाए जाते हैं, जैस चाय/कॉफी के कप, पानी या अन्य पेय पदार्थ की बोतल और पॉलिथीन के थैले।

यह प्लास्टिक या तो बड़े लैण्डफिल का हिस्सा है या समुद्रों का। समुद्र में

व्हेल, सील प्लास्टिक में फंसकर या उसे खा कर रोज मर रहे हैं। प्लास्टिक टूटकर माइक्रो प्लास्टिक यानी अत्यंत सूक्ष्म प्लास्टिक कणों में परिवर्तित होता है जो मछलियां खा लेती है और उनके माध्यम से यह प्लास्टिक हमारे भोजन चक्र में शामिल हो जाता है। प्लास्टिक के कप में गर्म पेय पीने से या प्लास्टिक की पानी की गर्म हुई बोतल में कई तरह के टॉक्सिन पैदा हो जाते हैं, जो कैंसर सहित कई घातक बीमारियों का कारण बनते हैं।

समुद्रों और नदियों में प्लास्टिक प्रदूषण यदि इसी गति से बढ़ता रहा तो 2050 तक वहां जलचरों के बजाय प्लास्टिक अधिक मात्रा में पाया जाएगा। पॉलिथीन बैग और पानी व अन्य पेय पदार्थों की बोतलें सबसे बड़ी समस्या है। दुनियाभर में प्रति मिनट दस लाख पेय पदार्थ की बोतलें बेची जाती हैं और प्रतिवर्ष तकरीबन 480 बिलियन। चीन, इंडोनेशिया, अमरीका, थाईलैण्ड इत्यादि देश प्लास्टिक के इस्तेमाल और अपशिष्ट पैदा करने में सबसे आगे हैं। यूरोप के कई देश जैसे आयरलैंड,लक्समबर्ग, एस्तोनिया और जर्मनी में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक का इस्तेमाल काफी अधिक है। इन अपशिष्टों में बड़ा हिस्सा पर्यटकों की देन भी है।

यूरोप के कई देश जैसे ब्रिटेन, फ्रांस, डेनमार्क आदि ने प्लास्टिक पर सख्त नियम बनाए हैं। स्वीडन अब प्लास्टिक रीसाइकल करने पर जोर दे रहा है। अमेरिका के कई राज्य प्लास्टिक प्रदूषण में कमी ला रहे हैं। अफ्रीका के कुछ देश जैसे कन्या,रवांडा इत्यादि प्लास्टिक कचरा कम करने के लिए सख्त कानून लेकर आए हैं। चीन ने भी जनवरी 2018 में प्लास्टिक का आयात बंद करने का निर्णय लिया।

भारत समुद्रों में सर्वाधिक प्लास्टिक प्रदूषण फैलाने वाले 20 देशों में 12वें स्थान पर है। चीन, दक्षिण-पूर्व एशियाई देश, श्रीलंका, मिस्र, नाइजीरिया, बांग्लादेश व दक्षिण अफ्रीका भारत से भी ऊपर हैं। समुद्रों में सर्वाधिक प्लास्टिक कचरा डालने वाली 20 नदियों में तीन सिंधु, ब्रह्मपुत्र और गंगा भारत की नदिया हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (2015) के अनुसार भारतीय शहरों में प्रतिदिन 15000 टन प्लास्टिक अपशिष्ट निकलता है, जिसमें से सिर्फ 9000 टन एकत्रित करके रिसाइकल किया जाता है। भारत सरकार ने 2016 में प्लास्टिक वेस्ट मैंनेजमेंट रूल्स जारी कर

प्लास्टिक के निर्माण, बिक्री, वितरण की विनियमित किया और 50 माइक्रोन से कम के प्लास्टिक बैग पर रोक लगाई, लेकिन इनका प्रभाव आंशिक रूप से ही दिखाई देता है।

प्लास्टिक प्रदूषण का समाधान मुश्किल है, परंतु असंभव नहीं है। कई संस्थाएं और कंपनियां कपड़े के थैलों की वकालत करती है, पर ध्यान रखना होगा कि पूरी दुनिया में में तीन प्रतिशत खेती योग्य भूमि में ही कपास उगाई जाती है, जिसमें पूरी दुनिया में इस्तेमाल होने वाले कीटनाशक का एक चौथाई भाग लगता है। एक किलोग्राम कपास पैदा करने में तकरीबन 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, काग्रज बायोगिडग्रेडेबल है, लेकिन और उसके परिवहन में कई गुना ज्यादा इंधन लगता है। रिसाइकल किए हुए कागज से बैग बनाने में कार्बन फुटप्रिंट कम किया जा सकता है।

विश्व को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त करना सिर्फ सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है। यह तभी संभव होगा जबकि इसका हर नागरिक भी अपनी जीवनशैली को प्लास्टिक मुक्त बनाने का संकल्प लेगा। उसे हर व्यावहारिक समाधान न केवल अपने जीवन में उतारना होगा, बल्कि अधिक से अधिक लोगों को उनके प्रति जागरूक करने का बीड़ा भी उठाना होगा।

मौसम का निरन्तर बिगड़ता मिजाज

मौसम की प्रतिकूलता साल दर साल किस कदर बढ़ती जा रही है, या इसी से समझा जा सकता है कि कहीं भयानक सूखा तो कहीं बेमौसम अत्यधिक वर्षा, कहीं जबरदस्त बर्फबारी तो कहीं कड़ाके की ठंड, कभी-कभार ठंड में गर्मी का अहसास तो कहीं तूफान और कहीं भयानक प्राकृतिक आपदाएं, ये सब प्रकृति के साथ हमारे खिलवाड़ के ही दुष्परिणाम हैं और हमें यह सचेत करने के लिए पर्याप्त हैं कि अगर इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का बुरे तरीके से दोहन करते रहे तो हमारे भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है।

इस बार गर्मी के मौसम की शुरूआत के कुछ दिनों बाद से ही मौसम ने

अचानक जिस प्रकार करवटें बदलना शुरू किया और देश के अधिकांश राज्य भयानाक तूफान, बर्फबारी बारिश इत्यादि की चपेट में देखे गए, प्रकृति का कई दिनों तक लगातार बार-बार ऐसा प्रकोप पहले कभी नहीं देखा गया वैसे इस साल सर्दी के मौसम में भी जिस प्रकार ठंड पहले के मुकाबले काफी कम पड़ी, तभी यह महसूस किया जाने लगा था कि अब की बार गर्मी की तपिश पिछले वर्षों के मुकाबले ज्यादा रहेंगी और कुछ समय पूर्व मौसम विभाग ने यह भविष्यवाणी कर भी दी थी कि विशेषकर उत्तर भारत में औसत तापमान विगत वर्षों के मुकाबले डेढ़ डिग्री सेल्सियस तक ज्यादा रहेगा जबकि हिमाचल तथा उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्र में तापमान में 2.7 डिग्री तक वृद्धि का अनुमान लगाया गया था लेकिन तमाम मौसम विज्ञानी बेमौसमी बर्फ, तूफान, बर्फबारी, और जगह-जगह आसमानी बिजली गिरने की संभावनाओं की भविष्यवाणी करने में नाकाम रहे। फिलहाल न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी तथा मौसम का निरन्तर बिगड़ता मिजाज गंभीर चिंता का सबब बना है। हालांकि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विगत वर्षों में दुनियाभर में दौहा, कोपेनहेगन,कानकुन इत्यादि बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन होते रहे हैं और वर्ष 2015 में पेरिस सम्मेलन में 197 देशो ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए अपने-अपने देश में कार्बन, उत्सर्जन कम करने और 2030 तक वेश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री तक सीमित करने का संकल्प लिया था किन्तु उसके बावजूद इस दिशा में अभी तक कोई ठोस कदम उठाते नहीं देखे गए हैं। दरअसल वास्तविकता यही है कि राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रकृति के बिगड़ते मिजाज को लेकर चर्चाएं, और चिंताएं तो बहुत होती है, तरह-तरह के संकल्प दोहराये जाते हैं किन्तु सुख-संसाधनों की अंधी चाहत, सकल घरेलु उत्पाद में वृद्धि, अनियंत्रित औद्योगिक विकास और रोजगार के अधिकाधिक समय पैदा करने के दबाव के चलते इस तरह की चर्चाएं और चिंताए अर्थहीन होकर रह जाती है।

एक और जहां इस बार मार्च माह में ही तापमान 40 डिग्री तक पहुंच गया, वहीं अप्रेल तथा मई माह में अचानक चली भयानक आंधियों, तूफान और ओलावृष्टि से खेत-खलिहानों में फसलों के साथ-साथ जान-माल का तो भारी नुकसान हुआ ही, प्रकृति ने यह गंभीर संकेत भी दिया है कि विकास के नाम पर हम प्रकृति से

भयानक तरीके से जिस तरह का खिलवाड़ कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप मौसम का मिजाज कब कहा किस कदर बदल जाए, कुछ भी भविष्यवाणी करना मुश्किल होता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते दुनियाभर में मौसम का मिजाज किस कदर बदल रहा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इस बार उत्तरी ध्रुव के तापमान में एक-दो नहीं बल्कि करीब 30 डिग्री तक की बढ़ोतरी देखी गई। स्कूली दिनों में हमने अपनी किताबों में पढ़ा था कि यूरोप का मौसम प्रायः ठंडा होता है किन्तु उससे आगे उत्तरी ध्रुव का तापमान तो उसके मुकाबले बेहद ठंडा रहता है, जो औसतन शून्य से 30 डिग्री सेल्सियस तक कम रहता है और वहां हर मौसम में सदैव बर्फ की मोटी चादर नजर आती है लेकिन इस बार इन दोनों स्थानों का नजारा बिल्कुल विपरीत देखा गया। जहां यूरोप जबरदस्त बर्फबारी और भीषण शीतलहर की चपेट में शून्य से भी कम तापमान में सिमटा रहा, वहीं उत्तरी ध्रुव के कुछ क्षेत्रों का तापमान शून्य से दो डिग्री तक ऊपर देखा गया।

मौसम की प्रतिकूलता साल दर साल किस कदर बढ़ती जा रही है, यह इसी से समझा जा सकता है कि कहीं भयानक सूखा तो कहीं बेमौसम अत्यधिक वर्षा, कहीं जबरदस्त बर्फबारी तो कहीं कड़ाके की ठंड, कभी-कभार ठंड से गर्मी का अहसास तो कही तूफान और कहीं भयानक प्राकृतिक आपदाएं, ये सब प्रकृति के साथ हमारे खिलवाड़ के ही दुष्परिणाम हैं और हमें यह सचेत करने के लिए पर्याप्त है कि अगर हम इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का बूरे तरीके से दोहन करते रहे तो हमारी भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है। हालांकि प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कहीं भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें चेतावनी भी देती रही है किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। हम यह समझना ही नहीं चाहते कि पहाड़ों का सीना चीरकर हरे-भरे जंगलों को तबाह कर हम जो कंक्रीट के जंगल विकसित कर रहे हैं, वह वास्तव में विकास नहीं बल्कि विकास के नाम पर हम अपने विनाश का ही मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। कुछ साल पहले तक पहाड़ी इलाकों का ठंडा वातावरण हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता था किन्तु पर्वतीय क्षेत्रों में यातायात के साधनों से बढ़ते प्रदूषण, बड़े-बड़े उद्योग स्थापित करने और राजमार्ग

बनाने के नाम पर बड़े पैमाने पर वनों के दोहन और सुरंगे बनाने के लिए बेदर्दी से पहाड़ों की ठंडक भी धरे-धीरे कम हो रही है। स्थिति इतनी बदतर होती जा रही है कि अब हिमाचल की धर्मशाला, सोलन व शिमला जैसी हसीन वादियों में भी पंखों और कुछ जगहों पर तो ए.सी. की भी जरूरत महसूस की जाने लगी है। पहाड़ों में बढ़ती इसी गर्माहट के चलते हमें अक्सर घने वनों में भयानक आग लगने की खबरें भी सुनने को मिलती रहती हैं। पहाड़ों की इसी गर्माहट का सीधा असर निचले मैदानी इलाकों पर पड़ता हैं, जहां को पारा अब हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। धरती का तापमान यदि इसी प्रकार साल दूर साल बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा क्योंकि हमें यह बखूबी समझ लेना होगा कि जो प्रकृति हमें उपहार स्वरूप शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध मिट्टी तथा ढेरों जनोपयोगी चीजें दे रही है अगर मानवीय क्रियाकलापों द्वारा पैदा किए जा रहे पर्यावरण संकट के चलते प्रकृति कुपित होती है तो उसे सब कुछ नष्ट कर डालने में पल भर की भी देर नहीं लगेगी। करीब दो दशक पहले देश के कई राज्यों में जहां अप्रैल माह में अधिकतम तापमान औसतन 32.33 डिग्री रहता था, अब वह 40 के पार रहने लगा है। 2016 में राजस्थान के फलौदी का तापमान तो 51 डिग्री दर्ज किया गया था और इस तापमान में वृद्धि की आशंका है। मौसम विभाग का तो अनुमान है कि अगले तीन दशकों में इन राज्यों में तापमान में वृद्धि 5 डिग्री तक दर्ज की जा सकती है इसी प्रकार तापमान बढ़ता रहा तो एक ओर जहां जंगलों में आग लगने की घटनाओं में बढ़ोतरी होगी, वहीं धरती का करीब 20-30 प्रतिशत हिस्सा सूखे की चपेट में आ जाएगा तथा एक चौथाई हिस्सा रेगिस्तान बन जाएगा, जिसके दायरे में भारत सहित दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य अमेरिका, दक्षिण आस्ट्रेलिया दक्षिण यूरोप इत्यादि आएंगे।

जीवन की चाह में प्रकृति की हत्या!

प्रतिवर्ष ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क अर्थ ओवरशूट डे' की घोषणा करता है। वह दिन जब हमें साल में जितनी मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करना चाहिए, उसकी सीमा पार कर जाते हैं। उस दिन की 'अर्थ ओवरशूट डे' माना जाता है। पिछले वर्ष 2 अगस्त की ही 'ओवरशूट डे' आ गया था।

एक दिन हम इन संसाधनों का इस कदर दौहन कर लेंगे कि इनकी सुविधा हमारे पास नहीं होगी।

इसे ऐसे समझें: कौन सी वस्तुएं इस दोहन की भेंट चढ़ रही हैं और जल्दी खत्म हो जाएंगी। अगर आपके बच्चे का जन्म 2018 में हुआ हैं तो-

-लगभग 47 वर्ष की उम्र तक उसे पेट्रोल डीजल के धुएं से राहत मिल जाएगी क्योंकि 2015 की रिपोर्ट के अनुसार करीब 50 सालों में यह संसाधन हम ख़त्म कर चुके होंगे।

- उसके कुछ वर्षों बाद लगभग 50 वर्ष की उम्र में प्राकृतिक गैस भी खत्म हो जाएगी।

- शायद आने वाली पीढ़ी के लिए तो कोयला उपलब्ध हो लेकिन आपके परनाती-परपोतों के लिए कोयला पाठ्यक्रम का महज एक पाठ बनकर रह जाएगा। क्योंकि अनुमानित तौर पर 111 वर्षों में हम पूरे कोयले का उपयोग कर चुके होंगे।

- 32 वर्ष की उम्र में समुद्री मछलियां ढूंढना मुश्किल ही जाएंगी क्योंकि 2050 तक समुद्र में मछलियों से ज्यादा प्लास्टिक कचरा होगा।

63 वर्ष की उम्र तक उपजाऊ भूमि ही नहीं बचेगी।

प्लास्टिक कचरे से घिरे होंगे हम

आज जो प्लास्टिक का हम अंधाधुंध उपयोग कर रहे हैं वह कल हमारे सामने कचरे के अकल्पनीय विशाल ढेर के रूप में होगा और तब सिवाय अफसोस के कुछ भी कर पाना मुश्किल न होगा।

50% प्लास्टिक कचरा वह होता है जिसको केवल हम एक ही बार उपयोग करते हैं।

100 अरब प्लास्टिक बैग्स बनाने में करीब 1 करोड़ 20 लाख बैरल पेट्रोल या प्राकृतिक गैस के समकक्ष ईंधन फूंक दिया जाता है।

स्रोत...

helpsaventature.com, Central pollution control board, nationalgeographic.com

गौरतलब है कि...

होटल, रेस्त्रों से भोजन पैक कराने जा रहे हैं तो घर से टिफिन साथ ले जाएं। होटल्स में खाना प्लास्टिक के डिब्बों में पैक किया जाता है। जो कि नुकसानदायक होता है। खाना पैक कराने के लिए टिफिन ले जाने की आदत में शामिल करें।

10 लाख से ज्यादा जीवों की प्रजातियां धरती का तापमान बढ़ने से विलुप्त हो चुकी हैं।

अब न जागे तो बूंद-बूंद तरसेंगे हम

जीवन की सबसे बुनियादी जरूरत-जल पहले आसानी से उपलब्ध था, फिलहाल खरीदना पड़ रहा है लेकिन बहुत ज्यादा अकूत धन के बावजूद पानी की बूंद के लिए संघर्ष होगा।

'तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए होगा।' अब यह केवल कहावत नहीं रही जल्द ही हकीकत में तब्दील होने को है। 2030 तक भारत में हमारे पास जरूरत के मुकाबले पीने योग्य पानी केवल आधा ही पानी होगा। तब अगर आप पेड़ लगाकर सब कुछ ठीक करने की कोशिश भी करेंगे तो बहुत देर हो चुकी होगी क्योंकि जब पीने के लिए पानी न होगा तो पौधों में देने के लिए कहां से लाएंगे ?

बिन पानी सब सून

पृथ्वी पर जल-71 प्रतिशत। कितना शुद्ध महज 2.5 प्रतिशत। हमारे इस्तेमाल के लिए कितना महज 0.03 प्रतिशत सतह पर। क्योंकि इस शुद्ध जल का अधिकतर भाग ग्लेशियरों में जमा है और लगभग 30 प्रतिशत जमीन के नीचे हैं। संयुक्त राष्ट्र के भोजन और कृषि संगठन के एक अनुमान के अनुसार महज 7 साल बाद 2025 तक 180 करोड़ लोग उन क्षेत्रों में रह रहे होंगे जहां पानी न के बराबर होगा।

प्रदूषित होती नदियां

2016 में लातूर जलसंकट हम सबने देखा। आज भी हमारे देश के दूरस्थ क्षेत्रों में पानी के लिए संघर्ष जारी है। भारत में करीब साढ़े छह करोड़ लोग गंदे पानी

पर ही गुजारा कर रहे हैं। बढ़ते शहरीकरण, औद्योगिकरण और जनसंख्या विस्फोट का असर है कि पिछले पांच सालों में प्रदूषित नदियों की संख्या 121 से बढ़कर 275 हो गई है। अमूमन हर शहर में नदियां नालों में तब्दील कर रहे हैं हम।

डे जीरो और सब ख़त्म

एक हालिया रिपोर्ट में कहा गया कि दुनियाभर के 200 शहर तेजी से जलसंकट की ओर बढ़ रहे हैं। जिसमें से 10 शहर 'डे जीरो' की क़गार पर है जिनमें बंगलुरु भी शामिल है। 'डे, जीरो' वह स्थिति है शहर के सारे नलों से पानी आना बंद हो जाएगा। दक्षिण अफ्रीकी शहर केपटाउन सूखे की मार झेल रहा है क्योंकि वहां पर डे जीरो इसी साल अप्रैल संभावित था। अब वहां रहवासियों को प्रतिदिन 50 लीटर महज दो बाल्टी पानी दिया जा रहा है जिससे उन्हें पानी संबंधित सभी काम करने होते हैं। लेकिन हम इसी तरह जल बर्बाद करते रहे तो शायद हमें तो इतना पानी भी नसीब न हो।

स्रोत

Centre for Science and Environment (CSE), Central pollution control board, water Aid

गौरतलब हैं कि...

मेहमानों को पानी पिलाना बेशक शिष्टाचार हो लेकिन कई लोग एक-दो घूंट पीकर बाकी का पानी बर्बाद कर देते हैं। इससे बचने के लिए ट्रे में गिलास के साथ जग में पानी भरकर रखें ताकि जरूरत के मुताबिक पानी लिया जा सके। खाना भी थाली लगाकर न परोसें।

5 धरती के बराबर संसाधनों की आवश्यकता होगी हमें अगर पूरी दुनिया के लोग एक औसत अमेरिकी की तरह जिंदगी गुजारने लगें तो उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए।

विश्व पर्यावरण दिवस आजः काजरी और इसरो के शोध में खुलासा

राजस्थान में थम गया रेगिस्तान

दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश में बढ़ा मरूस्थलीकरण

जोधपुर बड़े-बड़े टीले, दिन भर उड़ती बालू और नागफनी, बांवलिया जैसे पौधों की धरा कहे जाने वाले मरूप्रदेश राजस्थान की फिजा बदल रही है। 60 साल के आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश में एक लाख हेक्टेयर बंजर भूमि पर खेत-खलिहान लगा दिए गए हैं। जहां कभी मीलों दूर तक बालू के टीले थे, वहां फसलें लहलहा रही है। राजस्थान ने रेगिस्तान का विस्तार रोक दिया है। राजस्थान के अलावा दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश जैसे राज्यों में पिछली आधी सदी में मरूस्थलीकरण ने पांव पसारे हैं। वह खुलासा केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुंसधान संस्थान (काजरी) और इसरो की ओर से किए गए शोध में हुआ है। इसरो और काजरी ने 1957 से 2014 तक के डेटा का विश्लेषण किया। रिमोट सेसिंग व जमीन तकनीक के इस्तेमाल से दोनों संस्थाओं ने प्रदेश में मरुस्थलीकरण के रुकने की बात कही है। साथ ही प्रदेश से आने वाले समय के लिए चिंता भी जताई है।

1957 में सिंचित क्षेत्रफल 0.70 प्रतिशत था, 2014 में 15 प्रतिशत हो गया।

सकल बुआई 35 फीसदी थी जो 2016 में 53 फीसदी हो गई।

पड़त भमि (कुछ साल बगैर खेती के छोड़ दी जाती है)7 प्रतिशत रह गई।

सर्वे में सामने आया कि राजस्थान में मरुस्थलीकरण रुक गया हैं। पहले जैसलमेर बाड़मेर सर्वे के लिए जाते थे तो सड़क से मिट्टी खुद हटाते थे। इंदिरा गांधी कैनाल से खेती को बढ़ावा मिला है।

डॉ. पीसी मोहराणा, प्रधान
वैज्ञानिक, काजरी जोधपुर

घट गया अपरदन

पश्चिमी राजस्थान में आधी सदी पहले उठाने वाले बवण्डर 'वैरी सीवियर केटेगरी' के थे जो 'मोडरेट कैटेगरी के रह गए। वर्ष 1960 में वायु अपरदन 76 फीसदी हुआ करता था जो 73 फीसदी तक आ गया है।

बच्चों का रिजल्ट बिगाड़ती है गर्मी

तेज गर्मी यूं तो सबको परेशान करती है लेकिन ताजा शोध में बच्चो के पढ़ाई में पिछड़ने को भी बढ़ते तापमान को जिम्मेदार माना गया है। अमरीका में हुए एक

अध्ययन में दावा किया गया है कि जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है, बच्चों का मन पढ़ाई में लगना कम हो जाता है और उनका रिजल्ट बिगड़ने लगता है। अमरीका के 13 साल तक के एक करोड़ स्कूली बच्चों पर किए गए अध्ययन में पता चला कि इस मौसम में परीक्षा देने वाले बच्चे हमेशा घुटन भरी गर्मी लगने की शिकायत करते हैं। क्लासरूम में बहुत गर्मी का नकारात्मक असर छात्रों के प्रदर्शन पर पड़ता है।

आध्यात्मिक जागरुकता से ही बचेगा पर्यावरण

पर्यावरण बचाने की बात आती है तो, पर्यावरण कानून आदि की बात चल पड़ती है। कानून जरूरी तो है लेकिन, सिर्फ कानून ही पर्यावरण सुरक्षा के लिए पर्याप्त नहीं है। पर्यावरण को हमारे जीवन मूल्यों के साथ जोड़ना होगा तभी हम इस दिशा में सार्थक काम कर सकेंगे।

पूरी दुनिया की प्राचीन संस्कृतियों में प्रकृति का सम्मान दिखाई देता है। हमारे देश में तो यह संस्कृति का अविभाज्य अंग है। एक पेड़ काटने पर पांच पेड़ लगाने की परम्परा रही है। जल धार्मिक रीति-रिवाज का अभिन्न अंग रहा है। नदियों को मां की तरह माना गया है और धरती की देवों की तरह पूजा जाता है। आज इस परम्परा के पालन में विशेष दृष्टिकोण जोड़ने की आवश्यकता है। लोगों को नए तरीकों से जल-संरक्षण के लिए जागरूक बनाया जाए। रसायन मुक्त खेती का तरीका सिखाया जाए। समाज खासतौर पर युवाओं की भागीदारी होना अति आवश्यक है, जल निकायों के पुनरुत्थान, पौधारोपण और शून्य कचरे की जीवन शैली के लिए तंत्र बनाने की आवश्यकता है। आर्ट ऑफ लिविंग ने 27 नदियों को पुर्नजीवित किया है और यह सिर्फ समाज की पूरी भूमिका से संभव हो सका।

आज प्रदूषण का महत्वपूर्ण कारण मानव की असीमित भूख है, जिसने पारिस्थितिकी तंत्र को बिगाड़ दिया है और न केवल भौतिक पर्यावरण को नुकसान पहुचाया है बल्कि आस-पास के वातावरण में नकारात्मकता भी ला दी है। टेक्नोलॉजी और विज्ञान हमें नुकसान नहीं पहुंचा रहे हैं बल्कि इनसे उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थ खतरा बन रहे हैं। हमें सौर ऊर्जा और नैसर्गिक खेती जैसे उपायों से इनका प्रबंध करने की आवश्यकता है। टेक्नोलॉजी का प्रमुख उद्देश्य है कि मानव जीवन सुगम बनाने के

लिए प्रकृति का दोहन करे। जब आध्यात्मिक और मानव मूल्यों से ध्यान हटाया जाएगा, तब टेक्नोलॉजी सुविधा की जगह प्रदूषण और विनाश ही लाएगी। इसलिए मैं कहता हूं आध्यात्मिक जागरुकता पर्यावरण की सुरक्षा में महत्ती योगदान दे सकती है। हमारी प्राचीन विरासत यह बताती है कि प्रकृति के साथ हमारा संबंध अटूट है, अभिन्न है। हमारा वातावरण यदि साफ-सुथरा है तो हमारे अस्तित्व के सभी स्तरों को यह प्रभावित करता है। हम जैसे ही प्रकृति से दूर जाते हैं वैसे ही हम प्रदूषण फैलाने लगते है, उसका नुकसान करने लगते हैं।

हमें अपना रहन सहन इस तरह बनाना होगा कि प्रकृति से जोड़ने वाला हमारा परम्परागत ज्ञान बरकरार रहे। हमें इस संवेदनशीलता को बढ़ाना है कि इस पेड़ों, पहाड़ों, नदियों में दैव स्वरूप को देख सके। यह संवेदनशीलता ही होगी, जो हमें और हमारे पर्यावरण को बचाएगी। इन सबसे ऊपर हमें इस दुनिया को खुले दिमाग का बनाना है, तनाव मुक्त करना है और तभी हम इस धरती को सुंदर बना सकते हैं। खुले दिमाग का और तनाव से मुक्त होगा तो मानव शोषण की मानसिकता से ऊपर उठेगा। आध्यात्म वह रास्ता है, जो स्वयं से स्वयं का परिचय करवाता है और यही हमारे पर्यावरण को बचाने के लिए भी प्रेरित भी करेगा। अध्यात्म वह बताएगा कि कहां हमारी भूख पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रही है और हमारे अंदर से पर्यावरण के प्रति स्वस्थ भाव जागृत होंगे। आज की चुनौती यह है कि टेक्नोलॉजी और विज्ञान की उन्नति के साथ पर्यावरण का भी संतुलन बनाए रखें। अध्यात्म और जीवन मूल्यों का होना भी हमारे व्यक्तित्व का अनिवार्य अंग है। पर्यावरण दिवस पर आइए संकल्प लें कि हम अपनी पूरी क्षमता से प्लास्टिक के उपयोग को आधा कर देंगे। शुरुआत हम डिस्पोजेबल प्लास्टिक की जगह रिसाइकिल किया जा सकने वाला प्लास्टिक इस्तेमाल करके और जहां संभव हो अपनी थैलियां व पानी की बोतलें साथ ले जा सकते हैं ताकि यूज एंड थ्रो वाली चीजों के इस्तेमाल से बच सकें।

मरण/(जन्म) व अमृत की आत्मकथा

आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- जिया बेकरार है...आत्मशक्ति...)

मरण मेरा नाम है, मारना मेरा काम है।

मेरा साम्राज्य संसारी जीवों में चले अविराम है।। (स्थायी)
मेरा अस्तित्व अनादि काल से रहेगा अनन्त तक भी।
जो कर्म से मुक्त हो गये, वे ही मुक्त मुझसे भी।
आयुक्षय से होता मेरा जन्म कर्मक्षय से मेरा मरण।
जो कर्म को क्षय करे वे क्षय करे जन्म-मरण।। (1)

आयु के अनेक भेद-प्रभेद हैं बद्धयमान-भुज्यमान भी।
मनुष्य-नारकी-देव तिर्यंच भेद में चार भेद भी।।
भुज्यमान मनुष्य आदि की आयुक्षय होता तद्भव मरण है।
हर समय में जो आयुक्षय होता उस का नाम आवीचिमरण है।। (2)

ऐसे ही मेरे अनेक भेद, अवधि-आदिअन्तमरण है।
बाल-पंडित-आसण्णमरण, व बालपंडित मरण है।।
ससल्लमरण-बलायमरण-वसट्ट-विप्पाणस मरण है।
गिद्धपुट्ठमरण- भक्तप्रत्याख्यान व प्रायोगमनमरण है।। (3)

इंगिनीमरण- केवलीमरण तथा अन्य पाँच प्रकार भी।
पंडित पंडित-पंडित मरण -बालपंडित बाल-बाल मरण भी।।
अभव्य जीवों को न मोक्ष होता, वे न मुझसे कभी बच पाते।
उनका मरण सदा बालबालमरण तथाहि मिथ्यादृष्टि के।। (4)

अविरत सम्यग्दृष्टि के बालमरण पंडित मरण साधु के।
समाधि सहित होता यह मरण, परम्परा से कारण मोक्ष के।।
पंडित पंडित मरण होता क्षीणकषाय एवं अयोग केवली के।
इस मरण से मिले मोक्ष यहाँ न होते जन्म-जरा मरण है।। (5)

अकालमरण न देव-नारकी के, तथाहि चरमोत्तम देही के।
असंख्यात वर्ष की आयु वाले, भोग भूमिज मानव तीर्यंच के।।
अन्य जीवों के अकाल मरण संभव है विष वेदना, रक्त क्षय/दुर्घटना) से।
अस्र प्रहार व भय, संक्लेश, आहार-उश्वास निरोध से।। (6)

विषाक्त जीवों के काटने से या विषभक्षण करने से।
विषाक्त भोजन व तम्बाखू आदि सेवन व प्रदूषणों से।।
मुझे परास्त करने हेतु कर्मक्षय ही सर्वोत्तम है।
अन्य उपायों से मेरा मरण होना नहीं कभी भी संभव है।। (7)

मुझे मारने का उपाय है आत्मविश्वास ज्ञान-चारित्र।
समता-शान्ति आत्माविशुद्धि अतएव 'कनक' इस में सन्नद्ध।। (8)
सागवाडा 5.6.2018 मध्याह्न 2:20

संदर्भ :-

मरण के 17 भेद

मरणाणि सत्तरस देसिदाणि तित्थंकरेहिं जिणवयणे।
तत्थ वि य पुण इह संगहेण मरणाणि बोच्छामि।। 25

जिनागम में तीर्थकरों ने मरण सतरह कहे हैं। उन सतरह प्रकार के मरणों में से भी यहाँ (संगहेण) संक्षेप से पाँच मरणों को कहूँगा।

मरण अनेक प्रकार के हैं ऐसा अन्य शास्त्रों में कहा है। उनमें से यहाँ इन मरणों को कहना है यह बतलाने के लिए यह गाथा सूत्र आया है। मरण, विगम, विनाश, विपरिणाम इन सब शब्दों का अर्थ एक है। वह मरण जीवन पूर्वक होता है। जीवन, स्थिति, अविनाश, अवस्थिति यह सब एकार्थक है। स्थितिपूर्वक विनाश होता है। जिसकी स्थिति नहीं है उसका विनाश नहीं है जैसे बाँझ का पुत्र नहीं होता तो उसका विनाश भी नहीं होता है। क्षणिकवादी बौद्धों ने जिस वस्तु को कहा है उस की स्थिति नहीं है अर्थात् वह वस्तु ही नहीं है। जीवन जन्म पूर्वक होता है। जो उत्पन्न नहीं हुआ उसकी स्थिति नहीं है इसलिए प्रत्येक वस्तु उत्पत्ति, विनाश और ध्रौव्यरूप को लिए हुए है। इस प्रक्रिया के अनुसार उत्पन्न हुई पर्याय के विनाश का नाम मरण है। देवपना,तिर्यंचपना, नारकपना, मनुष्यपना, इन पर्याय का विनाश यहाँ मरण शब्द से लिया है। अथवा प्राण छोडने का नाम मरण है। कहा भी है। मृङ् धातु' प्राणत्याग के अर्थ में है। इसी तरह प्राण ग्रहण को जन्म कहते हैं। प्राणों का धारण करना जीवन है। प्राणों के दो भेद हैं- द्रव्यप्राण, भावप्राण। इन्द्रियाँ पाँच, तीन बल, उच्छ्वास और आयु

के पुद्गल द्रव्यप्राण हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र से भाव प्राण हैं। इन भाव प्राणों की उपेक्षा सिद्धों में जीवन होता है। उन प्राणों में आयु प्राण के दो भेद हैं- अद्धायू और भवायू। भव धारण को भवायू कहते हैं। भव शरीर को कहते हैं। आयु कर्म के उदय से आत्मा भव धारण करता है। अतः आयु कर्म भवधारण रूप है उसे ही भवायु कहते हैं। कहा भी है- शरीर को भव कहते हैं। वह भव आयु कर्म के द्वारा धारण किया जाता है। इसलिए भव धारण में कारण आयु कर्म को भवायु कहते हैं।

इस प्रकार आयु के वश से ही जन्म लेता है और आयु के उदय से ही जीवित रहता है। पूर्व आयु का विनाश और आगे की अन्य आयु का उदय होने पर मरण होता है।

कहा है-आयु के वश से जीव जन्म लेता है। आयु के उदय में जीवित रहता है। अन्य आयु का उदय होने पर अथवा पूर्व आयु का नाश होने पर मरता है।

अद्धा शब्द से काल कहा जाता है और आयु शब्द से द्रव्य की स्थिति। अतः द्रव्य कर स्थितिकाल को अद्धायु कहते हैं। द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा द्रव्यों की अद्धायु अनादि निधन है। और पर्यायार्थक की अपेक्षा चार प्रकार की है-अनादिअनिधन, सादिअनिधन, अनादिसान्त और सादि सान्त। चैतन्य, रूपादिमत्ता, गतिहेतुता, स्थितिहेतुता, आदि सामान्य की अपेक्षा द्रव्य की स्थिति अनादि अनिधन है। अर्थात् जीवादि द्रव्य का अपना-अपना स्वभाव सदा से ही है और सदा रहेगा, अतः वे सब इस दृष्टि से अनादि अनन्त हैं। केवलज्ञान आदि की अद्धायु सादि अनिधन है क्योंकि प्रकट होकर नष्ट नहीं होता। भव्यत्व की अद्धायु अनादिसनिधन(सान्त) है क्योंकि भव्यत्व भाव यद्यपि अनादि होता है किन्तु मुक्ति होने पर नष्ट हो जाता है। कोप आदि सादि सनिधन है।

अथवा द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भाव के आश्रय से स्थिति चार प्रकार की होती है। इस अद्धायु के द्वारा भव धारण रूप आयु का कथन होता है। जिन कर्मों की आयु संज्ञा होती है वे कर्म पुद्गलद्रव्य रूप होने से आयु स्थिति द्रव्यस्थिति से अत्यन्त भिन्न नहीं है। अथवा जो आयु संज्ञावाले पुद्गल उदय में आ रहे हैं उनके गल जाने को मरण कहते हैं। वे मरण जिन वचन में तीर्थंकरों ने सतरह कहे हैं।

(1) आविचिमरण (2) तद्भवमरण(3)अवधिमरण(4) आदि अन्तमरण (5) बालमरण (6)पंडित मरण(7) आसण्णमरण(8) बालपंडितमरण(9) ससल्लमरण (10) बलायमरण (11) वसट्टमरण (12) विप्पाणसमरण (13) गिद्धपुट्ठमरण, (14) भक्ताप्रत्याख्यान मरण (15) प्रायोपगमनमरण (16) इंगिनीमरण (17) केवली मरण।

1) आवीचिमरण – वीचीशब्द तरंग को कहता है। किन्तु यहाँ विचि के समान ऐसा अर्थ करने से वीचिका अर्थ- आयु का उदय हैं। जैसे समुद्र वगैरह में तरंगे निरन्तर उठा करती है। उसी प्रकार क्रम से आयु-नामक कर्म प्रतिसमय उदय में आता है। इसलिए उसके उदय को आवीचि शब्द से कहा है। आयु के अनुभवन को जीवन कहते हैं। वह प्रतिसमय होता है। उसका भंग मरण है। अतः जीवन की तरह मरण भी आवीची है क्योंकि आयु का उदय प्रतिसमय होता है। अतः प्रत्येक अनन्तर समय में मरण भी होता है। उसी प्रति समय होने वाले मरण को आवीचिमरण कहते हैं। वह भव्य जीवों के अनादिसान्त है।

शंङ्का-सिद्धों के ही मरण का अन्त होता है, दूसरों के नहीं। किन्तु सिद्ध भव्य नहीं है। जिनके भविष्य में सिद्धपर्याय होने वाली है उन्हें भव्य कहते हैं। सिद्ध तो सिद्धपर्याय प्राप्त कर चुके हैं तब कैसे कहते हैं कि भव्यजीवों का मरण अनादिसान्त है ?

समाधान – ऐसा कहा है कि भव्यों का आवीचिमरण अनादि और सान्त है। अतः जो द्रव्य भव्यत्वपर्याय को प्राप्त था वही यह है ऐसा मानकर भव्यों के अनादिसान्त मरण कहा है ऐसा निश्चित है। अभव्यजीवों के सामान्य अपेक्षा से आयु का उदय बराबर होता है अतः उनका आवीचिमरण अनादिनिधन है। किन्तु भव की अपेक्षा और क्षेत्रादि की अपेक्षा सादि है। चार आयुकर्मों में से यद्यपि एक जीव के दो ही आयुकर्मों की सत्ता रहती है (एक जिसे भोगता है और दूसरी जिसे परभव के लिए बाँधा है) तथापि उदय एक ही आयु का होता है। दो प्रकृतियाँ सत्ता में एक साथ रह सकती हैं। वही कहते हैं- तिर्यंचायु और मनुष्यायु सब आयुओं के साथ सत्ता में रहती है अर्थात् देवायु और नरकायु दूसरी देवायु और नरकायु के साथ सत्ता में नहीं

रहती; क्योंकि देव मरकर देव या नारकी नहीं हो सकता और न नारकी मरकर नारकी या देव होता है।

शङ्का-आयु कर्मों की यह सत्कर्मव्यवस्था रहो, किन्तु दो आयु कर्मों का एक साथ उदय क्यों नहीं होता ?

समाधान-आयुकर्म की जिस प्रकृति की स्थिति अनुभव में आ रही हैं और जिस आयु की स्थिति का उदय हो रहा हैं उसकी स्थिति जहाँ समाप्त होती है उससे ऊपर दूसरी आयु के निषेक रहते हैं। अतः जब तक पहली आयु की स्थिति समाप्त नहीं होती तब तक दूसरी उदय में आ नहीं सकती। इसलिए एक साथ आयु की दो प्रकृतियों का उदय नहीं होता। तथा एक जीव के एक साथ दो भव या दो गति सम्भव नहीं हैं। और भव तथा गति को लेकर उसके अनुसार आयु का उदय होता है, अन्यथा नहीं होता, इसलिए दो भी आयु का उदय एक जीव के नहीं होता। इस प्रकार एक आयु कर्म की एक ही प्रकृति एक जीव के उदय में है अतः एक-एक आयु कर्म के गलनरूप ही मरण होता है। यह प्रकृति मरण काल भेद से एक भी जीव के चार प्रकार का होता है। वह आवीचिक मरण ही है। इस प्रकार प्रकृति आवीचिकमरण का व्याख्यान किया।

2) दूसरा स्थिति आवीचिमरण – भव धारण में कारण रूप से परिणत हुए पुद्गलों के स्नेह-वश आत्मा के प्रदेशों में ठहरने को स्थिति कहते हैं। आत्मा का कषाय परिणाम पुद्गलों की स्निग्धता का सहकारी होता है। परिणाम कारण तो स्वयं पुद्गलद्रव्य ही है। यह स्थिति एक समय से लेकर एक-एक समय बढ़ते-बढ़ते कुछ तैतीस सागरों के जितने समय है उतने भेद वाली होती है। यह उत्कृष्टस्थिति है। जघन्यस्थिति अन्तर्हमुर्हूत प्रमाण होती हैं । तरंगों के समान क्रम से अवस्थित उस स्थिति के विनाश से आत्म स्थिति आवीचिमरण होता है। भावान्तर प्राप्ति पूर्वक उसके अनन्तरपूर्ववर्ती भव का विनाश तद्भवमरण है वह तो इस प्रकार जीवन अनन्तबार प्राप्त किया है। अतः तद्भवमरण दुर्लभ नहीं है।

अनुभव आवीचिमरण कहते हैं– कर्मपुद्गल के रस को अनुभव कहते हैं। वह अनुभव परमाणुओं में छह प्रकार की वृद्धि हानि रूप से तरंगों की तरह क्रम से

अवस्थित है। उसका विनाश अनुभव अवीचिमरण है। आयु संज्ञा वाले पुद्गलों के प्रदेश जघन्य निषेक से लेकर एक आदि वृद्धि के क्रम से तरंगों की तरह अवस्थित है उनके गलने को प्रदेश आवीचिमरण कहते हैं।

3) अवधिमरण – जो वर्तमान में जैसा मरण प्राप्त करता है यदि वैसा ही मरण होगा तो उसे अवधिमरण कहते हैं। उसके दो भेद है- देशावधिमरण और सर्वावधिमरण। वर्तमान में जो आयु जैसे प्रकृति, स्थिति, अनुभव और प्रदेशों को लेकर उदय में आ रही है वैसी ही प्रकृति आदि को लिए हुए यदि पुनः आयुबन्ध करता है और उसी प्रकार भविष्य में उसका उदय होता है तो उसे सर्वांवधिमरण कहते हैं। और वर्तमान में जैसा आयु का उदय होता है वैसा ही यदि एक देश बन्ध करता है वह देशावधिमरण है। इसका अभिप्राय यह है एक देश से अथवा सर्व देश से मर्यादा को लिए हुए सादृश्य से विशिष्ट मरण को अवधिमरण कहते हैं।

4) आद्यन्तरण – वर्तमान से यदि भाविमरण असमान होता है तो उसे आद्यन्तमरण कहते हैं। वहाँ से वर्तमान का प्राथमिक मरण कहा जाता है। उसका अन्त अर्थात् विनाश जिस उत्तरमरण में होता है उसे आद्यन्त मरण कहते हैं। वर्तमान में जिस प्रकार के प्रकृति, स्थिति, अनुभव और प्रदेश द्वारा मरण को प्राप्त होता है यदि एकदेश या सर्वदेश से उस प्रकार को प्राप्त नहीं होता तो वह आद्यन्तमरण है।

5) बालमरण – बाल के मरण को बालमरण कहते हैं। वह बाल पाँच प्रकार का है- अव्यक्त बाल, व्यवहारबाल, ज्ञानबाल, दर्शनबाल, चारित्रबाल। अव्यक्त छोटे बच्चे को कहते हैं जो धर्म, अर्थ और काम को नहीं जानता और न जिसका शरीर ही उनका आचरण करने में समर्थ है वह अव्यक्तबाल है। जो लोक, वेद और समय सम्बन्धी व्यवहारों को नहीं जानता अथवा इन विषयों में शिशु समान है वह व्यवहारबाल है। अर्थ और तत्व के श्रद्धान से रहित सब मिथ्या दृष्टि दर्शनबाल है। वस्तु को यथार्थ रूप से ग्रहण करने वाले ज्ञान से जो हीन हैं वे ज्ञानबाल हैं। जो चारित्रपालन किये बिना जीते है वे चारित्रबाल है। इन बालों के मरणों को बालमरण कहते हैं। अतीतकाल में ये बालमरण अनन्त हो चुके हैं, अनन्त जीव इस मरण को प्राप्त होते हैं। यहाँ इनमें से दर्शनबाल का ग्रहण किया है, अन्य बालों का नहीं, क्योंकि सम्यग्दृष्टि में इतर

बालपना रहते हुए भी दर्शन पंडितपना रहता है इसलिए उसके पंडितमरण ही स्वीकार किया है।

संक्षेप से दर्शनबाल का मरण दो प्रकार का है एक इच्छापूर्वक, दूसरा अनिच्छापूर्वक। आग से, धुएँ से, शस्त्र से, विषय से, पर्वत से गिरने से, श्वास के रुकने से, अतिशीत या अतिगर्मी पडने से, रस्सी से, भूख से, प्यास से, जीभ उखाडने से और प्रकृति विरूद्ध आहार के सेवन से बाल पुरुष मरण को प्राप्त होते हैं यह इच्छापूर्वक मरण (आत्मा-हत्या) के अर्थात् ऐसे उपाय स्वयं करके वे मरते है।

किसी निमित्तवश जीवन को त्यागने की इच्छा होने पर भी अन्तरंग में जीने की इच्छा रहते हुए काल या अकाल में अध्यवसान आदि से जो मरण होता है वह अनिच्छापूर्वक दर्शनबाल मरण है। जो दुर्गति में जाने वाले हैं, विषयों में अति आसक्त हैं, अज्ञान पटल से आच्छादित है, ऋद्धि, रस और सुख के लालची हैं वे इन बाल मरणों से मरण करते हैं। ये बालमरण बहुत तीव्र कर्मों के आस्रव के द्वार हैं, जन्म, जरा, मरण के दुखों को लाने वाले हैं।

6) पण्डित मरण – इसके चार भेद हैं, व्यवहार पण्डित, सम्यक्त्व पण्डित,ज्ञान पण्डित और चारित्र पण्डित। जो लोक, वेद और समय के व्यवहार में निपुण हैं वह व्यवहार पण्डित हैं। अथवा जो अनेक शास्त्रों का ज्ञाता है सेवा आदि बौद्धिक गुणों से युक्त है वह व्यवहारपण्डित है। क्षायिक, क्षायोपशमिक अथवा औपशमिक सम्यग्दर्शन से जो युक्त है वह दर्शनपण्डित हैं। जो मति आदि पाँच प्रकार के सम्यग्ज्ञान रूप से परिणत है वह ज्ञान पंडित है। जो सामायिक, छेछोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात चारित्र में से किसी एक चारित्र का पालक है वह चारित्रपण्डित है। यहाँ ज्ञान, दर्शन और चारित्र पण्डितों का अधिकार है। व्यवहार पण्डित मिथ्यादृष्टि का तो बालमरण होता है और सम्यग्दृष्टि का मरण दर्शनपण्डित मरण है। वह दर्शनपण्डित मरण नरक में भवनवासी देवों में, वैमानिक देवों में, ज्योतिष्क देवों में, व्यन्तर देवों में और द्वीप समुद्रों में होता है। ज्ञानपण्डित मरण भी इन्हीं में होता है। किन्तु केवलज्ञान और मनःपर्ययज्ञान पण्डितमरण मनुष्य लोक में ही होता है।

7) ओसण्णमरण – निर्वाण मार्ग पर प्रस्थान करने वाले संयमियों के संघ से हीन हो गया है उसे निकाल दिया गया है वह ओसण्ण कहलाता है। उसके मरण को ओसण्णमरण कहते हैं। ओसण्ण के ग्रहण से पार्श्वस्थ, स्वच्छन्द, कुशील और संसक्तो का ग्रहण होता है। कहा भी है- पार्श्वस्थ, स्वच्छन्द कुशील और संसक्त ये ओसण्ण होते हैं क्योंकि ये मोक्ष के लिए प्रस्थान करने वाले साधु संघ से बाहर होते हैं।

ऋद्धियों के प्रेमी, रसों में आसक्त, दुःख से मौत, सदा दुःख के कातर, कषायों में संलग्न, आहारदि संज्ञा के अधीन, पाप वर्धक शास्त्रों के अभ्यासी तेरह प्रकार की क्रियाओं में आलसी, सदा संक्लेश युक्त चित्त वाले, भोजन और उपकरणों से प्रतिबद्ध, निमित्तशास्त्र, मंत्र औषध आदि से आजीविका करने वाले, गृहस्थों का वैयावृत्य करने वाले, गुणों से हीन, गुप्तियों और समितियों में उदासीन, संवेग भाव से मन्द, इस प्रकार के धर्म में मन को न लगाने वाले तथा सदोष चारित्र वाले मुनियों को अवसन्न कहते हैं। इस प्रकार से रहित हुए ये बेचारे मरकर हजारों भवों में भ्रमण करते हैं। किन्तु दुःख उठाते-उठाते पार्श्वस्थ रूप में चिरकाल तक विहार करके अन्त में आत्मा की शुद्धि करके यदि मरते हैं तो प्रशस्तमरण ही होता है।

8) बालपण्डित मरण– सम्यग्दृष्टि संयतासंयत के मरण को बालपण्डित मरण कहते हैं क्योंकि यह बाल और पण्डित दोनों ही होता है। इनके स्थूल हिंसा आदि से विरति रूप चारित्र और दर्शन दोनों होते हैं अतः यह चारित्रपण्डित भी है और दर्शनपण्डित भी है। किन्तु कुछ सूक्ष्म असंयम से निवृत्त नहीं होता, इसलिए चारित्र में बाल है।

यह बालपण्डित मरण गर्भज और पर्याप्तक तिर्यंचों तथा मनुष्यों में होता है। दर्शनपण्डित मरण तो इनमें भी होता है और देव नारकियों में भी होता है।

9) सशल्लमरणं – सशल्य मरण के दो भेद हैं क्योंकि शल्य के दो भेद हैं- द्रव्यशल्य और भावशल्य। मिथ्यादर्शन, माया और निदान इन शल्यों का कारण जो कर्म है उस कर्म को द्रव्यशल्य कहते हैं। द्रव्यशल्य के साथ मरण पाँचों स्थावरों, असंज्ञियों और त्रसों का होता हैं।

शंङ्का– द्रव्यशल्य तो सर्वत्र है तब स्थावरों के क्यों कहा ?

समाधान – यहाँ भावशल्य से रहित द्रव्य शल्य की अपेक्षा है। यह कहा है कि सम्यगदर्शन के अतिचारों का कारण दर्शनशल्य है और सम्यग्दर्शन स्थावरों में तथा विकलेन्द्रिय त्रसों में नहीं होता।

आगामीकाल में यही होना चाहिए इस प्रकार के मन के उपयोग को निदान कहते हैं। असंज्ञियों में इस प्रकार का निदान नहीं होता। मोक्षमार्ग को दोष लगाना, मार्ग का नाश करना, मिथ्यामार्ग का कथन करना या मोक्षमार्ग का कथन न करना, और जो मोक्षमार्गी है उनमें भेद डालना ये मिथ्यादर्शनशल्य हैं। उनमें से निदान के तीन भेद है- प्रशस्त, अप्रशस्त और भोगकृत। परिपूर्ण संयम की आराधना करने की इच्छा से परभव में पुरुषत्व आदि प्राप्ति की प्रार्थना निदान है। मानकषाय से प्रेरित होकर आगामी भव में उच्चकुल, सुन्दर रूप आदि की प्रार्थना अप्रशस्त निदान है। अथवा क्रोध के आवेश में आकर अपने शत्रु के वध की प्रार्थना, जैसे वशिष्ठ ने उग्रसेन के विनाश की प्रार्थना की थी, अप्रशस्त निदान है। इस व्रतशील आदि के प्रभाव से इस भव में और परभव में इस प्रकार के भोग मुझे प्राप्त हों, इस प्रकार मन के संकल्प को भोगनिदान कहते हैं। असंयत सम्यग्दृष्टि अथवा संयतासंयत के निदानशल्य होता है। चिरकाल तक पार्श्वस्थ साधु के रूप में विहार करने के पश्चात् भी जो आलोचना किये बिना मर जाता है उसका माया शल्य मरण होता है। ऐसा मरण संयत, संयतासंयत और अविरत सम्यग्दृष्टि में होता है।

10 बलायमरण – जो विनय वैयावृत्य आदि में आदर भाव नहीं रखता, प्रशस्त योग के धारण में आलसी है, प्रमादी है, व्रतों में समितियों में और गुप्तियो में अपनी शक्ति को छिपाता है, धर्म के चिन्तन में निन्द्रा के वशीभूत जैसा है, उपयोग न लगने से ध्यान नमस्कार आदि से दूर भागता है, उसका मरण बलायमरण है। दर्शन पण्डित, ज्ञान पण्डित, और चारित्र पण्डित के बलायमरण भी सम्भव है। ओसण्णमरण और सशल्यमरण में नियम से बलायमरण होता है। उनके अतिरिक्त भी बलायमरण होता है। जो शल्यरहित विरक्त होकर चिरकाल तक रत्नत्रय का पालन करता है किन्तु मरते समय संस्तर पर आरूढ होकर शुभोपयोग से दूर भागता है, उसके शुभभाव के स्थिर न रहने से बलायमरण होता है।

11) वसट्टमरण – आर्त और रौद्रध्यान पूर्वक मरण को वसट्टमरण कहते हैं। उनके चार भेद हैं इन्द्रियवसट्टमरण, वेदनावसट्टमरण, कसायवसट्टमरण और नोकसायवसट्टमरण। इन्द्रियवसट्टमरण इन्द्रियों के विषयों की अपेक्षा पाँच प्रकार का है। देवों, मनुष्यों, पशु-पक्षियों और अजीवों के द्वारा किये गये, वितत, धन और शुषिर मनोज शब्दों में शब्दों में राग और अमनोज्ञ शब्दों में द्वेष करते हुए मरण होता है। यह श्रोत इन्द्रियवसट्टमरण है। चार प्रकार के आहार में राग या द्वेष करते हुए मरण रसनेन्द्रियवसट्टमरण है। पूर्वोक्तदेव मनुष्य आदि की गन्ध में राग-द्वेष करते हुए मरण घ्राणेन्द्रियवसट्टमरण है। उन्हीं के रूप आकर आदि में राग-द्वेष करने वाले का मरण स्पर्शनद्रियवसट्टमरण है। इस प्रकार इन्द्रिय और मन के वश से होने वाले आर्तध्यानपूर्वक मरण के भेद हैं।

वेदनावसट्टमरण के संक्षेप से दो भेद हैं- सातवेदनावशार्तमरण और असातवेदनावशार्तमरण। शरीरिक अथवा मानिसक दुःख में उपयोग रहते हुए होने वाले मरण को दुःखशार्तमरण कहते हैं। अर्थात् जो दुःख से मोह को प्राप्त हुआ उसका मरण दुःभयशार्तमरण है। तथा शरीरिक अथवा मानसिक सुख में उपयोग रहते हुए हाने वाला मरण सातवशार्तमरण है।

कषाय के भेद से कषायवशार्तमरण के चार भेद होते हैं। अपने में, दूसरे में अथवा दोनों में मारने के लिए उत्पन्न हुआ क्रोध मरण का कारण होता है। वह क्रोधवशार्तमरण है। मानवशआर्तमरण के आठ भेद हैं- कुल, रूप, बल शास्त्र, ऐश्वर्या, लाभ, बुद्धि अथवा जप से अपने को बड़ा मानते हुए हुए मरण होने की अपेक्षा से आठ भेद होते हैं। मैं अति प्रसिद्ध विशाल उच्चकुल में उत्पन्न हुआ हूँ ऐसा मानते हुए होने वाले तेजस्वी और नवयौवन से सम्पन्न है, मेरा रूप समस्त जनता के चित्त को मर्दन करता है, ऐसी भावना होते हुए जो मरण होता है वह रूप वश आर्तमरण है। मैं वृक्ष पर्वत आदि को उखाडने में समर्थ हूँ-लडने में समर्थ हूँ, मेरे साथ मित्रों का बल, है, इस प्रकार बल के अभिमान को धारण करते हुए होने वाला मरण बलमानवश आर्तमरण है। मैं बहुत परिवार वाला हूँ, मेरा शासन बहुतों पर है इस प्रकार ऐश्वर्य के मानसे उन्मत का मारण ऐश्वर्यमान-बशार्त मरण हैं। मैंने लोक, वेद, समय और सिद्धान्त सम्बन्धी शास्त्रों को पढा है इस प्रकार शास्त्रों के मान से उन्मत्त

मरण श्रुतमानवश आर्तमरण है। मेरी बुद्धि तीक्ष्ण है, सब विषयों में उसकी बेरोक गति है इस प्रकार प्रज्ञा के मद से मत्त के मरण को प्रज्ञामानवश आर्तमरण कहते हैं। व्यापार करने पर मुझे सर्वत्र लाभ होता है इस प्रकार लाभ का मान करते हुए होने वाले मरण को लाभ मानवशार्तमरण कहते हैं। मैं तप करता हूँ, तपश्चरण में मेरे समान दूसरा नहीं है। ऐसा संकल्प करते हुए होने वाले मरण को तपमानवशार्तमरण कहते हैं।

माया के पाँच भेद हैं- निकृति, उपधि, सातिप्रयोग, प्रणधि और पतिकुच्चन। दूसरों की गुप्त बातों की खोज में कुशलता, तथा धन अथवा किसी कार्य की अभिलाषा वाले को ठगना निकृति है। समीचीन भाव को छिपाकर धर्म के बहाने से चोरी आदि दोषों में प्रवृत्ति को उपधि नामक माया कहते हैं। अर्थ (धन) के विषय में झगडा करना, अपने पास में रखे द्रव्य को हर लेना, प्रयोजन के अनुसार दोष लगाना या प्रशंसा करना सातिप्रयोग माया है। असली वस्तु में उसके समान नकली वस्तु मिलाना, कमती बढती तोलना, मिलावट के द्वारा द्रव्य का विनाश करना ये प्रणधिमाया है। आलोचना करते समय दोषों को छिपाना प्रतिकुंचन माया है। इस प्रकार के मायाचार पूर्वक होने वाले मरण को मायावशार्त मरण कहते हैं। उपकरणों में, खान-पान के क्षेत्रों में, शरीर में, निवास स्थानों में इच्छा और ममत्व रहते हुए होने वाले मरण को लोभवशार्तमरण कहते हैं। हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद,नपुंसकवेद, और पुरुषवेद को लेकर जिसकी बुद्धि मूढ हो गई है उसका मरण नोकषायवशावर्तमरण है। नोकषायवशार्तमरण से मरा हुआ प्राणी मनुष्य योनि, तिर्चञ्चयोनी, तथा असुर, कन्दर्प और किल्विषजाति के देवों में उत्पन्न होता है। मिथ्यादृष्टि के होने वाला यही मरण बालमरण होता है। दर्शनपंडित, अविरतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत के भी वशार्तमरण होता है। उनका मरण बालपंडित मरण अथवा दर्शनपंडित मरण होता है।

12) पिप्पणास-मरण (13) गिद्धपुट्ठ मरण- पिप्पणास और गिद्धपुट्ट नामक के दो मरण ऐसे हैं जिनका निषेध भी नहीं है अनुज्ञा भी नहीं है। दुर्भिक्ष में, भयानक जंगल में, पूर्वशत्रु का भय होने पर, या दुष्ट राजा का भय होने पर, चोर का भय होने पर तिर्यञ्चकृत उपसर्ग होने पर अकेले सहन करना अशक्य है, या ब्रह्मचर्यव्रत का विनाश आदि दूषण चारित्र में होने पर विरक्त और पाप से डरने वाला

साधु कर्मों का उदय उपस्थित जानकर उसे सहने में असमर्थ होने से उससे निकलने का उपाय न होने पर पाप कर्म करने से डरता हुआ, साथ ही विराधना पूर्वक मरण से डरता हुआ विचारता है इस काल में इस प्रकार के कारण-उपस्थिति होने पर कैसे कुशल रह सकती है, यदि उपसर्ग के भय से डरकर संयम से भ्रष्ट होता हूँ तो संयम से भी भ्रष्ट और दर्शन से भी भ्रष्ट होता है। और बिना संक्लेश के वेदना को सहन कर नहीं सकता। तब मैं रत्नत्रय की आराधना से डिग जाऊँगा, ऐसी निश्चित मति करके सम्यक्त्व और चारित्र में विशुद्ध, धैर्यशाली, ज्ञानी से सहायता लेने वाला वह साधु किसी निदान के बिना अर्हन्त के पास में आलोचना प्रायश्चित लेकर शुभलेश्या पूर्वक श्वासोच्छ्वास का निरोध करता है। उसी विप्पणास मरण कहते हैं। और शस्त्रग्रहण से होने वाले मरण को गिद्धपुट्ठ कहते हैं।

मरण के भेदों का यह प्रदर्शन सर्वत्र कर्तव्य रूप से किया जाता है। किन्तु प्रायोपगमन, इंगिणी-मरण और भक्तप्रत्याख्यान ये तीन ही मरण उत्तम हैं, पूर्व पुरुषों ने इनका पालन किया है। इस प्रकार संक्षेप में पूर्व आगम के अनुसार सतरह मरणों का व्याख्यान यहाँ किया।

5 प्रकार के मरण-

पंडितपंडिरमरणं पडिदयं बालपंडिदं चेव।
बालमरणं चउत्थं पंचमयं बालबालं च।। 26

पण्डितपण्डितमरण, पण्डितमरण, बालपण्डितमरण, चौथा बाल मरण और पाँचवा बाल-बालमरण, ये पाँच मरण है।

व्रती को सल्लेखना धारण करने के उपदेश

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।22।।

वह मारणान्तिक सल्लेखना का प्रीतिपूर्वक सेवन करने वाला होता है।

स्वकीय परिणामों से गृहीत आयु इन्द्रियाँ, बलादि प्राणों का कारणवश क्षय होने को मरण कहते हैं।

अंत का ग्रहण तद्भव मरण की प्रतिपत्ति के लिए हैं। मरण दो प्रकार का है नित्य मरण और तद्भव मरण। प्रतिक्षण स्वकीय आयु की जो निवृत्ति होती है नाश होता है

अर्थात् समय-समय में आयु के निषेक जो उदय में आकर नष्ट होते हैं वह नित्य मरण हैं। भवान्तर प्राप्ति के अनंतर उपश्लिष्ट पूर्व पर्याय का नाश होना तद्भव मरण कहलाता है। इस सूत्र में अंत शब्द का ग्रहण तद्भव मरण को ग्रहण करने के लिये है। मरण अंतः मरणान्तः और मरणान्त जिसका प्रयोजन है वह मारणान्तिक है।

सल्लेखना - अर्थात् भली प्रकार काय और कषाय को कृश करना। लिख् धातु से 'णि' प्रत्यय करने से लेखना शब्द बनता है, उसका अर्थ तनूकरण यानी कृश करना है। बाह्य शरीर और आभ्यन्तर कषायों के कारणों को निवृत्ति पूर्वक क्रमशः भली प्रकार क्षीण करना सल्लेखना है। उस मारणान्तिक सल्लेखना को प्रीतिपूर्वक सेवन करना, धारण करना। इसको सेवन करने वाले गृहस्थ श्रावक होता हे।

'जोषिता' शब्द से यहाँ प्रीतिपूर्वक सेवन करना अर्थ विवक्षित है, अंतरंग प्रीति के बिना जबर्दस्ती सल्लेखना नहीं कराई जाती, जब आत्मा सल्लेखना करने में अपना परमहित समझता है, तभी स्वयं प्रेमपूर्वक उसे धारण करता है।

सल्लेखना से आत्महत्या नहीं-प्रमाद के योग से प्राण-व्यपरोपण को हिंसा कहते हैं। परन्तु सल्लेखना मरण को आत्मवध नहीं कह सकते।

रागादि का अभाव होने से प्रमाद नहीं है। क्योंकि राग-द्वेष और मोह आदि से कलुषित व्यक्ति जब विष, शस्त्र आदि से अभिप्रायपूर्वक अपना घात करता है तब आत्मवध का दोष लगता है, परन्तु सल्लेखना धारी के राग-द्वेषादि कलुषताएँ नहीं है अतः उसके आत्मवध के दोष का स्पर्श नहीं है। अर्थात् समाधिमरण करने वाला आत्मवध के दोष का भागी नहीं है कहा भी है-

रागादीमणुप्पा अहिंसकेत्ति देसिदं समये।
तेसिं चेदुप्पत्ती हिंसेत्ति जिणेहि णिद्दिट्ठा।। 9।।

रागादि की उत्पत्ति नहीं होने को अहिंसा और राग-द्वेष की उत्पत्ति को जिनेन्द्र भगवान् ने हिंसा कहा है।

अथवा मरण तो अनिष्ट होता है। जैसे अनेक प्रकार के पण्य(सोना, चाँदी, वस्त्र आदि वस्तुओं) के लेन-देन, संचय आदि के करने में तत्पर किसी भी दुकानदार को उन उपयोगी वस्तुओं के आधारभूत घर का विनाश इष्ट नहीं है और वह

घर के विनाश के कारणों के उपस्थित होने पर यथाशक्ति वह उन कारणों को दूर करता है, यदि उनका परिहार करना दुःशक्य होता है तो वह उस घर में रखी सोना-चाँदी आदि पण्य वस्तुओं की रक्षा करने का प्रयत्न करता है ; उसी प्रकार व्रत, शील आदि के द्वारा पुण्य के संचय से प्रवर्तमान गृहस्थ भी व्रत आदि के आश्रयभूत शरीर का कभी विनाश नहीं चाहता, शरीर के नाश के कारणों के उपस्थित होने पर अपने गुणों के अविरोध यथाशक्ति संयम के अनुसार इनको दूर भी करता है, फिर भी यदि निष्प्रति अवस्था हो जाती है तो अपने संयम का नाश न हो, संयम आदि की रक्षा हो इसके लिए पूरा प्रयत्न करता है; अतः व्रतादि की रक्षा के लिए किया गया आत्मवध कैसे हो सकता है ?

सल्लेखनाधारी के जीवन और मरण दोनों में आसक्ति नहीं है। जिस प्रकार तपस्वी शीत उष्णजन्य सुख-दुःख को नहीं चाहता और यदि बिना चाहे सुख दुख आ जाते हैं तो वह राग-द्वेष का अभाव होने से सुख-दुःख कृत कर्मों का बंधक नहीं होता है- उसी प्रकार अर्हत्प्रणीत सल्लेखना को करने वाला व्रती जीवन और मरण दोनों के प्रति अनासक्त रहता है, परन्तु यदि मरण के कारण उपस्थित हो जाते हैं राग-द्वेष आदि न होने से उसे आत्मवध का दोष नहीं लगता है।

सल्लेखना आत्मघात क्यों नहीं है ?

मरणोऽवश्यं भाविनि कषाय सल्लेखनातनुकरणमात्रे।
रागदिमंतरेण व्याप्रियमाणस्य नात्मधातोस्ति ।। 77।।

मरण के नियम से उत्पन्न होने पर कषाय सल्लेखना के सूक्ष्म करते मात्र राग-द्वेष के बिना व्यापार करने वाले सल्लेखना धारण करने वाले पुरुष के आत्मध नहीं है।

आत्मघाती कौन है ?

यो हि कषायविष्टः कुम्भजलधूमकेतुविष शस्त्रेः।
व्यपरोपयति प्राणान् तस्य स्यात् सत्यमात्वबंधः।।78।।

निश्चय करके जो पुरुष कषाय से रंजित होता हुआ, कुम्भक, श्वास रोकना जल, अग्नि, विष और शस्त्रों के द्वारा प्राणों को नष्ट करता है उसके आत्मवध वास्तविक में होता है।

सल्लेखना अहिंसा भाव है ?

नीयतेऽत्र कषाया हिंसाया हेतवो यतस्तनुताम्।
सल्लेखनामपि ततः पाहुरहिंसा प्रसिद्धयर्थम्।। 97।।

इस सल्लेखना में हिंसा के कारणभूत कषाय जिस कारण सूक्ष्म किये जाते इसलिये सल्लेखना को भी अहिंसा की प्रसिद्धि के लिए कहते हैं।

सल्लेखना का प्रयत्न कब करना चाहिए ?

जरा, रोग और इन्द्रियों की विकलता के कारण अपनी आवश्यक क्रियाओं व हानि पर सल्लेखना धारण करनी चाहिये। अर्थात् जिस समय व्यक्ति शरीर व जीर्ण-शीर्ण करने वाली जरा से क्षीण-बल वीर्य हो जाता है और वातादि विकारजन्य रोगों के व्याप्त होने से उसकी इन्द्रियों की शक्ति क्षीण हो जाती है तथा वह आवश्यक क्रियाओं के परिपालन में असमर्थ हो जाता है, इन्द्रिय बल के नष्ट हो जाने से मृतक के समान हो जाता है, उस समय बुद्धिमान सावधान व्रती मरण के अनिवार्य कारणों के उपस्थित होने पर प्रासूक भोजन-पान और उपवास आदि के द्वारा क्रमशः शरीर को कृश करता है और मरण पर्यंत अनुप्रेक्षाओं का चिंतन करता हुआ शास्त्रोंक्त विधि से सुल्लेखना धारण करता है, वह उत्तमार्थ का आराधक होता है। अर्थात् जब शरीर और इन्द्रियाँ, व्रतों को पालन करने में असमर्थ हो जाती है तब ज्ञानी व्रती सल्लेखना धारण करता है।

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रूजायां च निःप्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचन माहुः सल्लेखनामार्याः।।

गणधरादिक देव प्रतिकार रहित उपसर्ग दुष्काल, बुढ़ापा और रोग के उपस्थित होने पर धर्म के लिए शरीर छोड़ने को सल्लेखना कहते हैं।

सल्लेखना के अतिचार

जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि। (37)

जीविताशंसा, मरणाशंसा, मित्रानुराग, सुखानुबन्ध और निदान ये सल्लेखना के पाँच अतिचार हैं।

(1) जीविताशंसा – आकांक्षा को आशंसा कहते हैं। आकांक्षण, अभिलाषा

और आशंसा ये एकार्थवाची हैं। जीवन की आकांक्षा करना जीवितशंसा है और मरण की अभिलाषा करना मरणाशंसा है।

अवश्य नष्ट होने वाले शरीर के अवस्थान में आदर जीविताशंसा है, यह शरीर अवश्य त्यागने योग्य है, जल के बुलबुले के समान अनित्य है। ऐसे इस शरीर की स्थिति किस प्रकार स्थिर रखी जाये? कैसे यह बहुत काल तक टिका रहे इत्यादि से शरीर के ठहरने की अभिलाषा जीविताशंसा है, ऐसा जानना चाहिए।

(2) मरणाशंसा– जीवन के संक्लेश के कारण मरण के प्रति चित्त का अनुरोध मरणाशंसा है। रोगादि की तीव्र पीड़ा के कारण जीवन में क्लेश होने पर मरण के प्रति चित्त का प्राणिधान होना मरणाशंसा है। सल्लेखना धारण कर लेने पर भी यदि ख्याति हो रही हो तो जीवन की अभिलाषा करना और शारीरिक पीड़ा के कारण मरने की इच्छा करना जीवितमरणाशंसा है।

(3) मित्रानुराग– पूर्वकृत, मित्रों के साथ धूलि में खेलने आदि का स्मरण मित्रानुराग है। अर्थात् बचपन में जिनके साथ धूलि में खेले है, जिन्होंने, आपत्ति में सहायता दी है और सुख-उत्सव आदि में जो सहयोगी बने है उन मित्रों का स्मरण करना मित्रानुराग है।

(4) सूखानुबन्ध – पूर्वानुभूत प्रीतिविशेष का स्मृतिसमन्वाहार सुखानुबन्ध है। 'मैंने यह खाया, इस प्रकार के पलंग पर सोता था, इस प्रकार क्रीड़ा करता था इत्यादि पूर्व भुक्त क्रीड़ा, शयन, भोग आदि का स्मरण करना सुखानुबन्ध कहा जाता है।

(5) निदान – भोगों की आकांशा से जिसमें चित्त लगा दिया जाता है, वह निदान है। विषय सुख की उत्कट अभिलाषा भोगाकांक्षा है। उस भोगाकांक्षा से जिसमें नियत रूप से चित्त लगा दिया जाता है वह निदान है, अर्थात् भविष्यतकाल में भोगों की वांछा करना निदान है। ये पाँच सल्लेखनाव्रत के अतिचार हैं।

अकाल मृत्यु किनकी नहीं होती ?

औपपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः। (53)

उपपाद जन्म वाले, चरमोत्तम, देह वाले और असंख्यात वर्ष की आयु वाले जीव अनपवर्त्य आयु वाले होते हैं।

उत्पाद जन्म देव-नारकी के होते हैं। इसलिए देव-नारकियों के अकाल मरण नहीं होता है अर्थात् इनकी आयु अनपवर्त्य आयु नहीं है।

'चरम' शब्द अंतवाची है, इसलिये इसी जन्म में निवार्ण के योग्य हो उसका ग्रहण करना चाहिये। चरम-अंत का है शरीर जिनका, वे 'चरम देह' कहलाते हैं। परीत संसारी उसी भव में निर्वाण प्राप्त करने योग्य को चरम शब्द से ग्रहण किया जाता है।

'उत्तम' शब्द उत्कृष्ट वाची है। इससे चक्रवर्ती आदि का ग्रहण होता है। यह उत्तम शब्द उत्कृष्ट वाची है- उत्तम शरीर जिनका हो वे उत्तम देह कहलाते हैं। इस उत्तम शब्द से चक्रवर्ती आदि का ग्रहण करना। पल्यादि के द्वारा गम्य-आयु जिसके है वह असंख्येय वर्षायुष वाले कहलाते हैं। वे उत्तर कुरू आदि भोगभूमि में उत्पन्न होने वाले हैं।

बाह्य कारणों के कारण आयु का ह्रास होना अपवर्त है। बाह्य उपघात के निमित्त विष शस्त्रादि के कारण आयु का ह्रास होता है। यह अपवर्त है अपवर्त आयु जिनके है वे अपवर्त आयु वाले और जिनकी आयु का अपवर्त नहीं होता वे अनपवर्त आयु वाले देव और नारकी, चरम शरीरी और भोगभूमियाँ जीव है-बाह्य कारणों से उसका अपवर्तन नहीं होता।

'चरम' शब्द उत्तम का विशेषण है। चरम ही उत्तम देह जिसका वह चरमोत्तम देह अर्थात् अंतिम उत्तम देह वाले को चरमोत्तम देह कहते हैं।

'चक्रवर्ती आदि को देह उत्तम होते हुए भी जो चक्रवर्ती आदि तद्भव में मोक्ष नहीं जाते हैं उनका अकाल मरण भी शास्त्र में पाया जाता है जैसे-सुभौम चक्रवर्ती, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती, नारायण श्रीकृष्ण आदि की अपमृत्यु हुई है। इससे सिद्ध होता है कि उत्तम शरीर धारी चरम शरीर धारी की अपमृत्यु नहीं होती है।

गोम्मट्टसार कर्मकाण्ड में नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती ने अपमृत्यु के बाह्य कारणों का वर्णन निम्न प्रकार किया है -

विसवेयणरत्तक्खयभयसत्थग्गहणसंकिलेसेहिं।
उस्सासाहाराणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ।। (57)

विष भक्षण से अथवा विष वाले जीवों के काटने से, रक्तक्षय अर्थात् लहू(खून) जिनमें सूखता जाता है ऐसे रोग से अथवा धातुक्षय से, (उपचार से लहू के सम्बन्ध से यहाँ धातुक्षय भी समझना चाहए) भयंकर वस्तु के दर्शन से या उसके बिना भी उत्पन्न हुए भय से, शास्त्रों (तलवार-आदि हथियारों) के घात से, 'संक्लेश' अर्थात् शरीर वचन तथा मन द्वारा आत्मा को अधिक पीड़ा पहुँचाने वाली क्रिया होने से, श्वासोच्छ्वास के रुक जाने से, और आहार (खाना-पीना) नहीं करने से इस जीव की आयु कम हो जाती है। इन कारणों से जो मरण से अर्थात् शरीर छूटे उसे कदली घात मरण अथवा अकाल मृत्यु कहते हैं।

2045 तक कर सकेंगे डीएनए में बदलाव

मौत को मात: मिल गया इंसानों के चिरंजीवी होने का राज

बर्सेलोना नैनो तकनीक के जरिये लोग अब चिरंजीवी बन सकेंगें। इंसानों की मौत अब प्राकृतिक अथवा किसी बीमारी के कारण नहीं होगी, केवल दुर्घटनावश ही व्यक्ति की जान जा सकती हैं। ऐसा वक्त आने में अभी 27 साल और लगेंगे।

दरअसल, हाल ही में 'द डेथ ऑफ डेथ' नाम से प्रकाशित एक शोध में दो आनुवांशिक इंजीनियरों ने दावा किया है कि 2045 तक मनुष्य की मौत सिर्फ दुर्घटनाओं से होगी न कि प्राकृतिक कारणों या बीमारी से।

बर्सेलोना में अपनी पुस्तक के बारे में बात करते हुए शोधकर्ता इंजीनियर जोस लुइस कोर्डेरो (वेनेजुएला) और एमआइटी के गणितज्ञ डेविड वुड (कैंब्रिज) ने कहा कि यह मात्र कल्पना नहीं है बल्कि एक ऐसा सत्य है जो अनुमानित समय से पहले ही साबित हो जाएगा।

नैनो तकनीक का होगा इस्तेमाल – दोनों शोधकर्ताओं का कहना है कि ऐसा नैनो तकनीक की मदद से साबित होगा। इसका इस्तेमाल इंसानों के आनुवांशिक डीएनए में बदलाव लाने के लिए क्रांतिकारी तौर पर सहायक सिद्ध होगा। इसके जरिये कमजोर जीन (पूर्वजों से प्राप्त) को बेहतर बनाया जाएगा।

ऐसे काम करेगी तकनीक

मनुष्य शरीर में माता-पिता में आनुवांशिक तौर पर प्राप्त जीन में से मृत कोशिकाओं को नैनो तकनीक से अलग बाहर निकाला जाएगा। अस्वस्थ कोशिकाओं को उपचार के बाद स्टेम सेल को मजबूत बनाया जाएगा। 3-डी प्रिंटर की मदद से भीतरी अंगों की मरम्मत की जाएगी।

बूढ़े भी हो सकेंगे जवान

मेसाचुसेटस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी में गणितज्ञ शोधकर्ता कोर्डेरों का दावा है कि इन तकनीक का इस्तेमाल कर डीएनए में संशोधन किए जा सकते हैं। संशोधन के जरिए डीएनए संरचना के अंतिम छोर पर क्रोमोसोम में टेलोमेरेसज मौजूद होते हैं। ये उम्र बढ़ाने के लिए जिम्मेदार होते हैं। इनमें से लाल कोशिका और लिंग कोशिका को छोड़कर अन्य सभी कोशिका में 23 जोड़े होते हैं।

समयचक्र के साथ ये संरचनाएं छोटी बड़ी होती है। उसी क्रम में उम्र बढ़ती जाती है। नैनो तकनीक के जरिये इनमें संशोधनकरने से न केवल उम्र का बढ़ना रोका जा सकेगा बल्कि विपरीत क्रम में बूढे भी जवान हो सकेंगे।

गोपनीय परंतु सफल परीक्षण

परीक्षण 2016 में बायोविया दवा कंपनी की सीईओ एलिजाबेथ पैरिस पर किया गया। पैरिस की उम्र करीब 20 साल घटी है और अभी तक कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं है। हालांकि परीक्षण कोलम्बिया में बगैर कानूनी मंजूरी के हुआ।

मेरे अनुभव

सच्ची अच्छी भावना अवश्य फल देती

आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- 1. क्या मिलिए....., 2 आत्मशक्ति)

मेरे कुछ अनुभवों को कर रहा हूँ मैं यहाँ वर्णन।
जिससे अन्य गुणग्राही जन भी करेंगे गुण ग्रहण।। (1)

सच्ची-अच्छी भावनाओं का फल भी मिलते हैं अवश्य।
आगामी भव में तो अधिक मिलेंगे इस भव में भी यथायोग्य।। (2)

कर्म सिद्धान्त व मनोविज्ञान भी इसे मानते है सत्य-तथ्य।
मेरे भी हो रहे अनुभव अनेक बाल्यकाल से अभी तक।। (3)

बाल्यकाल से रही मेरी तीव्रभावना जानने हेतु सत्य-असत्य।
धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप, विश्व-रहस्य से ले आत्म-परमात्म।। (4)

स्व-पर विश्व की मंगलकामना रही है मेरी विद्यार्थी अवस्था से।
इस हेतु मेरी भावना रही है बनूँ मैं नेता वैज्ञानिक या सन्त ।। (5)

इस हेतु मैंने बाल विद्यार्थी अवस्था में लिया हूँ दो दृढ़-प्रतिज्ञा।
आजीवन मैं विद्यार्थी रहूँगा, रहूँगा बालक सम सरल-सहज।। (6)

इसके फल स्वरूप मैं विद्यार्थी अवस्था से पढ़ा रहा हूँ निःशुल्क।
विद्यार्थी-साधु-साध्वी वैज्ञानिक प्रोफेसर्स जैन -अजैन आदिक।। (7)

इससे प्रेरित होकर मैं अध्ययन कर रहा हूँ देशी-विदेशी साहित्य।
धर्म-दर्शन-विज्ञान-गणित-मनोविज्ञान तर्क से ले आयुर्वेद।। (8)

इस हेतु अनेक देशी-विदेशी भाषाओं का भी कर रहा हूँ अध्ययन।
आधुनिक वैज्ञानिक शोध परिज्ञान हेतु देख रहा हूँ (T.V.) वैज्ञानिक चैनल।।(9)
इसके फल स्वरूप हो रहे साहित्य सृजन तथाहि प्रकाशन।
इसका अध्ययन तथा शोध कार्य कर रहे हैं विभिन्न विद्यार्थी गण।।(10)

देश-विदेशों में मेरे वैज्ञानिक शिष्य कर रहे हैं धर्म प्रचार।
स्वेच्छा से भक्त जन कर रहे हैं दान-सहयोगादि हर प्रकार।। (11)

जैन एकता व विश्वशान्ति हेतु कर रहे हैं देश-विदेशों में काम।
विश्वधर्म संसद से ले अनेक देशों में कर रहे हैं स्वेच्छा से काम।। (12)

दिगम्बर-श्वेताम्बर जैन कर रहे हैं चातुर्मास से ले उक्त भी काम।
हिन्दूराजा भी चातुर्मास हेतु कर रहे हैं निवेदन व सहयोग।। (13)

''गायत्री परिवार'' व ''संघ परिवार'' व ''नारायण सेवा संस्थान'' सहयोगी।
''अखिल भारतीय जैन एकता संस्थान'' भी कर रहा है चातुर्मास आदि।। (14)

छोटे-छोटे ग्राम नन्दौड चितरी आदि में एक-एक परिवार द्वारा।
हो रहे हैं चातुर्मास और भी अनेक परिवार द्वारा चातुर्मास हेतु निवेदन।।

गुरुभक्त-ऊर्जावान्-नितिन द्वारा सीपुर में आजीवन चातुर्मास हेतु सत्याग्रह।
ऐसी ही भावना भूपेश द्वारा भी तथाहि सहयोगी मण्डल द्वारा ।। (15)

सागवाड़ा ''(राजचन्द्र) आश्रम कोबा'' व ऋषभ जैन का भी निवेदन चातुर्मास हेतु।
धर्मतीर्थ आदि में प्रायः दो सौ चातुर्मास हेतु निवेदन भक्त शिष्य द्वारा ।। 17)

ब्रह्मचारी खुशपाल-आशादेवी-संध्या, मणिभद्र, दीपेश, मयंक, मधोक।
खेतानी परिवार व अनेक गुप्तदानी कर रहे है सेवा-दानादि अनेक।। (18)

एकान्त-मौन-निस्पृह-निराडम्बर-आत्म साधना प्रभावना की भावना।
हो रही है स्वयंमेव सफल अनुभव-प्रयोग से ये सभी जाना।। (19)

सच्ची-अच्छी भावना-साधना से जब होती है आत्मा की उपलब्धि/(मुक्ति)
उक्त सभी कार्य होना प्राथमिक फल है, 'कनक' का लक्ष्य आत्मोपलब्धि।। (20)

आधुनिक हिंदी कविता की दुर्दशा से चिन्तित होकर मैंने।
गुप्तिनंदी-क्षमाश्री(1992) को सही कविता सृजन हेतु किया था प्रेरित।।

मेरी यह तीव्र भावना सीपुर (2011) से हो रही सफलीभूत।
अभी तक अट्ठासी (88) गीताञ्जलियाँ हो गई है प्रकाशित।।

सागवाड़ा दि. 28.05.2018 अपराह्न 06:28

जीवन वैसा ही होता है जैसा आप उसे बनाते हैं

सैम्युएल स्माइल्स एक स्कॉटिश लेखक और गवर्नमेंट रिफॉर्मर थे। उनका मानना था कि ज्यादा तरक्की नए रवैये से मिलती है, नए नियम लागू करने से नहीं।

जन्म : 23 दिसम्बर 1812 निधन 16 अप्रैल 1904

बिना संघर्ष किए जीवन का युद्ध जीतना, बिना इज्जत की जीत की तरह हैं। कठिनाइयों के बिना सफलता नहीं मिलती। संघर्ष नहीं है, इसका मतलब पाने के लिए भी कुछ नहीं है।

खुशी की एक आदत होती है। चीजों के अच्छे और बुरे पहलू देखने की भी आदत होती है।

उम्मीद साथी है ताकत की और सफलता की जननी भी है। जो उम्मीद करता है उसी में जादू समाहित होता है।

सरकार की ही तरह शादी भी समझौतों की श्रृंखला ही है। इसमें देना, लेना, सुधारना, धैर्य, सहना,नियंत्रण ये सब चलता रहता है।

ये तय है कि ईमानदार व्यक्ति बेईमान व्यक्ति की तरह तेजी से धन नहीं कमा पाता। लेकिन बिना अन्याय और धोखा दिए जो सफलता मिलती हैं, वही सच्ची सफलता है।

जीवन वैसा ही होता है जैसा आप उसे बनाते हैं।

आपका चरित्र भी आपकी सम्पत्ति है।

आत्म-सम्मान ही वो महानतम पोषाक है जिसे व्यक्ति पहन सकता है। ये ऐसा शुद्ध अहसास है जिससे दिमाग प्रेरित होता हैं।

उम्मीद सूरज की तरह है। जैसे ही हम उसकी तरफ बढ़ते हैं, परछाई पीछे छूट जाती है।

ये मानना गलत है की आदमी सफल होकर सफलता पाता है। सच तो ये है कि वो असफल होकर ही सफलता प्राप्त करता है।

कविता रचना से स्व-पर बहुविध लाभ

(कविता रचना से वृद्धि हो रही है मेरी रचनात्मकतायें/(क्षमतायें)

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- आत्मशक्ति से.....क्या मिलिए.....)

कविता रचना से मुझे हो रहे लाभ-तथाहि अन्य को बहुविध लाभ।
जब (2011) से कविताओं की भी हो रही रचना, तब से बढ़ रही मेरी क्षमता।। (1)

संश्लेषण-विश्लेषण भी शक्ति बढ रही, समीक्षा-समाधान की शक्ति बढ़ रही।
अध्ययन-अध्यापन में रूचि बढ रही कम बोलने की आवश्यकता हो रही है।। (2)

संक्षेप व मधुरता से अध्यापन हो रहा, शोध-बोध-समन्वय लेखन हो रहा।
बढ रहा है संगम कला व साहित्य का, तथाहि धर्म दर्शन विज्ञान/(आध्यात्मिक)।।(3)

कल्पना की शक्ति मेरी बढ रही अधिक, गद्यलेखन से भी पद्य रचना में अधिक।
लालित्य-गूढ-गंभीर शब्द से ले भाव, उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हो रहे अधिक।। (4)

धर्म-दर्शन-विज्ञान-कानून-गणित,पर्यावरण से ले विश्व के अनेक तथ्य/(सत्य)।
नीति-नियम-सदाचार-शिक्षा व संस्कृति, भाषा व विकृति आदि की बनी कृति।।(5)
गद्य में जो अरूचिकर अयोग्य लगता, पद्य में वो ही विषय भी रूचिकर लगता।
मेरे लक्ष्य अनुभव लिखूँ सहजता से, गद्य में न लिख पाता सहज-सरलता से।। (6)

गायक से श्रोताओं को हो रहे लाभ, आनन्द से विषयों का हो रहा अधिगम।
मन होता एकाग्र व तनाव होता दूर, अधिक समय तक अध्ययन करते प्रचुर।।(7)

अनेक विषयों का ज्ञान होता एक साथ, अभूतपूर्व-महत्वपूर्ण-साहचर्य तथ्य।
सरलता से भी स्मरण-मनन भी करते, विविध शिक्षा प्रेरणा से प्रमुदित होते।। (8)

स्वाध्याय-प्रवचन व शंका-समाधान में, आरती-पूजा-प्रार्थना-वन्दना-प्रतिक्रमण में।
कर रहे प्रयोग मेरी विविध कवितायें, आहार-विहार में लाभ अनेक लेते हैं। (9)

ज्ञानदानी भी दान देते स्वेच्छा से, प्रकाशित होकर पहुँचती साधु संघ में।
प्रायः शताधिक गीतञ्जली हो रही सृजित, स्व पर हित हेतू 'कनक' प्रयत्नशील।।10।।
सागवाड़ा 2.6.2018 रात्रि 10:14

म्यूजिक थैरेपी

गुनगुनाते रहोगे गाना तो डॉक्टर के नहीं पड़ेगा जाना

एक ताजा शोध के अनुसार यदि आप दिन में कुछ ना कुछ गुनगुनाते रहते हैं तो आपको डॉक्टरों की शरण कम लेनी पड़ेगी। जर्मनी में हुई एक रिसर्च तो यही कहती है-

न्यूयार्क के मशहूर चिकित्सक डॉ. एडवर्ड पोडोलास्की ने भी अनेकों प्रयोगों से स्वास्थ्य पर पढ़ने वाली सूक्ष्म प्रतिक्रियाओं का गम्भीर अध्ययन किया। उन्होंने लिखा है कि गाने से रक्त परिवहन में तीव्रता आती है, शिराओं में नवजीवन का संचार होता है। शरीर के विषैले पदार्थ व मल दूर होते हैं।

शरीर को मिलता आराम

गाना गाते या सुनते समय प्रेरणा देने वाले हार्मोन 'डोपामाइन' और खुशी के हार्मोन 'एंडोर्फिन' पैदा होता है। रिसर्च के मुताबिक किसी संगीत को गाते हुए सुनना एक खास तरह का एहसास पैदा करता है। इससे लोगों को सुरक्षा का एहसास होता है और पूरा शरीर फीलगुड महसूस करता है।

एक्सरसाइज के समान

गाने के दौरान श्वास नियम से अंदर-बाहर आती-जाती है। इससे खून में ऑक्सीजन भरपूर मात्रा में पहुंचती है और वहां से उन अंगों तक जाती है जिन पर काम का बोझ ज्यादा होता है। फायदा तब भी होता है जब आप बैठकर भी गाएं।

मिलती पॉजीटिविटी

जब लोग एक साथ कोरस में गाते है तो शरीर में ऐसे रसायन पैदा होते हैं जो लोगों से जुडने का, उन्हें अपना मानने का एहसास कराते हैं। मन के मैल दूर होते हैं और पॉजिटिव एनर्जी आती है।

प्रतिरोधी क्षमता में सुधार

भजन गाने से इम्यूनिटी में सीधे तौर पर सुधार देखा गया है। इससे शरीर को रोगाणुओं से बचाने वाले लिम्फेटिक सिस्टम को ताकत मिलती है। रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ने से लगभग हर तरह के वाइरस, बैक्टीरिया दूर रहते हैं। यही नहीं इससे ब्लड प्रेशर और एंजाइटी भी काबू में रहती है।

बढ़ता फेफड़ों का पावर

गाने से फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ती है, बॉडी पॉश्चर सुधरता है। सांसों के नियम से श्वसन मार्ग और इसकी सूक्ष्म नलियां साफ होती है, जिससे साइनस का खतरा कम होता है। दिमाग को भी पर्याप्त मात्रा में आक्सीजन मिलने से उसकी अलर्टनेस बढ़ती है।

एक वादा करें....

और आप पहाड़ों को हिला देंगे!

यह कौन-सी शक्ति है, मैं नहीं जानता, मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि इसका अस्तित्व है और यह सिर्फ तभी उपलब्ध होती है जब मनुष्य उस मनःस्थिति में होता है, जब वह ठीक से जानता है कि उसे क्या चाहिए और उसे पाने के लिए वह पूरी तरह से तब तक कृत-संकल्प रहता है, जब तक कि वह उसे पा नहीं लेता.

एलेक्जेंडर ग्राहम बॅल

मैं अब तक यही सोचता था कि मैं जानता हूँ कि दृढ संकल्प और दुराग्रह क्या होते हैं-पूरी शक्ति से प्रयत्न करना, बार-बार प्रयत्न करना-किन्तु मुझे इन शब्दों का सही अर्थ तब तक समझ में नहीं आया था, जब तक कि मैंने एक छोटी-सी पेपर बॅक पुस्तक अपनी इच्छित हर वस्तु को अवश्य पाने का परम रहस्य, जिसके लेखक हैं माइक हर्ने नहीं पढ़ी थी.

वचनबद्धता ही उस परम रहस्य का सार है. लेखक की राय में, अपनी इच्छित वस्तु को पाने की कुंजी है, ''हर सम्भव कार्यों को करने के लिए तत्पर रहना ताकि अपने लक्ष्य को हम पा सकें. इससे पहले कि आपका दिमाग निर्णयों पर झपट

पड़े, मैं अपने कहे वाक्य ''चाहे जो हो, करने को तत्पर रहना में से सारे अवैध, अनीतिपूर्ण और दूसरों को हानि पहुँचानेवाले कार्यों को निकालना चाहूँगा.

वो, अब मेरे कहे ''तत्पर रहना'' का यथार्थ में, क्या अर्थ होता है ? दरअसल में यह एक मनोस्थिति है जो कहती है :

यदि अपना लक्ष्य पाने में मुझे 5 कदम उठाने हैं, तो मैं उन्हें उठाऊँगा.

यदि उसके लिए 55 कदम चलना हे, तो मैं चलूँगा.

यदि 155 कदम उठाकर, मुझे अपना लक्ष्य प्राप्त होता है, तो मैं वे 155 कदम उठाऊँगा.

यह सच है, आरम्भ में हमें अक्सर पता नहीं होता कि हमें अपना लक्ष्य पाने के लिए कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ेंगी. पर इससे फर्क नहीं पड़ता. सफलता पाने के लिए जो भी आवश्यक होगा, उसे करने का हम आरम्भ में ही वादा करते हैं, और फिर, सीढ़ियों की परवाह किए बगैर हम आगे की ओर चल पड़ते हैं. अब इसमें दुराग्रह कहाँ मेल खाता है ? दुराग्रह वह क्रिया है जो प्रण-प्रतिबद्धता के पीछे-पीछे चला आता है अर्थात् पहले आपको कोई वादा करना होगा, फिर उसे पाने के लिए दृढ़ बने रहना होगा. एक बार आपने अपने लक्ष्य को पाने का प्रण कर लिया, फिर उसे पाने के लिए आपको निष्ठुर और निश्चयी बनकर तब तक क्रियाशील बने रहना होगा, जब तक कि आप अपना निर्धारित लक्ष्य पा नहीं जाते.

वचनबद्धता का ''चमत्कार''

जब हम कोई प्रतिज्ञा करते हैं और उसे पाने के लिए हर-सम्भव प्रयत्न करने को तत्पर हो जाते हैं, तो स्वयमेव उन परिस्थितियों और व्यक्तियों को आकर्षित कर लेते हैं जो कार्य-सिद्धि के लिए आवश्यक हैं. जैसे, यदि आप एक सर्वाधिक बिकने वाले लेखक बनना चाहते हैं, तो बहुत सम्भव है आपकी किसी विक्रय अधिकारी में सहसा भेंट हो जाए अथवा आप किसी टेलीविजन कार्यक्रम की खोज कर बैठें जो आपको उसी विषय पर मूल्यवान सलाह दें.

ऐसा नहीं हैं कि ये साधन पहले अस्तित्व में नहीं थे. बात सिर्फ इतनी है कि अब आपका दिमाग उन्हें खोज निकालने में केन्द्रित हो गया है. एक बार हम जिस

वस्तु के प्रति प्रतिबद्ध-वचनबद्ध हो जाते हैं, फिर उसका मानस-चित्र अपने दिमाग में अंकित कर लेते हैं कि उसे पाकर कैसा लगेगा. फिर दिमाग काम में लग जाता है, जैसे चुम्बक,अन्य समधर्मी वस्तुओं और घटनाओं को चुनने लगता है, ताकि आपके मानस चित्र को यथार्थ में बदला जा सकें. यहाँ इसका बोध आवश्यक है कि यह कोई एक रात की क्रिया नहीं है. इसके लिए हमें निरन्तर सक्रिय रहना पड़ेगा ताकि अवसरों को आते ही पकड़ा जा सके.

प्रतिबद्धता के सम्मोहन के बारे में श्री डब्लू. एच.मर्रे के अलावा और कोई भी इतने प्रांजल और सटीक रूप से नहीं बतला सकेगा, जैसा कि वे अपने इन शब्दों में कहते हैं :

जब तक कि व्यक्ति प्रतिबद्ध नहीं होता, उसके मन में हिचक बनी रहती है, लौट जाने की भी सम्भावनाएँ होती हैं, प्रभावहीन भी रहता है, सर्जन और पहल करने की शक्ति से सम्बन्धित सभी कार्यों के पीछे भी एक ही मूल सच्चाई रहती है जिसके अज्ञान से अनेकों विचारों और भव्य योजनाओं का दम घुट जाता हैः और जिस क्षण कोई स्वयं से वादा करता है, उसी क्षण से विधाता का विधान भी आरम्भ हो जाता है.

''किसी भी सहायता के लिए सभी प्रकार के कार्य होने लगते हैं, जो शायद कभी घटित नहीं होते. निश्चय करते ही, पक्ष के सारे अनुग्रह और अकल्पनीय घटनाएँ और मुलाकातें तथा आर्थिक सहायता उसे ऐसे मिलने लगती हैं, जिसकी कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी.

प्रयत्न तभी अपना पूरा उपहार देते हैं जब व्यक्ति उसे छोड़ने से इन्कार कर देता है.

नेपोलियन हिल

दरवाजे खुल जाएँगे

वचनबद्धता की शक्ति के एक और चमत्कार के बारे में बतलाना चाहूँगा : आपको आरम्भ ही में जानना जरूरी नहीं है कि आप अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त करें. ठीक है, यदि आप इसे जान लेंगे तो आप आक्रमण की अच्छी तैयारी कर सकेंगे, पर आवश्यक नहीं है कि योजना के हर सोपान का पहले से नक्शा बनाया जाए.

असल में जब आप हर सम्भव प्रयत्न करने का निश्चय कर लेते हैं तो ''सही'' कदम आपको अकस्मात, अपने आप, दिखने लगते हैं.आप उन लोगों से मिलते हैं, जिनसे मिलने की आपने कभी योजना भी नहीं बनाई थी. आपके लिए दरवाजे, स्वयमेव खुलने लगते हैं. प्रतीत है जैसे सौभाग्य और दैव आप पर मुस्करा रहे हों. सच तो यह है कि आपने ये सारी सकारात्मक घटनाएँ, वचनबद्धता के कारण निर्मित की हैं और इस प्रकार से अपने मस्तिष्क को, उन्हें खोजने का आदेश दिया.

यहाँ मैं उस बात का दृष्टान्त दूँगा कि मेरे लिए दरवाजा अपने आप कैसे खुल गया. सन् 1989 की बात है जब मैंने प्रेरणात्मक लेखन आरम्भ किया था. मैंने रचनात्मक-सकारात्मक दृष्टिकोण और उसके प्रभाव के सशक्त सिद्धान्तों के बारे में अध्ययन किया था और इस ज्ञान को औरों के साथ बाँटने को प्रतिबद्ध था ताकि वे भी इसका लाभ उठा सकें. पर मुझे जरा भी अन्दाज नहीं था कि कहाँ से आरम्भ करूँ. मैं अपने लेखों को क्या अखबारों को भेजूँ...उन्हें पत्रिकाओं को भेजूँ....अथवा स्वयं की एक पुस्तक लिखूँ ?

सबसे पहले मैंने अपना एक लेख उन लोगों की पत्रिका में भेजा जो मानव संसाधन और उनके प्रशिक्षण से जुड़े थे. वह लेख सन् 1990 की गर्मियों में प्रकाशित हुआ. उसके कुछ महीने बाद मुझे एक स्टुअर्ट कामेन नाम के सज्जन का फोन आया जो स्वतंत्र लेखन करते थे और एक व्यावसायिक उत्पाद बनानेवाली कम्पनियों के न्यूज-लेटर्स, गृह पत्रिकाएँ भी प्रकाशित करते थे. स्टुअर्ट ने मुझे बतलाया कि उसने मेरा लेख अपने श्रेष्ठ मित्र के घर में पढ़ा था और उससे बहुत प्रभावित हुआ था.

उसने मुझसे पूछा, ''क्या आपने कभी 'गृह-पत्रिका' लिखने की बात सोची है ?'' स्पष्ट है, मैंने कभी भी अपनी स्वयं की गृह पत्रिका के प्रकाशन के बारे में नहीं सोचा था. हमने एक मुलाकात नियत की और स्टुअर्ट ने मुझे समझाया कि हम लोग मिलकर, किस प्रकार से, एक गृह-पत्रिका प्रकाशित कर सकते हैं ताकि ये स्व-प्रेरणा के सिद्धान्त हजारों व्यक्तियों को उपलब्ध हो सकें.

एक माह बाद ''जीवन-दृष्टि ही सर्वस्व है'' नामक गृह-पत्रिका का पहला अंक प्रकाशित हुआ. और इसके बाद हम अगले 20 वर्षों तक और सबल बनते

चले गए तथा हमने सैंकड़ों हजार लोगों को इसके द्वारा जीवन में बदलाव लानेवाली जानकारी दी!

पर यह सब हुआ कैसे ? मैं प्रतिबद्ध था कि इन सिद्धान्तों को मैं औरो के साथ बाटूँगा. मेरा दृष्टिकोण सकारात्मक था. मैंने लिखना आरम्भ किया. और फिर, एक पूर्ण अजनबी स्टुअर्ट कामेन, मेरी जिन्दगी में आया- एक ऐसा व्यक्ति जो मेरे सपनों को साकार करना जानता था.

ओह! वचनबद्धता का चमत्कार !

एक चेतावनी

इससे पहले कि आप बहुत उत्तेजित होकर नाचते हुए सरलता से अपने लक्ष्य की ओर दौड़ पडें, मैं आपको सावधान करना चाहूँगा. दृढ़ प्रतिबद्धता के बावजूद आपका पथ सुहावना नहीं होगा. जीवन बार-बार परखेगा कि आप अपने लक्ष्य को पाने के प्रति कितने गम्भीर हैं. अड़चनें आएँगी. आप गल्तियाँ भी करेंगे और असफलताओं और प्रत्यावर्तन, सॅटबेक - भी भोगेंगे, जिनमें के कुछ, अधिक गम्भीर भी हो सकते हैं और आपको अपना लक्ष्य बदलने को प्रेरित कर सकते हैं।

ऐसे में हमें विन्स्टन चर्चिल की साधु-वाणी का अनुगमगन करना चाहिए जो कहती है, ''कभी नहीं, कभी नहीं, कभी भी नहीं छोड़ो,'' अथवा जेम्स जे. कार्बेट की सलाह माननी चाहिए, ''हम एक और चक्र मुकाबला करके चॅम्पियन -विजेता- बन जाते हैं, जब आसार मुश्किल हों, हमें एक और चक्र भिड़ना चाहिए.''

यदि आपने किसी लक्ष्य की पूरा करने की प्रतिज्ञा ली है. तो आपक अस्थायी पराजयों से उबर सकते हैं...और आप विजयी होंगे!

एक प्रतिबद्ध व्यक्ति का मोल उन 100 लोगों से अधिक होता है, जिन्हें सिर्फ रुचि है. - *मॅरी क्राउले*

जीवन-दृष्टि ही सर्वस्व है

वो जिंदगी में सफल है आज ...

ऐसा क्यों होता है कि कुछ लोग जिंदगी में ज्यादा सफल होते हैं, जबकि कुछ

लोगों को जीवन में सफलता हासिल करने के लिए भारी मशक्कत करनी पड़ती है।

हम अक्सर किसी भी व्यक्ति की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाते हैं कि उसके पास कितना बड़ा घर है, कितना आलीशान बंगला है. वो कितनी ब्रांडेड चीजें इस्तेमाल करता है। आपने उनकी सफलता देखी है, आप उनकी तरह सफल भी होना चाहते हैं कि तो आपको उनकी सफलता की यात्रा भी जाननी होगी। उन्होंने सफलता प्राप्त करने के लिए कितनी कड़ी मेहनत की है। आखिर सफल लोग जिंदगी में ऐसा क्या करते हैं कि सफल हो जाते हैं ? फिर ऐसा क्यों होता है कि कुछ लोग दूसरों की तुलना में ज्यादा सफल होते हैं ? आप केवल यह न देखें कि उन्होंने जिंदगी में क्या हासिल किया है, अगर आपको उनसे प्रेरणा लेनी है और उनकी तरह ही सफलता हासिल करनी है तो फिर आपको उन तमाम मुश्किलों के लिए तैयार रहना होगा, जो उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान कहीं न कहीं झेली हैं। आप छोटी सी तितली से भी यह सीख ले सकते हैं, जब वह कोकून में होती है तो बाहर आने के लिए उसे काफी मशक्कत करनी पड़ती है। जानें, सफलता हासिल करनेवालों की कुछ खास बातें-

वह सपने देखते हैं

वॉल्ट डिजनी के नाम से भला कौन अनजान है। उनका मानना था कि यदि आप किसी चीज का सपना देखते हैं तो उसे हासिल भी कर सकते हैं। अधिकतर लोग लकीर के फकीर बनने में भरोसा करते हैं, वे अपने कम्फर्ट जोन से बाहर नहीं आना चाहते लेकिन सफल व्यक्ति सपना देखने की हिम्मत करते हैं। वह जांच-परख कर रिस्क लेते हैं और अपने सपने को पूरा करते हैं। अब्दुल कलाम ने भी कहा था, सपने वो नहीं होते, जो आप सोते हुए देखते हैं। सपने वो होते हैं, जो आपको सोने नहीं देते।

हमेशा सकारात्मक रहते हैं

आप कभी सफल नहीं हो सकते, अगर आप यह सोचते हैं कि सफलता कभी हासिल नहीं की जा सकती। एक सकारात्मक व्यक्ति को हमेशा यही लगता है कि कोई न कोई रास्ता हमेशा है और आखिर में हमेशा कामयाबी मिलेगी। याद रखें,

नकारात्मक विचारों को पाल-पाल कर आप स्वयं के सबसे बड़े दुश्मन बन जाते हैं। आप चीजों पर फोकस करने की बजाय यह सोचने लगते हैं कि ऐसा हो ही नहीं सकता। सबसे जरूरी बात, आप वही हासिल करेंगे, जिसकी आप जरूरत समझेंगे।

वह दूर की सोचते हैं

सफल व्यक्ति हमेशा यह जानते हैं कि क्या हो रहा है और क्या होने वाला है। उनके पास उनकी जिंदगी की एकदम साफ-साफ तस्वीर होती है। वे जानते हैं कि उनकी जिंदगी आने वाले कुछ सालों में कहां होगी और उन्हें क्या हासिल करना है। क्या आप भी जब आंखें बंद करते हैं तो आपकी आंखों के आगे भी आपकी जिंदगी की एकदम साफ तस्वीर नजर आती है ?

मेहनत का विकल्प नहीं

आप किसी भी सफल व्यक्ति को देखकर यही सोचते होंगे कि अमुक व्यक्ति इसीलिए सफल हुआ क्योंकि उसके भाग्य ने उसका साथ दिया लेकिन यह कभी न भूलें, यह भाग्य उन्होंने अपने पुरुषार्थ से पैदा किया था। वे मानते हैं कि अगर कड़ी मेहनत की जाए तो भाग्य की कोई जरूरत ही नहीं है। ऐसे लोग अपने भाग्य का निर्माण खुद ही करते हैं।

वह फोकस रहते हैं

सफल व्यक्ति वो सभी कदम उठाते हैं, जो उन्हें ट्रैक पर रखने के लिए जरूरी हैं। वे ऐसी हर चीज से दूर रहते हैं जो उनका ध्यान भटकाती हैं। वे कोई बहाना नहीं बनाते। वे कोई काम हाथ में लेते हैं और उसे तब तक करते ही रहते हैं, जब तक उन्हें इच्छित सफलता हासिल नहीं हो जाती।

विफलता से डर नहीं

स्टीव जॉब्स ने एक बार कहा था कि मौत के डर ने ही उन्हें जिंदगी में कभी विफल न होने की प्रेरणा दी। सफल व्यक्ति कभी विफलता से नहीं डरते। वे विफलता को स्वीकार करते हैं और आगे बढ़ते हैं। कोई भी परिस्थिति हो, वे हार नहीं मानते। वह गलतियों से सीखते हैं।

वह पैशनेट होते हैं

वह जिंदादिल होते हैं। जब वे अपने काम या अपनी जिंदगी के बारे में बात करते हैं तो उनका चेहरा चमक उठता हैं। वे जो चीजें कर रहे होते हैं, उनसे उन्हें प्यार होता है। वे अपने काम, अपने परिवार और अपनी जिंदगी, से बेहद लगाव रखते हैं यानी वे हर उस चीज की परवाह करते हैं, जो उनकी जिंदगी का हिस्सा है। उन्हें जिंदगी में कभी मायूस होकर बैठना पंसद नहीं है।

जिंदगी से सीखते हैं

सफल व्यक्ति उस शख्स के साथ आज रहने से इनकार कर देते हैं, जिसके साथ वे कल थे। वह काम में अपने आप में, रिश्तों में, ज्ञान में, आध्यात्मिकता में और ऐसी ही कई चीजों में हमेशा आगे बढ़ते रहते हैं। वे जानते हैं कि उनके शहर, देश और दुनिया में कब और कहां क्या-क्या हो रहा है। वह हमेशा नया जानने की कोशिश करते हैं।

हॉबीज अद्भुत ढंग से आपकी प्रॉडक्टिविटी को बढ़ा सकती हैं, इससे क्रिएटिविटी के साथ फोकस भी बढ़ता है

वर्क परफॉर्मेंस को वैज्ञानिक तरीके से बेहतर बनाएंगी आपकी हॉबीज

हॉबीज को अक्सर वक्त गुजारने का जरिया माना जाता है लेकिन साइंस के मुताबिक आपकी हॉबीज अद्भुत ढंग से आपकी प्रॉडक्टिविटी को बढा सकती हैं। असल में रिसर्च बताते हैं, म्यूजिक से लेकर रीडिंग, स्पोर्ट्स तक जिस भी काम को आप शौकिया तौर पर करते हैं वह आपकी वर्क परफॉर्मेंस को बेहतर बना सकता है। ऐसा करना न सिर्फ आपको क्रिएटिव बनाता है बल्कि सोचने की क्षमता को भी विस्तृत बनाता है। विज्ञान के मुताबिक अपनी दिलचस्पी के कामों को करने पर आप रिलेक्स होकर महत्वपूर्ण कामों पर फोकस करने की ऊर्जा जुटा पाते हैं। जानिए कैसे आपकी हॉबीज आपको बेहतर परिणाम दे सकती हैं-

कुकिंग

सेल्फ हेल्प एक्सपर्ट टिम फेरिस को कुकिंग उनकी राइटिंग स्किल्स को बेहतर बनाने में मदद देती हैं। फेरिस कुकिंग को प्रभावी लर्निंग के तरीकों में शामिल करते हैं। जोंस हॉपकिंस यूनिवर्सिटी की रिसर्च के मुताबिक कुकिंग करना डाइट को बेहतर बनाने का प्रमाणित तरीका है। नियमित रूप से किए जाने पर यह आपको शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ बनाती हैं।

एक्सरसाइज

फिटनेस को बेहतर बनाना काम में अद्भुत ढंग से बेहतरी लाता है। एक्सरसाइज के अलग-अलग प्रकार मानसिक व शारीरिक सेहत के लिए फायदेमंद साबित हुए हैं। हावर्ड मेडिकल स्कूल की रिपोर्ट के मुताबिक एक्सरसाइज मांसपेशियों की ताकत व फ्लेक्सीबिलीटी को बेहतर बनाती है। मानसिक सेहत के लिए भी फायदेमंद है। काम के दौरान यह आपके फोकस और ऊर्जा को बरकरार रखेगी।

टीम स्पोर्ट्स

अगर आपकी कंपनी में टीम स्पोर्ट्स की सुविधा हैं तो उसमें जरूर शामिल हो। इससे न केवल फिटनेस बेहतर होगी बल्कि आपके सहकर्मियों के साथ संबंध भी अच्छे होंगे। अगर ऑफिस में यह सुविधा न हो तो दूसरी जगहों पर इसकी तलाश करें। समान दिलचस्पी वाले लोगों के साथ नेटवर्किंग करें ताकि आप खेलों में हिस्सा ले पाएं। इससे कम्यूनिकेशन, फोकस और गोल सेटिंग स्किल्स भी बेहतर होंगी।

रीडिंग

साइंस के मुताबिक पढ़ना आपके न्यूरल पाथवेज को मजबूत बनाता है। एक अध्ययन में पाया गया कि जो लोग सोने से पहले कोई किताब पढ़ते थे उनके दिमाग का वह हिस्सा ज्यादा एक्टिव पाया गया जो लैंग्वेज व इंटेलिजेंस से जुड़ा था। हालांकि अब लेक्चर्स व ऑनलाइन रिसोर्सेज अप टू डेट इंफॉर्मेशन के बेहतरीन टूल्स है लेकिन किताबों जैसी नॉलेज का कोई विकल्प नहीं है।

आर्ट

अल्बर्ट आइंस्टीन जब भी मुश्किल परिस्थिति में फंसते तो वे म्यूजिक का सहारा लेते। इससे वे अपनी परेशानी का हल भी खोज लेते थे। रिसर्च के बीच आइंस्टीन वायलिन या पियानों की प्रैक्टिस के लिए भी समय निकालते थे। कई शोधों में यह प्रमाणित हो चुका है कि वर्कप्लेट पर आर्ट का इस्तेमाल प्रॉडक्टिविटी को बढ़ा देता है। ऐसे में अपनी रुचि की आर्ट में क्लासेज लेना काम की ऊर्जा को बढ़ाएगा।

सफल होना है तो दिखो मूर्ख, रहो बुद्धिमान

बैरन डे मॉन्टेस्क्यू फ्रांस में पैदा हुए थे। इन्हें मॉन्टेस्क्यू कहकर भी पुकारा जाता था। इन्हें मैन ऑफ लेटर्स कहा जाता था। एक पॉलिटिकल फिलॉसफर भी थे।

महान् बनने के लिए लोगों के साथ खड़े रहें, उनके ऊपर नहीं।

हमें तीन बार शिक्षा मिलती हैं, एक तो माता-पिता से, दूसरी स्कूल मास्टर से और तीसरी दुनिया से। पहली दो में जो सिखाया जाता है, तीसरी उनका खंडन करती है।

कानून मौत की तरह होने चाहिए, जो किसी को न बक्शें।

बेकार के कानून जरूरी कानून को भी कमजोर कर देते हैं।

असल स्वतंत्रता वहां है जहां ताकत को कोसा नहीं जाता।

ज्ञान मानवता को भी मानवीय बना देता है, तर्क दयालुता की तरफ झुकता है, लेकिन पक्षपात हर तरह की कोमलता को खत्म कर देता हैं।

दुनिया में सफल होने के लिए हमें दिखना मूर्ख लेकिन होना बुद्धिमान चाहिए।

क्या आप भी हैं इमोशनली हैल्दी ?

आप भावनात्मक रूप से जितने ज्यादा मजबूत होंगे, आपको बीमारियां उतनी ही कम होंगी। इमोशनली हैल्दी होने पर आप कभी डिप्रेशन या स्ट्रेस के शिकार नहीं हो सकते। भावनात्मक रूप से मजबूत इंसान बनने का मतलब है कि आपका अपने इमोशन्स पर पूरी तरह से कंट्रोल है और आप हर बात पर भावनाओं में नहीं बहते। जानते हैं कि आप इमोशनली हैल्दी कैसे बन सकते हैं।

बहस और कुतर्कों से बचें

अगर आप मानसिक रूप से मजबूत रहना चाहते हैं तो अपने निजी रिश्तों में बहस से बचें। कोई भी प्रतिक्रिया करने से पहले आपको पूरी बात सुननी चाहिए। आपको बातचीत से समस्याओं का हल निकालना चाहिए।

बुरी आदतों से रहें दूर

शराब, धूम्रपान और ड्रग्स का सेवन करने से आप खुद पर काबू कम हो जाता है और आप ज्यादा गुस्सा करने लगते हैं। इसलिए आपको जीवन में बुरी आदतों से दूर रहना चाहिए।

शब्दों पर रखें काबू

मुंह से बोले गए शब्द वापस नहीं आते। इनसे जो जख्म मिलते हैं, वे कभी नहीं भरे जा सकते। आपको अपने गुस्से को इस तरह व्यक्त करना चाहिए कि किसी को नुकसान न पहुंचे। जब भी आपको गुस्सा आए तो किसी पर चिल्लाने के बजाए एक्सरसाइज करना शुरु कर दें।

आत्मसम्मान का महत्व

आपको खुद का और दूसरों का सम्मान करना चाहिए। इससे आपको अच्छा महसूस होता है। आपको ऐसे दोस्त खोजने चाहिए जो आपकी तरक्की में मदद करें। आपको सबकी मदद के लिए तैयार रहना चाहिए।

तनाव को रखें काबू में

तनाव को मैनेज करना भी एक कला है। आपको अपने गुस्से को प्रेम में बदलना चाहिए। आपको हमेशा बदला लेने की भावना के बजाय क्षमा करना चाहिए। आपको जीवन में आगे के बारे में विचार करना चाहिए। गुजरे समय को लेकर दुखी होने से मानसिक सेहत बिगड़ती है।

खुद की खूबियों पर करें गौर

आपको खुद को पॉजिटिव इंसान बनाने की कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए आपको अपनी खूबियों पर गौर करना चाहिए। आपको मन ही मन में इस बात को दोहराना चाहिए कि मैं एक प्यार इंसान हूं। मैं पूरी तरह से स्वस्थ हूं। स्वास्थ्य पर मेरा पूरा हक हैं।

न्यूट्रिशियल सप्लीमेंट्स

मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है कि भोजन में हर तरह के पोषक तत्व सही मात्रा में हो। आपके भोजन में फैटी एसिड, विटामिन बी, कैल्शियम, मैगनीशियम आदि जरूर होने चाहिए।

बैलेंस्ड डाइट का ध्यान रखें

आपको अपने भोजन में सब्जियां, दालें और फलों का भरपूर सेवन करना चाहिए। अगर आप बैलेंस्ड डाइट नहीं लेते हैं तो आपका मूड खराब रहता है। आपको चीनी, चॉकलेट, कैफीन आदि का ज्यादा सेवन करने से भी बचना चाहिए।

सपोर्ट सिस्टम तैयार करें

आपके पास ऐसे लोग होने चाहिए, जो आपको सपोर्ट कर सकें। अगर आप अकेले पड़ जाएं तो ऐसे लोगों के साथ रहें और दिल को हल्का करें। आपको ज्यादा से ज्यादा दोस्त बनाने चाहिए।

हिन्दी भाषीओं के शब्द/भाषा ज्ञान वृद्धि हेतु भाषा-शब्दों के भेद-प्रभेद व अर्थ

आचार्य कनकनन्दी

चाल :- (1. क्या मिलिए... 2. आत्मशक्ति...)

शब्द के भेद-प्रभेद व अर्थ को जानो, अर्थ से भावार्थ व परमार्थ मानो।
वाच्य-वाचक सम्बन्ध पहचानों, ज्ञान-ज्ञेय, हेय-उपादेय को जानो।। (1)

भाषा के नाम हैं ब्राह्मी-भारती, गिरा-भाषा-वाणी-सरस्वती।
वाच-वचन व व्याहार-उक्ति, लपित-भाषित-वच आदि।। (2)।।

किंवदन्ती-जनश्रुत-अफवाह को कहते, वार्ता-प्रवृत्ति-उदन्त है वृत्तान्त।
आह्या-आरण्या-अभिधान-नाम, नामधेय-आहवय है नाम के नाम।। (3)।।

हूति-आह्वान-आकारणा है आह्वान, वचन आरभ्य है उपन्यास-वाङमुख।
दृष्टान्त को कहते हैं उपोद्घात-उदाहार, शपथ को कहते हैं शयन-शपथ।। (4)।।

पूछने के नाम प्रश्न-अनुयोग-पृच्छा, अन्तर को कहते हैं प्रतिवाक्य उत्तर।
कीर्ति को कहते हैं यश-कीर्ति-समज्ञा, स्तुति को कहते स्तव-नुति-स्तुति-स्त्रोत्र।। (5)।।

उच्च शब्द उच्चारण है उच्चैघुष्ट-घोषणा, निन्दा के नाम है अवर्ण-आक्षेप।
निर्वाद-परिवाद-अपवाद-जुगुप्ता, उपकोश-कुत्सा व निन्दा-गर्हण।। (6)

मीठी चर्चा है आभाषण-आलाप, अनर्थक कथन को कहते प्रलाप।
बार-बार कहना है मुहुर्भाषा-अनुलाप, रोते-रोते कहना है परिवेदन-विलाप।। (7)

एकान्त कथन को कहते हैं संलाप, प्यारी चर्चा है सुवचन-सुप्रलाप।
कथन को छिपाना हे निह्नव-अपलाप, सन्देश कहना है सन्देशवाच-वाचिक।। (8)।।

बहुत मीठे वचन को कहते हैं सान्त्व, हृदय ग्राह्य वचन है हृदयङ्गम-सङ्गत।
कठोर वचन कहते हैं निष्ठुर-परुष, अपूर्ण वचन है लुप्तवर्णपद-ग्रस्त।। (9)।।

अस्पष्ट वचन के नाम क्लिष्ट-अविस्पष्ट, झूठ कथन के नाम है वितथ व अनृत।
सच को कहते ऋत-सम्यक्-तथ्य-सत्य, स्पष्ट वात श्राव्य-हृद्य-विस्पष्ट-प्रकोटोदित।। (10)
शब्द के नाम निनाद-निनद-ध्वनि-ध्यान, रव-स्वान-निर्घोष-निर्हाद-नाद।
निस्वान-निस्वन-आरव-आराव, संराव-विराव-शब्द के सतरह नाम ।। (11) ।।

और भी अनेक भेद-प्रभेद होते, भारतीय-ज्ञान-विज्ञान, प्रगट करते।
किन्तु हिन्दी में प्रायः 'बात' शब्द बोलते (लिखते),
हिन्दी भाषीओं के प्रयोग 'कनक'दोष मानते।। (12)

सागवाड़ा - 7.6.2018 रात्रि 10:50
(यह कविता अमर कोष के आधार पर बनी)

अज्ञानी-मोही-लाभ से वंचित-अदर्शनी बनने के कारण

(अनावश्यक जीव ईर्ष्या-द्वेष-घृणा-दंभ से उक्त दोषी बनते।)

आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- मोक्ष डगरिया.....प्यारी है.....2)

ज्ञानावरणीय कर्म बन्धता है, बन्धता है, देव-शास्त्र-गुरु गुण छिपाने से।

मोहनीय कर्म बन्धता है, बन्धता है, देव-शास्त्र-गुरु निन्दा से।। (1)

अन्तराय कर्म बन्धता है, बन्धता है, धर्म में विघ्न डालने से।
दर्शनावरणीय कर्म बन्धता है, बन्धता है, सम्यग्दृष्टि में दूषण लगाने से।। (2)

प्रदोष दोष लगता है, लगता है, प्रशंसा सहन न होने से।
अन्तरंग में होता है, होता है, ईर्ष्या भाव गुण सुनने से।। (3)

निह्नव दोष लगता है, लगता है, गुरु व ग्रन्थ नाम छिपाने से।
शास्त्रदान जो न करते हैं, न करते हैं, योग्य पात्र होने पर भी ।। (4)

मात्सर्य दोष होता है, होता है, ज्ञान होने पर भी न देने से।
अन्तराय दोष होता है, होता है, ज्ञान में बाधा डालने से।। (5)

आसादना दोष लगता है लगता है, प्रकाशित ज्ञान न कहने से।
उपघात दोष लगता है, लगता है, सही ज्ञान में दूषण लगाने से।। (6)

आचार्य पाठक विरोध से, विरोध से, आलस्य अनादर करने से।
ज्ञान का घमण्ड करने से, करने से, हठाग्रह-दुराग्रह करने से।। (7)

बन्धते उक्त सभी महापाप, महापाप, केवल भावदोष कारणों से।
बाह्य से धर्म पालने से (भी), पालने से (भी), कर्म बन्धते उक्त दोषों से।। (8)

अतएव त्यजनीय निन्दा घृणा, निन्दा घृणा, करणीय ज्ञानदान-प्रशंसा।
श्रद्धा-प्रार्थना-पूजा से, भाव से, 'कनक' न कर्म बन्धे शुचि से।। (9)

सागवाड़ा दि. 13.06.2018 रात्रि 09:12

विनयं स्याद्विनयनं कषायेन्द्रिय मर्दनं।
स नीचैर्वृत्तिरथवा विनयार्हे यथोचितम्।। (69)

'विनयते इति विनयनं' विनय किया जाता है कषाय का और इन्द्रियों का दमन किया जाता है, अथवा पूज्य पुरुषों में यथा योग्य नम्रता होती है उसको विनय कहते हैं।

सद्दृग्ज्ञानतपश्चारित्रोपचार प्रपंचकः।
तत्रदृग्विनयस्त्यागः शंकादीनाममीचते।। (70)

सम्यग्दर्शन विनय, सम्यग्ज्ञान विनय सम्यक्चारित्र विनय तपो विनय और उपचार विनय के भेद से पाँच प्रकार का विनय है। उससे शंकादि दोषों का परिहार करना सम्यग्दर्शन विनय हैं।

शंकाऽऽकांक्षा जुगुप्साऽन्यदृक्क प्रशंसनसंस्तवाः।
नाम्नाज्ञेयास्रयोन्त्यौ तु मनोवाग्विषये स्तुती।। (71)

जिनेन्द्र कथित तत्त्व में संशय करना शंका है। संसारिक भोगों की वाँछा काँक्षा है, रत्नत्रयधारी दिगम्बर तपस्वियों के शरीर को देखकर ग्लानि करना अथवा भूख प्यास से पीड़ित होकर जैन तपश्चरण से निर्विघ्न होना जुगुप्सा है। मन के द्वारा मिथ्यादृष्टियों की स्तुति करना संस्तव है। ये पाँच सम्यग्दर्शन के अतिचार हैं। इनसे सम्यग्दर्शन मलीन होता है इसलिए इनका त्याग करना चाहिए। इन अतिचारों का त्याग करना सम्यग्दर्शन का विनय है।

द्रव्यादि शोधनं वस्तु प्रमाणावग्रहादिकं।
बहुमानः श्रुतज्ञेषु श्रुताज्ञासादनोज्झनं।। (72)
वयः शीलश्रुतोनाधिकाधुपाध्यायकीर्तनं।
चानिह्नवेन येनायंज्ञानावरणकारणं।। (73)
स्वराक्षरपदग्रन्थार्थाहीनाध्ययनादिकं।
स्याज्ज्ञान विनयःसम्यग्ज्ञान स्वर्मोक्षकारणम्।। (74)

ज्ञानाचार अधिकार में कथित द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की शुद्धि से शास्त्र पढ़ना वस्तु प्रमाणादि का अवग्रह करना, श्रुतज्ञानियों में बहुमान होना श्रुतज्ञानियों की आसादना नहीं करना, उम्र में हीन होते हुए भी शील और श्रुत में अधिक उपाध्याय आदि के गुणों का उत्कीर्तन करना जिस गुरु से ज्ञानार्जन किया है वह श्रुत तप आदि में हीन हो तो भी उसका नाम बताना ज्ञानावरणादि कर्मों के कारणभूत निह्नव का त्याग करना अर्थात् अपने श्रुतज्ञान को नहीं छिपाना, शब्द शुद्ध पढ़ना, अर्थ शुद्ध पढ़ना और दोनों शब्द तथा अर्थ शुद्ध पढ़ना यह ज्ञान के विनय हैं।

आवश्यक क्रियाशक्तिर्नानोत्तर गुणोन्नतिः।

तपस्तद्वत्प्रमोदश्च स्यात्तपोविनयो मुनेः।। (75)

निर्दोष आवश्यक क्रियाओं का पालन करना, नाना प्रकार के उत्तर गुणों की वृद्धि करना, बारह प्रकार के तपश्चरण में और तपस्वियों में प्रमोद भाव रखना तपोविनय हैं।

जो तपस्वी विनयहीन है अर्थात् गुरुजनों का विनय नहीं करता उसका शास्त्राध्ययनादि मुक्ति की प्राप्ति तथा स्वर्ग श्री का कारण नहीं है।

जिनज्ञावर्तनं कीर्ति मैत्री मानापनोदनम्।

गुणानुरागिता संघसम्पदाधाश्च तद्गुणाः।।(84)

विनय से जिनेन्द्र भगवान् की आज्ञा का पालन होता है, जगत में निर्मल सत्कीर्ति रूपी लता विस्तारित होती है, सर्वंजनों के मैत्री भाव प्रगट होता है, मान कषाय का नाश होता है तथा चतुर्विध संघ विनयशील मानव पर सन्तुष्ट होते हैं इत्यादि अनेक विनय के गुण हैं।

किमत्र बहुनोक्तेन पदं सर्वेष्ट सम्पदाम्।

रत्नत्रयीविभूषायां येन मुक्ति निबन्धनं।। (85)

विशेष कहने से क्या प्रयोजन है। विनय सर्व इष्ट सम्पदाओं का स्थान है, रत्नत्रय का भूषण है और मुक्ति का कारण हैं।

विनयफल-सर्वकल्याण

विणएण विप्पहूणस्स हवदि सिक्खा णिरत्थिया सव्वा।

विणओ सिक्खाए फलं विणयफलं सव्वकल्याणं। (भा.आ. गा.130)

विनय से रहित साधु की सब शिक्षा निष्फल होती है। शिक्षा का फल विनय है विनय का फल सब का कल्याण है।

'विणएण विप्पहूणस्य' विनयरहितस्य यतेः। **'हवइ सिक्खा णिरत्थिया सव्वा'** सर्व शिक्षा निष्फला किं शिक्षायाः फलं इत्यारेक्य आह - **'विणओ सिक्खाए फलं'** व्यांवर्णितः पञ्चप्रकारो विनयः शिक्षायाः फलं। तस्य विनस्य किं फलं ? पुरुषार्थों हि फलमित्याशंक्याह **'विणयफलं सव्वकल्लाणं'** सर्वमभ्युदयनिः श्रेयसरुपं कल्याणस्थानमानैश्पर्यादिकं इन्द्रियानिन्द्रियसुखं च।

विनय रहित साधु की सब शिक्षा निष्फल है क्योंकि पूर्व में कही पाँच प्रकार की विनय शिक्षा का फल है और उस विनय का फल सर्व कल्याण है। सब लौकिक अभ्युदय और मोक्ष रूप कल्याण उसका फल है अर्थात् विनय से मान, ऐश्वर्य आदि तथा इन्द्रियजन्य और अतीन्द्रिय सुख मिलता है।

विणओ मोक्खद्वारं विणयादो संजमो तवो णाणं।

विणएणाराहिज्जइ आयरिओ सव्वसंघो य।। (131)

विनय मोक्ष का द्वार है। विनय से संयम, तप और ज्ञान की प्राप्ति होती है। विनय से आचार्य और सर्व संघ अपने वश में किया जाता है।

जैसे द्वार इष्ट देश की प्राप्ति का उपाय होता है उसी तरह समस्त कर्मों के विनाश रूप मोक्ष की प्राप्ति का उपाय विनय है इसलिए मोक्ष का द्वार कहा है। पूर्व में कहीं पाँच प्रकार के विनय के होने पर ही कर्मों से छुटकारा होता है। विनय से ही संयम होता है। क्योंकि जो पाँच प्रकार के विनयों में सदा लगा रहता है वही असंयम को त्यागने में समर्थ होता है, जो विनयों में प्रवृत्ति नहीं करता वह असंयम को ही नहीं छोड़ सकता। यदि इन्द्रियों और कषायों की ओर से विमुखता न हो तो कैसे इन्द्रिय संयम या प्राणिसंयम हो सकता हे तथा ज्ञानादिकी विनय से शून्य अनशन आदि कर्म को नष्ट कर सकते हैं। इसलिए तप में तपने का कारण विनय है ऐसा मानकर 'विनय से तप होता है' कहा है तथा ज्ञान का कारण भी विनय है। अविनीत पुरुष ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता और विनय से आचार्य तथा समस्त संघ अपने वश में हो सकता है।

आयारजीवकप्पगुणदीवणा अत्तसोधि णिज्झंझा।

अज्जव मद्दव लाघव भत्ती पल्हादकरणं च।। (132)

आचार के क्रम तथा कल्प्य गुणों को प्रकाशन,आत्मशुद्धि, वैमनस्य का अभाव, आर्जव, मार्दव, लघुता, भक्ति और अपने और दूसरों को प्रसन्न करना, ये विनय के गुण हैं।

रत्नत्रय के आचरण का कथन करने में तत्पर होने से पहले अंग को आचारांग कहते है और आचार शास्त्र में कहे गये क्रम को 'आचारजीत' शब्द से कहते हैं। 'कल्प्यते' अर्थात् जो अपराध के अनुरूप दण्ड को कहता है वह कल्प है उसका गुण अर्थात् उपकार इन दोनों का प्रकाश 'आचारजदिकप्पगुणदीवणा' है। इसका

अभिप्राय यह है कि कायिक और वाचिक विनय के करने से आचारशास्त्र से कहे गये क्रम का प्रकाशन होता है। कल्प भी विनय को न मानने वाले साधु को दण्ड का विधान करता है अतः विनय का ही निरुपण करता है। उसके भय से साधु विनय करता है इस प्रकार कल्प के द्वारा किया जाने वाला उपकार प्रकट होता है। ऐसा किन्हीं का व्याख्यान है। अन्य टीकाकार कहते हैं-

'कल्प्यते इति कल्प्यं' अर्थात् योग्य। कल्प्य गुणों को कल्प्य गुण कहते हैं। आचार के क्रम का कल्प्य गुणों का प्रकाश आयारजीद कल्प गुण शब्द का अर्थ है। इससे यह कहा है कि विनय करने से श्रुत की आराधना और चारित्र की आराधना होती है तथा विनय करना आत्मशुद्धि का अर्थात् ज्ञान दर्शन और वीतराग रूप परिणति का निमित्त है। अथवा ज्ञानादि विनय रूप परिणति कर्ममल के विनाश से प्राप्त होती है अतः उसे आत्मा की शुद्धि कहते हैं। जैसे कीचड़ के दूर होने पर जलादि की शुद्धि होती है। 'णिज्झंझाका' अर्थ वैमनस्य का अभाव है। जो विमनस्क होता है अर्थात् जिसका मन स्थिर नहीं होता वह विनय हीन होता है। गुरु उस पर अनुग्रह नहीं करते। ऋजु मार्ग पर चलने को आर्जव कहते हैं और शास्त्र के कहे गये आचरण को ऋजु कहते हैं। मार्दव अर्थ अभिमान का त्याग है। दूसरे के गुणातिशय में श्रद्धा करने से और उनके माहात्म्य को प्रकट करने से तथा विनय करने से अभिमान का ह्रास स्वयं हो जाता है। जो विनीत साधु होता है वह अपना भार आचार्य पर सौंपकर लघु हो जाता है। अर्थात् आचार्य स्वयं उसकी चिन्ता करते हैं अतः लाघव का मूल विनय है। जो विनीत होता है सभी मनुष्य उसकी विनय करते हैं अतः विनय भक्ति का कारण है। प्रकृष्ट सुख को प्रल्हाद कहते हैं उसका करना प्रल्हादकरण है। जिनकी विनय की जाती है उनको सुख होता है इस प्रकार दूसरों को प्रसन्न करना विनय का गुण है। अपने को प्रसन्न करना भी विनय का गुण है, क्योंकि जो अविनयी होता है सब उसका तिरस्कार आदि करते हैं अतः वह निरन्तर दुःखी रहता है और जो विनयी होता है उसका कोई तिरस्कार आदि नहीं करता अतः वह सुखी रहता है क्योंकि लोक में बाधा के अभाव को ही सुख कहा जाता है।

कित्ती मेत्ती माणस्स भंजणं गुरुजणे य बहुमाणो।
तित्थराणं आणा गुणाणुमोदो य विणयगुणा।। (133)

कीर्ति, मित्रता, मान का विनाश, गुरुजनों का बाहुमान और तीर्थंकरों की आज्ञा का पालन और गुणों की अनुमोदना ये विनय के गुण हैं।

'कित्ती' विनीतोऽयमिति संशब्दनं कीर्तिः। 'मेत्ती' परेषां दुःखानुत्पत्त्यभिलाषो मैत्री। परस्य दुःख नैवेच्छति विनति इति। 'मानस्स भंजणं मानस्य भंगः।

ननु मार्दवशब्देनाभिहित एवं मानभंगःपूर्वसूत्रे ततः पौरुक्त्यं इति। उच्यते मानस्स भंजणं परस्स इति शेषः एकस्य विनयदर्शनात् परोऽपि स्वं मानं जहति। गतानुगतिको हि प्रायेण लोकः नूनमभिमानत्यागे, गुणो अन्यथा किमित्ययं विनयं करोतीति। गुरवो हि बहुमान्यः कृता भवन्ति विनयेनेत्याह 'गुरुजणे य बहुमाणो इति।

'तित्थयराणं आणा संपादिदा होदित्ति' शेषः। विनयमुपदिशतां तीर्थकृपांआज्ञासंपादिता भवति, अनुष्ठितेन विनयेन। 'गुणानुमोदाय'गुणिषु विनयं प्रवर्तया एते भवति इति। केचिद् गुणेषुश्रद्धानादिषु हर्षः कृतो भवतित्येवं वदन्ति। एते विनयगुणाः। गुणशब्द उपकारवचनोऽत्र विनयजन्यत्वाद्विनयस्यगुणा इत्युच्यन्ते।

यह विनयी है ऐसा कहना कीर्ति है। विनयी की कीर्ति होती है। दूसरों को दुःख न होने की भावना मैत्री है। जो विनीत होता है वह दूसरों को दुःख देना नहीं चाहता और मान का भंग होता है।

शंका – पूर्व गाथा में मार्दव शब्द से मानभंग को कहा ही है। पुनः कहने से पुनरुक्ता दोष आता है ?

समाधान – यहाँ पर के मानभंग को कहा है। एक की विनय देखकर दूसरा भी अपना मान छोड़ देता है, कयोंकि लोग प्रायः गतानुगतिक है। दूसरों को जैसे करता देखता है स्वयं भी वैसा करता हैं। वे सोचते हैं - निश्चय ही अभिमान का त्याग गुण हैं, अन्यथा वह विनय क्यों करता? विनय से गुरुओं का बहुत मान होता है क्योंकि विनयी शिष्य अपने गुरुजनों को बहुत सम्मान करता है तथा तीर्थंकरों की आज्ञा का पालन होता है अर्थात् विनय का उपदेश देने वाले तीर्थंकारों की आज्ञा का पालन विनय करने से होता है तथा गुरुजनों की विनय करने से उनके गुणों की अनुमोदना होती है। कोई कहते हैं कि श्रद्धानादि गुणों में हर्ष प्रकट होता है। ये विनय के गुण हैं। यहाँ गुणशब्द उपकारवाची है। विनय से पैदा होने के कारण इन्हें विनय के गुण कहते हैं।

श्रमणों का अनादर करने वाला चारित्रभ्रष्ट है-

अववददि सासणत्थं समणं दिट्ठा पदोसदो जो हि।
किरियासु णाणुमण्णदि हवदि हि सो णट्ठचारित्तो।। (265) प्र.सा.

Seeing an ascetic adiding by the injunctions of the scripture. He, who ridicules him through make and is unulilling to do these revrential cuties (unto, him) ruins him conduct.

आगे जो रत्नत्रय मार्ग में चलने वाला साधु है उस को जो दूषण लगाता है उसके दोष को दिखलाते हैं-

(जो) जो कोई साधु (हि) निश्चय से (सासणत्थं) जिनमार्ग में चलते हुए (समणं) साधु को (दिट्ठा) देखकर (पदोसदो) द्वेषभाव से (अववददि) उसका अपवाद करता है, (किरियासु) उसके लिए विनयपूर्वक क्रियाओं में (णाणुमण्णादि) नहीं अनुमति रखता है (सो) वह साधु (हि) निश्चय से (णट्ठचारितो) चारित्र से भ्रष्ट (हवदि) हो जाता है।

जो कोई साधु दूसरे साधु को निश्चय तथा व्यवहार मोक्षमार्ग में चलते हुए देखकर भी निर्दोष परमात्मा की भावना से विलक्षण द्वेष व कषाय से उसका अपवाद करता है इतना ही नहीं उसको यथायोग्य वंदना आदि कार्यों में अनुमति नहीं करता है वह किसी अपेक्षा से मर्यादा के उल्लंघन करने से चारित्र से भ्रष्ट हो जाता है। जिसका भाव यह है कि यदि रत्नत्रय भाव में स्थित साधु को देखकर ईर्ष्याभाव से दोष ग्रहण करें तो वह प्रगटपने चारित्र भ्रष्ट हो जाता है। पीछे अपनी निन्दा करके उस भाव को छोड़ देता हैं तो उसका दोष मिट जाता है अथवा कुछ काल के पीछे इस भाव को त्यागता है तो भी उसका दोष नहीं रहता है परन्तु यदि इसी ही भाव को दृढ़ करता हुआ तीव्र कषाय भाव से मर्यादा उल्लंघन का वर्तन करता रहता है तो वह अवश्य चारित्रभ्रष्ट हो जाता है यहाँ यह भावार्थ है। बहुत शास्त्र ज्ञाताओं को थोड़े शास्त्रज्ञाता साधुओं का दोष नहीं ग्रहण करना चाहिए और न अल्पशास्त्री साधुओं को उचित है कि थोड़ा सा पाठ मात्र जानकर बहुत शास्त्री साधुओं का दोष ग्रहण करें। किन्तु परस्पर कुछ भी सारभाव लेकर स्वयं शुद्ध स्वरूप की भावना करनी चाहिए क्योंकि रागद्वेष के पैदा होते हुए न बहुत शास्त्रज्ञाताओं को शास्त्र का फल होता है, न

तपस्वियों को तप का फल होता है।

यहाँ शिष्य ने कहा है कि आपने अपवाद मार्ग के व्याख्यान के समय शुभोपयोग का वर्णन किया अब यहाँ फिर किसलिये उसका व्याख्यान किया गया है ? इसका समाधान यह है कि यह कहना आपका ठीक है, परन्तु वहां पर सर्वत्याग स्वरूप उत्सर्ग व्याख्यान को करके फिर असमर्थ साधुओं को काल की अपेक्षा से कुछ भी ज्ञान, संयम व शौच का उपकरण आदि ग्रहण करना योग्य है इस अपवाद व्याख्यान की मुख्यता है। यहाँ तो जैसे भेद नय से सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्‌चारित्र व सम्यक्तप रूप चार प्रकार आराधना होती है सो ही अभेदनय से सम्यग्दर्शन सम्यक्चारित्र रूप से दो प्रकार की होती है। इनमें भी और अभेद नय से एक ही वीतराग चारित्ररूप आराधना होती है, तो ही भेदनय से सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान व सम्यक् चारित्ररूप से तीन प्रकार मोक्षमार्ग है सो ही अभेदनय से एक श्रमणपना नाम का मोक्षमार्ग है, जिसका अभेदरूप से मुख्य कथन ''एयग्गगदो समणो'' इत्यादि चौदह गाथाओं में पहले ही किया गया वहां मुख्यता से उसी का भेदरूप से शुभोपयोग के लक्षण को कहते हुए व्याख्यान किया गया, इसमें कोई पुनरुक्ति का दोष नहीं है।

समीक्षा – कुन्द कुन्द देव ने इस गाथा में स्पष्ट किया कि जो श्रमण को देखकर उसका यथायोग्य विनय नहीं करता है तो वह भ्रष्ट चारित्र है क्योंकि चारित्रधारी की अविनय से चारित्र का भी अविनय होता है और जो चारित्र का अविनय करता है वह चारित्र से भ्रष्ट होना स्वाभाविक हैं। रत्नकरण्ड श्रावकाचार में समन्तभद्रस्वामी ने कहा भी है-

स्मयेन योऽन्यानत्येति धर्मस्थान् विताशयः।
सोऽत्येति धर्ममात्मीयं न धर्मो धार्मिकैर्विना।। (26)

उपर्युक्त मद से गर्वितचित्त होता हुआ जो पुरुष रत्नत्रयरूप धर्म में स्थित अन्य जीवों को तिरस्कृत करता है वह अपने धर्म को तिरस्कृत करता है क्योंकि धर्मात्माओं के बिना धर्म नहीं होता।

ऊपर जिन ज्ञान, पूजा आदि आठ प्रकार के मदों का वर्णन किया गया है, उनसे गर्वितचित्त होता हुआ जो पुरुष रत्नत्रयरूप धर्म में स्थित अन्य जीवों को तिरस्कृत करता है वह अपने धर्म को तिरस्कृत करता है क्योंकि धर्मात्माओं के बिना

धर्म नहीं होता।

ऊपर जिन ज्ञान, पूजा आदि आठ प्रकार के मदों का वर्णन किया गया है, उनसे गर्वितचित्त होता हुआ जो पुरुष रत्नत्रयरूप धर्म में स्थित अन्य धर्मात्माओं का तिरस्कार करता है-अवज्ञा के द्वारा उनका उल्लंघन करता है वह जिनेन्द्रप्रणीत अपने ही रत्नत्रय धर्म का तिरस्कार करता है क्योंकि रत्नत्रय का पालन करनेवाले धर्मात्माओं के बिना धर्म नहीं रहता है।

''न धर्मो धार्मिकैर्विना'' अर्थात् धर्मात्मा के बिना धर्म नहीं रहता है यह सिद्धान्त बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सिद्धान्त है गुण-गुणी, धर्म-धर्मी प्रदेशत्व की अपेक्षा अभिन्न होने के कारण एक के अभाव से दूसरे का भी अभाव हो जाता है। इसलिए जो गुणी की अवमानना करता है वह गुण की भी अवमानना करता है जैसे अग्नि की उष्णता को मिटाने पर अग्नि ही मिट जाती है अथवा अग्नि को मिटाने पर उष्णता भी मिट जाती है। उसी प्रकार धर्मी की अवमानना से धर्म का अपमान होता है इसलिए तो आचार्य श्री ने कहा जो चारित्रधारी का अपमान करता है वह चारित्र भ्रष्ट है। दर्शन पाहुड़ में कुन्द कुन्द देव ने कहा भी है-

सहजुप्पण्णं रूवं दट्ठुं जो मण्णए ण मच्छरिओ।
सो संजमपडिद्दीणो मिच्छइट्ठी हवइ एसो।। (24)

जो स्वाभाविक नग्न रूप को देखकर उसे नहीं मानता है, उल्टा ईर्ष्याभाव रखता है वह संयम को प्राप्त होकर भी मिथ्यादृष्टि है।

निस्पृह स्व-पर-उद्धारक श्रमण

- आचार्य कनकनन्दी

चालः- मधुबन खुशबू देता है.....)
आचार्य/(पाठक) गुरुवर ज्ञानी है...ज्ञान-विज्ञान सिखाते हैं।
आत्मा को परमात्मा बनाने का...भेद-विज्ञान सिखाते हैं।। (ध्रुव)

स्वयं सिखते व सीखाते हैं...स्वयं चलकर दिखाते हैं...
स्व-पर प्रकाशी बनकर वे...तरण-तारण बनते हैं...
राग-द्वेष-मोह वे त्यागते हैं...ईर्ष्या-तृष्णा-घृणा छोडते हैं...(1)

ख्याति-पूजा-लाभ-वर्चस्व परे...निस्पृह-समता धरते/(साधते) हैं...
ज्ञान-ध्यान-तप वे करते हैं...आत्मविशुद्धि वे करते हैं...2
संकल्प-विकल्प त्यागते हैं...आत्मा में रमण करते हैं...(2)

आत्म प्रभावना ऐसी करते...धर्म प्रभावना भी स्वयं होती...
दबाव-प्रलोभन-ताम-झाम बिन...अच्छी भावना से होती है... 2
केवल वे परोपदेशी न बनते...उसी हेतु वे (बाह्य) आडम्बर न करते हैं(3)

याचना-भय-चन्दा-भीड से...राग-द्वेष-मोह न बढाते...
जो ऐसे करते हैं आडम्बर...आत्मपतन तो वे करते हैं...2
लोभी गुरु लालची चेला सम...नरक(जेल) में ठेलम ठेला करते हैं...(4)

आप तो वीतरागी निस्पृह सन्त...सूर्यसम प्रकाशी होते हो...
अहेतुक विश्व बन्धु आप हो...'कनक' आप को पूजते है...2
आचार्य गुरुवर ज्ञानी है...ज्ञान-विज्ञान सिखाते हैं...(5)

सागवाड़ा दिनांक 14.06.2018 समय मध्याह्न 10:11

भावार्थ - इस प्रकार ऊपर कहे गये महान् गुणों से युक्त, गुणों की प्रधानता से शोभायमान, घोर उपसर्ग परीषह में भी स्थिरयोगी, गुणों के धारक होने से लोक में प्रभाव है जो सदा गण में प्रधान नायक पद पर आसीन रहते है, जो अलौकिक हैं अर्थात् जिनकी अलौकिक चर्या है, जो पूर्वसंचित कर्मों के विपाक से प्राप्त जन्म-जरा-मरण आदि दोषों से अप्रभावित हैं, ऐसे आचार्य भगवन्तों को मैं विधिपूर्वक दोनों हाथों की अञ्जलि बाँधकर हस्तकमलों से शिर झुकाकर नमस्कार करता हूँ। हे आचार्य भगवन्त! आपकी स्तुति के प्रसाद से मुझे अक्षय-अविनाशी-निर्दोष मुक्ति सुख प्राप्त हो। (आचार्य भक्ति)

श्रुतजलधिपारगेभ्यः, स्वपरमतविभावनापटुमतिभ्यः।
सुचरित तपोनिधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः।। 1

भावार्थ- जो श्रुतरूपी समुद्र में पारंगत है, स्याद्वादमत जैनमत व एकान्तरूप

परमत के विचार में, ज्ञान में जिनकी बुद्धि चतुर है, अति प्रखर है, सम्यक्चारित्र और तप निधियाँ है तथा जिनके पास अतिमात्र में गुण है, ऐसे आचार्यों, गुरुओं को मेरा नमस्कार हो।

छत्तीसगुणसमग्गे, पंचविहाचारकरण संदरिसे।
सिस्साणुग्गहकुसले, धम्माइरिये सदा वंदे।। 2।।

भावार्थ – जो आचार्य परमेष्ठी 12 तप, 10 धर्म, 6 आवश्यक 3 गुप्ति और 5 अचार रूप 36 मूलगुणों से पूर्ण हैं, पंचाचार-दर्शनाचार,ज्ञानाचार, चारित्राचार,तपाचार और वीर्याचार का स्वयं आचरण करते है; शिष्यों से भी आचरण करवाते हैं, शिष्यों पर अनुग्रह करने में निपुण है, ऐसे धर्माचार्य की मैं सदा वन्दना करता हूँ।

गुरुभत्ति संजमेण य, तरंति संसारसायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मणमरणं ण पावेंति।। 3।।

भावार्थ – हे भव्यात्माओं ! गुरुभक्ति व संयम की आराधना से जीव संसाररूपी भीषण समुद्र को पार करते हैं, व अष्टकर्मों का क्षय कर जन्म-मरण के दुःखों से छूट जाते हैं।

ये नित्यं व्रतमंत्रहोमनिरता, ध्यानाग्नि होत्राकुलाः।
षट्कर्माभिरतास्तपोधन धनाः, साधुक्रियाः साधवः।।
शीलप्रावरणा गुणप्रहरणाश्चंद्रार्क तेजोऽधिकाः।
मोक्षद्वार कपाट पाटनभटाःप्रीणंतु मां साधवः।। 4।।

भावार्थ – जो आचार्य परमेष्ठी व्रतरूपी मंत्रों से कर्मों का होम करते हैं, ध्यानरूपी अग्नि में कर्मरूपी ईंधन को देते हैं, षट् आवश्यक क्रियाओं में सदा तत्पर रहते हैं, तपरूपी धन जिनका सच्चा धन हैं, पुण्य कर्मों में कुशल है, अठारह हजार शीलों की चुनरिया जिनका वस्त्र हैं, मूल व उत्तर-गुण जिनके पास शस्त्र हैं, सूर्य और चन्द्र का तेज भी जिनके सामने लज्जित हे रहा हैं, मोक्षमंदिर के द्वार को खोलने में शूर हैं, ऐसे वे तपोधन मुझ पर प्रसन्न होवें।

गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञानदर्शन नायकाः।
चारित्रार्णव गंभीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः।।5।।

भावार्थ – सम्यक्ज्ञान व दर्शन के स्वामी, चारित्र पालन में समुद्रवत् गंभीर,

मोक्षमार्गोपदेशक आचार्यगुरुदेव हमारी रक्षा करें।

प्राज्ञःप्राप्तसमस्त शास्त्र हृदय, प्रव्यक्तलोकस्थितिः।
प्रास्ताशःप्रतिभापर प्रशमवान् प्रागेव दृष्टोत्तरः।।
प्रायः प्रश्नसहः प्रभुः परमनो हारी परानिन्दया।
ब्रूयाद्धर्मकथां गणी गुणानिधिः, प्रस्पष्ट मिष्टाक्षरः।। 6

भावार्थ :- विद्वान्, समस्त शास्त्रों के मर्मज्ञ, लोकज्ञ, निस्पृह, प्रतिभावान्/ समय सूचकतामें पारंगत, समभावी, प्रश्नों के पूर्व उत्तर ज्ञाता, बहु प्रश्नों को सहने में समर्थ, दूसरों के मन को हरने वाले/मनोज्ञ, पर निन्दा से रहित, मधुर व स्पष्ट वक्ता, गुण निधि ऐसे आचार्य परमेष्ठी होते हैं।

श्रुतमविकलं शुद्धा वृत्तिः परप्रतिबोधने।
परिणतिरुरुद्योगो मार्ग प्रवर्तन सद्विधौ।
बुधनुतिरनुत्सेको, लोकज्ञता मृदुताऽस्पृहा।
यतिपतिगुणा यस्मिन्नन्ये च सोऽस्तु गुरुः सताम्।। 7।।
विशुद्धवंशः परमाभिरूपो जितेन्द्रियोधर्मकथाप्रसक्तः।
सुखर्द्धिलाभेष्वविसक्तचित्तो बुधैः सदाचार्य इति प्रशस्तः।।8।।

भावार्थ – पूर्णज्ञान, शुद्ध आचरण, परोपदेशक, भव्यों को समीचीन पथ में लगाना, विद्वन्मन्य, विनयवान्, मार्दवता, लोकज्ञता, निस्पृहता गुण जिनमें हैं वे मुनियों के स्वामी ही सज्जनों के गुरु आचार्य हो सकते हैं, दूसरे अन्य कोई नहीं।

भावार्थ – जो शुद्ध वंश में उत्पन्न हुए हैं, सुन्दर, सुडौल, रूपवान् हैं, इन्द्रियविजेता हैं, धर्म-कथाओं के उपदेशक हैं, सुख, ऋद्धि आदि लाभ में आसक्त रहित है ऐसे यति आचार्य है ऐसा बुद्धिमानों ने कहा है।

विजितमदनकेतुं निर्मलं निर्विकारं,
रहितसकलसंगं संयामासक्त चित्तं।
सुनयनिपुणभावं ज्ञाततत्त्वप्रपञ्चम्,
जननमरणभीतं सद्गुरु नौमि नित्यम्।।9।।

भावार्थ – कामदेव के विजेता, शुद्ध, विकार रहित, समस्त परिग्रह के त्यागी,

द्रव्य-भाव संयम या इन्द्रिय-प्राणी संयम में मन को लगाने वाले, समीचीन नयों के वर्णन में निपुण, पूर्ण तत्वज्ञ, जन्म-मृत्यु से भयभीत सच्चे निर्ग्रंथ गुरुओं को मैं सदा नमस्कार करता हूँ।

सम्यग्दर्शन मूलं, ज्ञानस्कंधं चरित्रशाखाढ्यम्।
मुनिगणविहगाकीर्ण-माचार्य महाद्रुमम् वन्दे।। 10।।

भावार्थ - आचार्य परमेष्ठी को एक विशाल वृक्ष की उपमा दी गई हैं। वह आचार्यरूपी वृक्ष कैसा है-सम्यग्दर्शन उसकी जड़, ज्ञान उसका स्कन्ध है, चारित्र-विविध प्रकार के सामायिक आदि चारित्र इसकी शाखाएँ हैं, मुनिरूपी पक्षीगण इसमें सदा धर्म्यध्यान में लीन रहकर चहकते रहते हैं ऐसे इस आचार्य रूपी महावृक्ष को मैं नमस्कार करता हूँ।

अञ्चलिका

इच्छामि भंते! आइरियभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण, सम्मदंसण सम्मचरित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आइरियाणं, आयारादि सुदणाणोवदेवयाणं, उवज्झायाणं, तिरयणगुणपालणरयाणं, सव्वसाहूणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुण-सम्पत्ति होउ-मज्झं।

भावार्थ - मैं आचार्यभक्ति सम्बन्धी कायोत्सर्ग के बाद उसकी आलोचना करता हूँ। रत्नत्रयधारक, पञ्चाचारपालक आचार्य परमेष्ठी, द्वादशांग श्रुत के उपदेशक उपाध्याय परमेष्ठी तथा रत्नत्रयरूप गुणों से मण्डित साधु परमेष्ठी की मैं सदा काल अर्चा, पूजा, वन्दना, आराधना करता हूँ, इनके फलस्वरूप मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो,उत्तमगति को प्राप्ति हो, समाधिपूर्वक मरण हो तथा जिनेन्द्रदेव के गुणों की प्राप्ति हो।

साचार-श्रुत-जलधीन्-प्रतीर्य शुद्धोरुचरण- निरतानाम्।
आचार्याणां पदयुग - कमलानि दधे शिरसि मेऽहम्।। 3

भावार्थ - जो आचाराङ्ग सहित पूर्ण द्वादशांग श्रुतरूपी समुद्र में पारंगत हो, निर्दोष, शुद्ध पंचाचार के पालन करने में सदा तत्पर रहते हैं, ऐसे आचार्य भगवन्तों के

पुनीत चरण युगल को मैं अपने सिर पर धारण करता हूँ। उन्हें भक्ति से सिर झुकाकर नमस्कार करता हूँ। (पंचगुरुभक्ति)

णठ्ठठ्ठ कम्मबंधण जाइ जरामरण विप्पमुक्काणं।
अट्ठवरिठ्ठगुणाणं णमोणमो सव्व सिद्धाणं।।698।। भाव सं.

अर्थ - जिनके आठों कर्मों का बंधन नष्ट हो गया है, जन्म मरण बुढ़ापा आदि संसारिक समस्त दोष जिनके नष्ट हो गये हैं और ऊपर लिखे सर्व श्रेष्ठ आठ गुण प्रगट हो गये हैं ऐसे सिद्ध परमेष्ठी को मैं श्री देवसेन आचार्य बार-बार नमस्कार करता हूँ।

जिणवर सासण मतुलं जयउ चिरं सूरि सपर उवयारी।
पाढय साहूवि तहा जयंतु भव्वा वि भुवणयले।।699।।

अर्थ - संसार में जिसकी कोई उपमा नहीं ऐसा यह भगवान् जिनेन्द्र देव का कहा हुआ शासन सदाकाल जयशील रहे। इसी प्रकार अपना आत्म कल्याण करने वाले और अन्य अनेक भव्य जीवों का कल्याण करने वाले आचार्य परमेष्ठी सदाकाल जयशील रहे। इसी प्रकार उपाध्याय परमेष्ठी तथा साधु परमेष्ठी सदाकाल जयवंत रहे तथा तीनों लोकों में रहने वाले भव्य जीव भी सदा जयवंत रहे।

जो पढइ सुणइ अक्खइ अण्णेसिं भाव संगहं सुत्तं।
सहणइ णियय कम्मं कमेण सिद्धालयं जाइ।।700।।

अर्थ - इस प्रकार कहे हुए इस भाव संग्रह के सूत्रों को जो पढ़ता है, सुनता है अथवा अन्य भव्यजीवों को सुनाता है वह पुरुष अनुक्रम से अपने कर्मों को नाश कर सिद्ध अवस्था को प्राप्त करता है।

सिरिविमलेसेण गणहर सिस्सो णामेण देवसेणात्ति।
अवुह जण वोहणत्थं तेणेयं विरइयं सुत्तं।।701।।

अर्थ - श्री विमलसेन गणधर वा आचार्य के शिष्य श्री देवसेन आचार्य ने अज्ञानी लोगों को समझाने के लिए अस भावसंग्रह सूत्र की रचना की है।

मिथ्या-वादि-मद्रोग्र-ध्वान्त-प्रध्वन्सि-वचन-संदर्भान्।
उपदेशकान् प्रपद्ये मम दुरितारि-प्रणाशाय।। 4।।

भावार्थ - उपाध्याय परमेष्ठी स्वसमय पर समय के ज्ञाता, नित्य धर्मोपदेश में

निरत रहते हैं उनके हित-मित-प्रिय प्रवचनों के प्रकरण को सुनते ही मिथ्यावादियों का मान गलित हो जाता है, अज्ञान, अंधकार विलीन हो जाता है। ऐसे उपाध्याय परमेष्ठी की शरण में मैं भी जाता हूँ। आपके चरण-कमलों के सम्पर्क से, शरणार्थी के पापों का क्षय हो।

सम्यग्दर्शन-दीप-प्रकाशका-मेय-बोध-सम्भूताः।
भूरि-चरित्र-पताकास्ते साधु-गणास्तु मां पान्तु।।5

भावार्थ - ''दिगम्बर साधुओं का शरीर चैत्यगृह है'' जो सम्यग्दर्शन, रूपी दीपक को प्रकाशित कर भव्य जीवों के अनादि-कालीन मिथ्यात्व के अन्धकार को नष्ट करने वाले हैं। जो साधुगण जीवादि नौ पदार्थों के ज्ञान से सम्पन्न हैं, जिनकी उत्कृष्ट चारित्र-रूपी ध्वजा लोक में फहरा रही है, उन साधुगण/महासाधुओं की शरण में मैं जाता हूँ, ये साधुसमूह मेरी रक्षा करें।

जिन-सिद्ध-सूरि-देशक-साधु-वरानमल गुण गणोपेतान्।
पञ्चनमस्कार-पदै-स्त्रि-सन्ध्य-मभिनौमि-मोक्ष-लाभाय।।6

भावार्थ - जो अनन्त निर्मल गुणों से शोभायमान हैं ऐसे अरहन्त सिद्ध आचार्य-उपाध्याय तथा उत्तम साधु इन पञ्च परमेष्ठियों को मैं मोक्ष की प्राप्ति के लिये णमोकार मन्त्र रूप पाँच पदों के द्वारा तीनों सन्ध्याओं में नमस्कार करता हूँ। अर्थात् अनन्त गुणों के समुद्र पञ्चपरमेष्ठी की आराधना मुक्ति की प्राप्ति के लिये एकमात्र अमोघ कारण है।

एषः पञ्चनमस्कारः, सर्वपापप्रणाशनः।
मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं मंगलं भवेत्।। 7

भावार्थ - परमेष्ठी वाचक, अनादि निधन यह पञ्च नमस्कार मन्त्र सब पापों को नाश करनेवाला, लोक में सब मंगलों में श्रेष्ठ प्रथम मंगल है।